;; षष्ठम दिवस भागवत कथा ;;- 1

⇒ गिरिराज जी का पूजन कराकर के भगवान सभी व्रजवासियो के साथ व्रज मे लौट आये।

⇒ श्लोक - इन्द्रस्तदाऽऽत्मनः पूजां विज्ञाय विहतां नृप।

गोपेभ्यः कृष्णनाथेभ्यो नन्दादिभ्यश्चुकोप सः ॥

⇒ इन्द्र को जब ज्ञात हुआ कि कृष्ण के कहने पर व्रजवासियो ने मेरी पूजा बंद कर दी है, तो इन्द्र को बहुत क्रोध आया।

⇒ देवता शीघ्र क्रोधित हो जाते है, व्रजवासी प्रतिवर्ष इन्द्र की पूजा करते थे, एक बार नही की इतने मे इन्द्र को क्रोध आ गया।

⇒ किन्तु परमात्मा का कोई एकबार नाम ले,ले, प्रभु उसको कभी भूलते नही। इतने दयालु है हमारे सरकार।

श्लोक ⇒ गणं सांवर्तकं नाम मेघानां चान्तकारिणाम्।

इन्द्रः प्राचोदयत् क्रुद्धो वाक्यं चाहेशमान्युत ॥

⇒ इन्द्र ने सांवर्तक नाम के गणो को आदेश दिया, तुम लोग व्रज मे जाकर मूसलधार पानी बरसाकर सारे व्रज को पीड़ित करो।

⇒ सांवर्तक नाम के गण बड़े वेग से व्रज पर चढ़ आये और मूसलधार पानी बरसाकर सारे व्रज को पीड़ित करने लगे।

⇒ मूसलधार वर्षा को देखकर सभी व्रजवासी भयभीत हो गये, सारा व्रजमण्डल जलमग्न होने लगा। समस्त व्रजवासी दौड़े-दौड़े भगवान की शरण मे आये।

श्लोक - कृष्ण कृष्ण महाभाग त्वन्नाथं गोकुलं प्रभो।

त्रातुमर्हसि देवान्नः कुपिताद भक्तवत्सल ॥

→ सभी ब्रजवासी हाथ जोड़कर भगवान से कहने लगे हे प्रभो! सारे गोकुल के एकमात्र स्वामी (रक्षक) आप ही हो। इन्द्र के क्रोध से अब आप ही हम सबकी रक्षा करो।

→ भगवान ने विचार किया -

श्लोक - तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम् ।
गोपाये स्वात्मयोगेन सोऽयं मे व्रत आहितः ॥

→ यह सारा ब्रज मेरे आश्रित है। ब्रजवासियो ने श्रीकृष्ण को ही अपना नाथ माना है। इसलिये भगवान कहते है, इन ब्रजवासियो का मैं ही एक रक्षक हूँ। अतः मैं आत्मयोग से ब्रजवासियो की रक्षा करूंगा।

→ हम संसार से आशा रखते है कि दुःख की घड़ी मे ये हमारे काम आयेगे, किन्तु जो भगवान के सेवक होते है वह संसार से नही भगवान से मांगते है। कुछ मांगना ही है तो अपने प्रिया प्रियतम से मांगो। जो भगवान के आश्रित हो जाते है, गोविन्द को अपना नाथ मान लेते है। अन्य किसी की शरण ग्रहण नही करते, दुःख, सुख सब अपने प्रभु को सुनाते है। भगवान उनकी रक्षा हर परिस्थिति मे करते है।

श्लोक - इत्युक्त्वैकेन हस्तेन कृत्वा गोवर्धनाचलम् ।
दधार लीलया कृष्णश्छत्राकमिव बालकः ॥

→ बिप्र धेनु सुर संत हित
लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु
माया गुन गो पार ॥

→ ब्राह्मण, गौ, देवता और संतो की रक्षा के लिये ही भगवान अवतार लेकर आते है। इन सभी की रक्षा करने का भगवान ने संकल्प लिया है। अपने व्रत को याद करके सभी व्रजवासियो के देखते - देखते भगवान ने जैसे छोटे बालक बरसाती छत्ते (मशरूम) को उखाड़कर हाथ मे ले लेते है, वैसे ही गोवर्द्धन को उखाड़ कर अपने बाएं हाथ के कनिष्ठिका अंगुली के नख पर धारण कर लिया।

∴ भजन ः

नख पर गिरिवर लीनो धार,
कन्हैया मेरो बारो
कन्हैया मेरो बारो
कन्हैया मेरो बारो
नख पर गिरिवर — — — — — ,

① यूँ कहे यशोदा मैया, सब जोर लगाओ भैया
अरी यह कैसे झेले भार कन्हैया मेरो बारो
नख पर गिरिवर — — — — —

② मेरे लाल की नरम कलाईआं, देखो मुड़ ना जावे भैया
अरी गिरिवर भार अपार कन्हैया मेरो बारो

नख पर गिरिवर —
③ जब कोप इंद्र ने कीनो गोवर्धन नख पे लीनो
बादल बरस, बरस गए हार कन्हैया मेरो बारो

4

(4) यूँ कहे पृथ्वी वारो, लाठी को दियो सहारो
अरे मन भज ले कृष्ण मुरार
कन्हैया मेरो बारो
नखपर गिरिवर लीनो धार - - - -

श्लोक- अथाह भगवान् गोपान् हेऽम्ब तात व्रजौकसः
यथोपजोषं विशत गिरिगर्तं सगोधनाः ॥

⇒ भगवान् ने सभी व्रजवासियो से कहा तुम लोग अपनी गौओ और सब सामग्रियों के साथ इस पर्वत के गड्ढे मे आकर बैठ जाओ। सभी व्रजवासी अपनी - अपनी गौओ और सब सामग्रियो को लेकर गड्ढे मे आकर बैठ गये।

⇒ सात दिन, सात रात्रि तक भगवान गोवर्धन को अपने बाएं हाथ की कनिष्ठिका अंगुली के नख पर धारण किये रहे।

⇒ यशोदा मैया को चिन्ता होने लगी, गिरिराज को उठाते - उठाते लाला की कलाईया, कही मुड़ न जाये लाला के हाथ कही दुखने न लगे, अरे! कोई मेरे लाला की सहायता करो।

⇒ सखा बोले मैया चिन्ता मत करो, हम सबने अपनी-अपनी लाठी लगा रखी है सभी सखाओ ने कन्हैया से कहा, कन्हैया तुम अपना हाथ नीचे कर लो मैया बहुत परेशान हो रही है, हमारी लाठियों पर टिके है गिरिराज जी। भगवान ने सखाओं से कहा अभी अच्छे से विचार कर लो मै अपना हाथ हटा लूं।
⇒ सखाओं ने कहा हां, हां कन्हैया अपना हाथ हटा लो हमारी लाठियो पर टिके है गिरिराज जी।
⇒ भगवान ने जैसे ही अपना हाथ हटाया सारी

⇒ लाठियां चट्-चट् करके टूट गयी। सखाओ ने कन्हैया से कहा- कन्हैया सम्हाल गिरिराज जी को, हम समझ रहे थे हमारी लाठियों पर गिरिराज जी टिके है किन्तु अब समझ मे आ गया - तूने अकेले ही गिरिराजजी उठा रखे थे।

⇒ भगवान ने पुनः गोवर्धन को अपने बाएं हाथ के निष्ठिका अंगुली पर धारण कर लिया।

⇒ सखाओं ने कन्हैया से कहा, एक बताओ कृष्ण तुम्हारे हाथो मे इतना बल कहा से आया ? तुमने अकेले ही गिरिराज जी को उठा रखा है।

⇒ भगवान बोले-

कछु माखन को बल बढ्यौ
कछु गोपन करी सहाय।
श्री राधे जू की कृपा सौ,
मैंने गिरिवर लियो उठाय ॥

⇒ एक तो मैया यशोदा मैया ने मुझे माखन खिलाया उसका बल, एक आप सब व्रजवासियो ने सहायता की। श्री राधा जी की कृपा से मैंने गिरिराज उठा लिया।

⇒ सखियां बोली कन्हैया तुमने गिरिराज जी नही उठाये भगवान बोले हमने नही उठाये तो किसने उठाये गिरिराज जी।

⇒ सखियां बोली हमारी श्री जी ने उठाया है गोवर्धन को भगवान बोले उठा तो रखा हमने अकेले, श्री जी सामने बैठी है। फिर श्री जी ने गोवर्धन कैसे उठा रखे।

⇒ सखियां बोली आप और श्री जी एक हो या अलग-अलग ? भगवान बोले एक है। सखियां बोली आपके शरीर मे श्रीजी का स्थान किस तरफ है ? भगवान बोले श्रीजी के शरीर मे दाएं भाग मे मेरा स्थान है

⇒ और मेरे शरीर मे बाएं भाग मे श्री जी का स्थान है। सखियां बोली गिरिराज जी किस हाथ पर उठा रखे।
⇒ भगवान बोले बाएं हाथ पर।

⇒ सखियां बोली सारा वजन तो हमारी श्री जी पर डाल रखा फिर आपने क्या उठाया?

⇒ भगवान मुस्कुराकर सखियों से बोले अच्छा ठीक है तुम्हारी श्री जी ने ही उठा रखे है गिरिराज जी।

⇒ सॉत दिन और सॉत रात्रि तक इन्द्र ने वर्षा की, और सॉत वर्ष के भगवान सॉत दिन, सॉत रात्रि तक गोवर्धन पर्वत को उठाये रहे।

⇒ भगवान के आदेश से सुदर्शन चक्र पर्वत के ऊपर जाकर वर्षा की गति को नियंत्रित करते रहे और शेषनाग जी मेंड़ बनाकर जल को पर्वत की ओर आने से रोकते रहे।
⇒ जब इन्द्र ने देखा ब्रजवासियो पर वर्षा का कोई प्रभाव नही हो रहा है। तब वह भगवान की योगमाया के प्रभाव को देखकर आश्चर्यचकित रह गये और उन्होने मेघो को वर्षा करने से रोक दिया।

⇒ जब वर्षा बन्द हो गयी तब भगवान की आज्ञा से सभी ब्रजवासी उस गड्ढे मे से बाहर निकल आए।

⇒ श्लोक - भगवानपि तं शैलं स्वस्थाने पूर्ववत् प्रभुः।
पश्यतां सर्वभूतानां स्थापयामास लीलया ॥

⇒ भगवान ने सभी ब्रजवासियो के देखते ही देखते खेल-खेल मे सहजता से गिरिराज जी को पूर्ववत स्थान पर रख दिया।

⇒ जब देवराज इन्द्र को लगा कि उनसे अपराध हो गया है, तब वह बहुत ही लज्जित हुये। और

⇒ भगवान से क्षमा माँगने आये।

⇒ अमावस्या (दीपावली) पर ब्रजवासियो ने गोवर्धन की परिक्रमा की, अगले दिन प्रतिपदा को गिरिराज जी का पूजन किया, द्वितीया को सभी अपने-अपने घर लौटकर आये, तृतीया को इन्द्र के आदेश से ब्रज मे सात दिन, सात रात्रि नवमी तिथि तक वर्षा हुयी। दशमी तिथि को इन्द्र भगवान से क्षमा माँगने आये।

श्लोकः विविक्त उपसङ्गम्य व्रीडितः कृतहेलनः।
पस्पर्श पादयोरेनं किरीटेनार्क वर्चसा ॥

⇒ अपने किये पर लज्जित होने के कारण इन्द्र के मन मे भाव आया कि मै कैसे सभी के सामने भगवान से क्षमा माँगूगा इसलिये एकान्त स्थान मे जाकर अपने मुकुट को भगवान के चरणो मे रखकर क्षमा माँगी। इन्द्र ने ग्यारह श्लोको मे भगवान की स्तुति की।

श्लोकः विशुद्धसत्त्वं तव धाम शान्तं
तपोमयं ध्वस्तरजस्तमस्कम्।
मायामयोऽयं गुणसम्प्रवाहो
न विद्यते तेऽग्रहणानुबन्धः ॥

इन्द्र कहते है - हे प्रभो! आपका श्री विग्रह विशुद्ध सत्व गुण से परिपूर्ण है, उसमे तमोगुण और रजोगुण का स्पर्श नही है। रजोगुण और तमोगुण को ध्वस्त करने वाला है। मायासे आप कैसा भी रुप धारण करे, लेकिन आप स्वयं कृपा के सागर हो, आज मैने अनुभव किया।

श्लोक- पिता गुरुस्त्वं जगतामधीशो।
दुरत्ययः काल उपात्तदण्डः
हिताय स्वेच्छातनुभिः समीहसे
मानं विधुन्वञ्जगदीश मानिनाम् ॥

हे! प्रभो जगत के पिता, गुरु और स्वामी तो आप हो, किन्तु मेरी नासमझी देखो। मैं अपने आपको ही ईश्वर मान बैठा। मैने कितनी बड़ी गलती कर दी।

श्लोक- नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने।
वासुदेवाय कृष्णाय सात्वतां पतये नमः॥

हे! प्रभो मै आपको नमस्कार करता हूँ। भक्तवत्सल प्रभु आप ही यदुवंशियो के एकमात्र स्वामी है। आप सभी के चित्त को आकर्षित करने वाले है। हे! प्रभो मेरे अपराध को क्षमा कर दे, मुझ पर कृपा करे।

⇒ इन्द्र के द्वारा की गयी स्तुति को सुनकर भगवान प्रसन्न हो गये। भगवान ने कहा जाओ इन्द्र, तुम्हे क्षमा किया। मैने तुम्हारे अभिमान को दूर करने के लिये ही ये लीला की थी। इन्द्र भगवान को प्रणाम करके स्वर्ग (अपनी राजधानी) को चले गये।

⇒ ब्रह्मा जी ने भगवान की परीक्षा ली, ग्वालबालो और बछड़ो का हरण करके एक वर्ष तक भगवान से दूर रखा, किन्तु जब ब्रह्मा जी को यह ज्ञात हो गया कि यह भगवान ही है, तब ग्वालबाल और बछड़ो को वापिस कर दिया। क्षमा मांगने के लिये ब्रह्मा जी ने 40 श्लोको मे भगवान की स्तुति की, फिर भी भगवान ने ब्रह्मा जी से बाततक नही की।

⇒ किन्तु इन्द्र ने मूसलाधार वर्षा करके पूरे ब्रजमण्डल को ही जलमग्न करने का प्रयास किया और बाद मे दस श्लोको मे स्तुति करके भगवान को प्रणाम किया, भगवान प्रसन्न हो गये। ऐसा क्यो?

अपराध की दृष्टि से यदि देखा जाये तो इन्द्र का अपराध ब्रह्मा जी से बड़ा है। ब्रह्मा जी ने तो ग्वाल बालो का हरण करके एकवर्ष तक उन्हे भगवान से दूर रखा, किन्तु इन्द्र ने तो मूसलाधार वर्षा

करके पूरे ब्रज को ही जलमग्न करने का प्रयास किया
ब्रह्मा जी किसी को मारना नही चाहते थे
किन्तु इन्द्र ने तो पूरे ब्रजमण्डल को ही नष्ट
करने का प्रयास किया। फिर भी भगवान ने ब्रह्मा
जी से बात नही की और इन्द्र से प्रसन्न हो गये।
ऐसा क्यो? इसके अनेक कारण है।

(1) इन्द्र का पद बहुत छोटा है और ब्रह्मा जी का पद बहुत बड़ा है। ब्रह्मा जी का पद इतना बड़ा है कि ब्रह्मा जी के एक दिन मे 14 इन्द्र राज्य करके चले जाते है।

भगवान इन्द्र से इसलिये प्रसन्न हो गये, इन्द्र बालक है छोटा पद है। कोई छोटा बालक अपराध करेगा तो छोटा ही अपराध करेगा। किन्तु ब्रह्मा जी सर्वोच्च पद पर बैठकर अपराध किये। भगवान की दृष्टि से जो श्रेष्ठ है, बड़ा है, अधिक प्रिय है, यदि वो अपराध करता है तो भगवान उसे क्षमा नही करते है। इन्द्र बच्चा है, नासमझ है यह सोचकर भगवान ने इन्द्र को मॉफ कर दिया।

(2) ब्रह्मा जी से अपराध हुआ सीधे मुंह उठाए चले आये मॉफी मांगने, इन्द्र ने विचार किया गलती तो हो गयी अब मॉफी मांगने किस मुंह से जाऊ तो कामधेनु गाय को आगे करके माफी मागने आया। इन्द्र जानता था गोविन्द को गाय बहुत प्यारी है, कामधेनु गाय को देखकर गोविन्द बहुत प्रसन्न हो गये। भगवान प्रसन्न हुये इन्द्र ने उसी समय मॉफी मांग ली, भगवान ने इन्द्र को मॉफ कर दिया। बड़ा अधिकारी यदि नाराज हो जाये तो उसके मित्र के साथ मांफी मांगने जाओ वह अपने मित्र से मिलकर जब प्रसन्न हो रहा हो उसी समय मॉफी मांग लो, बड़े से बड़ा अपराध होने पर मॉफी मिल जायेगी। इन्द्र कामधेनु गाय को आगे करके लाया, कामधेनु को देखकर भगवान प्रसन्न हो गये, उसी समय इन्द्र ने मॉफी मांग ली,

भगवान ने इन्द्र को माँफ कर दिया।

(3) अपराध ब्रह्मा जी ने भी किया, अपराध इन्द्र ने भी किया, ब्रह्मा जी ने जो अपराध किया उससे भगवान के प्रिय व्रजवासी एकवर्ष तक भगवान से दूर रहे, और इन्द्र ने जो अपराध किया उसे भगवान के प्रिय व्रजवासी सात दिन सात रात्रि तक भगवान के समीप रहे। भगवान को जोड़ने वाले भक्त प्रिय है तोड़ने वाले नही। इन्द्र ने जो अपराध किया उससे भक्त और भगवान सातदिन सात रात्रि तक पास रहे इसलिये भगवान ने इन्द्र को माफ कर दिया।

→ गोवर्धन किसे कहते है?

① गो अर्थात गाय, वर्धन अर्थात वृद्धि करना। जो गायो की रक्षा करते है, उनका पोषण करते है उन्हे गोवर्धन कहते है।

अथवा

② गो अर्थात इन्द्रिय, वर्धन अर्थात वृद्धि करना, जो हमारी प्रत्येक इन्द्रिय का वर्धन करते है वह है गोवर्धन। जब हम जन्म लेकर लेकर इस संसार मे आते है तब हमारे शरीर का आकार बहुत छोटा होता है हमारे हाँथ पैर बहुत छोटे होते है, देखते ही देखते हम बड़े हो जाते है। हमारी इन्द्रियो का वर्धन कौन करता है। गोवर्धननाथ। जो हमारी प्रत्येक इन्द्रिय का वर्धन करते है, उन्हे गोवर्धन कहते है। सभी देवता पुष्पो का हार पहनाते है किन्तु हमारे गोवर्धन प्रभु तो भक्तो का हार पहनते है। जब भगवान ने गिरिराज को उठाया तो भगवान के चारो तरफ व्रजवासी खड़े हो गये, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि गोवर्धन नाथ भक्तो का हार पहने खड़े है।

→ गिरिराज लीला का क्या अर्थ है?

गिरिराज लीला आश्रय प्रदान करने वाली लीला है।

⇒ ये विचारणीय बात है भगवान सॉंत दिन और सॉंत रात्रि ही गिरिराज जी क्यो उठाते है। सप्ताह मे कितने दिन होते है। सॉंत रात्रि और सॉंत दिन होते है। अर्थात् ठाकुर जी कहते है तुम मेरी शरण मे आओ, मै एक दिन, दोदिन, तीन दिन नही तुम्हारे लिये सातों दिन गिरिराज लिये खड़ा हू। तुम मेरे आश्रय मे आओ, मेरी शरण मे आओ। हम सबको गिरिराज जी का आश्रय ग्रहण करना है।

⇒ ये लीला हुयी थी ऐसी बात नही, लीला हो रही है। इन्द्र निरन्तर वर्षा कर रहा है। ये जीवन मे जो दुःखो की वर्षा है, बहिर्मुखता की वर्षा है, क्लेशो की वर्षा है। इन सबका समाधान कहाँ है। निरन्तर त्रितापो की वर्षा हो रही है। कभी दैविक ताप, कभी दैहिक ताप कभी भौतिक ताप, इन तापो से बचने का उपाय एक है। गिरिराज जी की शरण मे आ जाओ। यही गिरिराज लीला श्रवण करने का फल है।

⇒ गिरिराज जी को छप्पन भोग क्यो लगाये जाते है?

⇒ व्रज मे गोविन्द की अष्टयाम सेवा की जाती है, भगवान गोवर्धन पर्वत को सांत दिन, सांत रात्रि तक उठाये रहे, उस समय भगवान को भोग तो लगाया नही गया। एक दिन मे आठ बार भोग लगाया जाता ठाकुरजी को, सांत दिन तक भगवान को भोग नही लगाया गया, अर्थात सांत दिन का छप्पन बार भोग हो गया, 8×7 = 56, इसलिये व्रजवासी भाव की दृष्टि से छप्पन भोग लगाते है गिरिराज जी को।

⇒ आगे कथा आती है वरुण देवता ने भगवान की शरणागति ग्रहण की।

⇒ दशमी को इन्द्र भगवान से क्षमा मांगकर चले गये। अगले दिन एकादशी थी, नन्दबाबा एकादशी का व्रत करते थे।

श्लोक- एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनम् ।
स्नातुं नन्दस्तु कालिन्द्या द्वादश्यां जलमाविशत् ॥

⇒ नन्दबाबा ने कार्तिक शुक्ल एकादशी का व्रत किया। जो लोग एकादशी का व्रत करते है वह लोग द्वादशी को व्रत का पारण करते है। पारण करने का एक निश्चित समय होता है, कभी-कभी पारण करने का समय प्रातः (जल्दी) होता है, तो ब्रह्ममुहूर्त मे उठकर स्नान करके पारण करना होता है।

⇒ एकादशी का व्रत हम सभी को अवश्य करना चाहिये, बच्चो, युवाओ, वृद्धजनो सभी को एकादशी का व्रत करना चाहिये। नियम तो यह कहता है कि एकादशी को घर मे अन्न नही बनना चाहिये। अगर आप द्वादशी को पारण के समय स्नान करके पारण नही कर सकते तो जगन्नाथ जी को जो चावलो का भोग लगता है उन्हे सुखाकर रख लीजिये और पारण के समय उसी महाप्रसाद को पाकर व्रत का पारण कर लीजिये बाद मे स्नान, भोगसेवा करते रहिये। महापुरुष तो यहाँ तक कहते है कि यदि कोई भक्त देह को छोड़ने वाला हो, उसी समय, कोई उसके मुख मे जगन्नाथ जी का महाप्रसाद, गंगाजल, तुलसीपत्र डाल दे उसकी कभी अधोगति नही होती है।

⇒ जो भक्त नित्य कुछ पाने से पहले जगन्नाथ जी का महाप्रसाद (सूखा चावल जो भोग लगाया जाता है) पाते है, उनकी कभी अधोगति नही होती।

⇒ बहुत से भक्त पूछते है महाराज मैने एकादशी को गलती से सुबह बिस्कुट खा लिया क्या मेरा व्रत खण्डित हो गया?

⇒ देखिये आपने गलती से बिस्कुट खा लिया जानकर नही, ब्रह्मा और इन्द्र की गलती जब भगवान मॉफ कर देते है तो हमसब तो प्रभु के अज्ञानी बच्चे है हमे क्यो नही मॉफ करेगे। यदि आपने बिस्कुट

खा लिया इसका अर्थ यह नही अब पूरे दिन पूड़ी-कचौड़ी खानी है। भगवान से क्षमा मांगे हे प्रभु! अनजाने मे हमसे यह अपराध हो गया, हमे क्षमा करे। जितनी माला नित्य करते थे उससे दो माला अधिक करे और पूरे दिन व्रत का पालन करे। हमलोग न जाने कौन-कौन से व्रत करते है किन्तु एकादशी का व्रत नही करते, हम सभी को एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये।

⇒ नन्दबाबा को द्वादशी को प्रातः पारण करना था इसलिये रात्रि मे ही यमुना स्नान करने के लिये चले गये।

श्लोक- अविज्ञायासुरीं वेलां प्रविष्ट मुदकं निशि ॥

नन्दबाबा को समय का ध्यान नही रहा और आसुरी वेला मे यमुना मे स्नान करने लगे। पर्व को छोड़कर कभी भी आसुरी वेला (अर्द्धरात्रि) मे नदी, तीर्थ, सरोवर मे स्नान नही करना चाहिये।

⇒ वरुणदेव के सैनिक (असुर) मध्यरात्रि मे घूम रहे थे जब उन्होने नन्दबाबा को देखा तो पकड़कर अपने स्वामी (वरुणदेव) के पास ले आये।

⇒ बहुत देर के बाद भी जब नन्दबाबा घर लौटकर नही आये तो मैया यशोदा को चिन्ता होने लगी, कन्हैया ने मैया से कहा आप चिन्ता न करो मै पता लगाकर आता हू कि बाबा कहा गये।

⇒ कन्हैया ने यमुना के समीप जाकर देखा घाट पर बाबा के कपड़े रखे, किन्तु बाबा वहा पे ही नही। ग्वालबाल बोले कन्हैया बाबा यमुना मे डूब गये। कन्हैया बोले तुम लोग चिन्ता मत करो हमे पता चल गया कि बाबा कहा गये।

⇒ कन्हैया ने लगाई छलांग यमुना जी मे और

पहुंच गए वरुण लोक। जब लोकपाल वरुण ने देखा भगवान आये है, वह प्रसन्न हो गये, वरुणदेव ने भगवान का स्वागत किया और पूजा की। इसके बाद हाथ जोड़कर वरुणदेव भगवान से कहते है।

श्लोक- नमस्तुभ्यं भगवते ब्रह्मणे परमात्मने।
न यत्र श्रूयते माया लोकसृष्टिविकल्पना ।।

⇒ हे प्रभो! आप भक्तों के भगवान्, वेदान्तियो के ब्रह्म और योगियो के परमात्मा है। आज आपके दर्शन पाकर मै धन्य हो गया। मै आपको नमस्कार करता हूं।

श्लोक- अजानता मामकेन मूढेनाकार्यवेदिना।
आनीतोऽयं तव पिता तद् भवान् क्षन्तुमर्हसि।।

⇒ प्रभो! मेरा यह सेवक बड़ा मूर्ख है, अनजाने मे आपके पिताजी को यहाँ पकड़कर ले आया मै जानता हूं आप अपने पिता जी से बहुत प्रेम करते है, प्रभो! आप मेरे सेवक का अपराध छमा कर दीजिये। अब आप अपने पिता जी को यहाँ से ले जा सकते है। वरुण देव और उनके सभी सेवको ने भगवान को दण्डवत प्रणाम किया। नन्दबाबा ने वरुणदेव से कहा आपके सेवक मुझे यहाँ ले तो आये किन्तु अब यह भी सुनलो कि मै मध्यरात्रि मे स्नान करने के लिये क्यो आ गया था।

⇒ तब नन्दबाबा ने वरुण जी को एकादशी व्रत के बारे मे बताया और एकादशी व्रत के माहात्म्य को सुनाया, नन्दबाबा ने वरुण जी से कहा आप भी अपने परिकर के साथ एकादशी का व्रत किया करो। वरुणदेव ने एकादशी के माहात्म्य को श्रवण करके नन्दबाबा का पारण कराया। इसके बाद भगवान नन्दबाबा को साथ लेकर व्रज मे वापिस आ गये।

⇒ कुछ विद्वान तो ऐसा कहते है, वरुणदेव ने सब जानते हुए भी नन्दबाबा को सेवक के द्वारा पकड़कर वरुणलोक मे इसलिये बुलवाया ताकि गोविंद का आगमन वरुणलोक मे हो।

⇒ जब नन्दबाबा व्रज मे लौटकर के आ गये, तब सभी ग्वालबालो ने नन्दबाबा से पूछा आप कहाँ चले गये थे ?

⇒ तब नन्दबाबा ने ग्वालबालो को बताया कि हमे वरुण देवता के सेवक पकड़कर वरुणलोक ले गये थे। किन्तु जब कन्हैया मुझे लेने के लिये वरुणलोक मे आया, तो वरुणदेव और उनके सेवक कन्हैया के चरणो मे लेटकर के प्रणाम करने लगे। अरे भैया हमारे कन्हैया की चल मे ही नही जल के भीतर भी चलती है।

⇒ नन्दबाबा के मुख से यह सब श्रवण करके गोप समझ गये कृष्ण कोई साधारण पुरुष नही साक्षात भगवान है, किसी दिव्य लोक से इनका आगमन पृथ्वी पर हुआ है। गोप, ग्वाल मन ही मन विचार करने लगे भगवान का मायातीत स्वधाम कैसा होगा, जँहा इनके प्रेमी भक्त जाते है ? क्या कभी श्री कृष्ण हमे भी अपने स्वधाम का दर्शन करायेगे ?

⇒ भगवान भक्तो के भाव को जानने वाले है। भगवान ग्वालबालो के भाव को जान गये,

दर्शयामास लोकं स्वं गोपानां तमसः परम ॥

⇒ एक मिनट भी नही लगा, भगवान् ने गोपों को अपने परमधाम वैकुंठ मे पहुँचा दिया।

श्लोक - सत्यं ज्ञानमनन्तं यद् ब्रह्म ज्योतिः सनातनम् ।

यद्धि पश्यन्ति मुनयो गुणापाये समाहिताः ॥

⇒ बड़े - बड़े योगी समाधि के द्वारा जिस धाम के दर्शन प्राप्त करते है, भगवान ने बड़ी सहजता से ही उस धाम

के दर्शन गोपों को करा दिये। वैकुंठ पहुंचकर गोपों ने देखा एक ऊँचे से सिंहासन पर चार भुजा वाले कोई भगवान हाथों मे शंख, चक्र लिये बैठे है।

गोपों ने वँहा खड़े सेवको से पूछा यह कौन है? सेवको ने कहा ये वैकुंठाधिपति भगवान है। गोपों ने कहा क्या मै इनको पास मे जाकर मिल सकता हू? सेवको ने कहा नही, दूर से ही प्रणाम करो, पास मे जाकर नही मिल सकते।

⇒ गोपों ने कन्हैया से जाकर कहा हमने तुम्हारे वैकुंठ के दर्शन कर लिये, अब हमे व्रज मे ले चलो। भगवान ने गोपों से कहा कुछ दिन वैकुंठ मे रहो, यँहा आनन्द करो इतनी जल्दी क्या है व्रज मे जाने की।

⇒ गोपों ने कन्हैया से कहा इस वैकुंठ से अच्छा तो हमारा वृन्दावन है, तुम्हारे इस वैकुंठ मे तो हम वैकुंठाधिपति भगवान को गले तक नही लगा सकते उनके समीप तक नही जा सकते, किन्तु व्रज मे तो हम अपने कन्हैया के साथ खेलते है, खाते है, कन्हैया को गले से लगा लेते है। तुम्हारा वैकुंठ कितना भी सुन्दर हो, यँहा कितना भी ऐश्वर्य, सुख सम्पत्ति हो किन्तु हमे तो अपना वृन्दावन ही अच्छा लगता है। इसलिये अब हमे व्रज मे वापिस ले चलिये। भगवान सभी गोपों को लेकर पुनः व्रज मे लौट आते है।

महारास

!- रास पंचाध्यायी ?-

श्री शुकदेव जी कहते है - परीक्षित ! भगवान श्री कृष्ण ने चीरहरण के समय गोपियों से जिस रात्रि मे महारास करने के लिये कहा था, आज वही रात्रि आ गयी।

⇒ श्रीमद् भागवत महापुराण का दशम स्कन्ध भगवान का हृदय और रास पंचाध्यायी श्रीमद् भागवत के पंच प्राण है। भागवत जी के दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध) के 29 वे अध्याय मे महारास का वर्णन किया गया है।

दशम स्कन्ध पूर्वार्ध अध्याय 29, 30, 31, 32, 33, महारास कथा

⇒ रास किसे कहते है ?

रसानाम् समूहः इति रासः ।

अर्थात्- रसो के समूह को रास कहते है, रस नौ प्रकार के होते है। हास्य रस, करूण रस, रौद्र रस, श्रृंगार रस, शान्त रस, वीर रस, वीभत्स रस, भयानक रस और अद्भुत रस। रास पन्चाध्यायी मे गोपियों ने सभी प्रकार के रसो का समय-समय पर अपनी क्रीड़ाओ से, अपने हाव-भाव से अपनी वाणी से प्रदर्शन किया है। जब ये सभी रस एकत्रित हुए और प्रभु से मिले, तब वह समस्त रसो का समूह रास हुआ। जीवन मे सभी रस बराबर होने चाहिये। रासपन्चाध्यायी मे सारे रस है।

⇒ तीन प्रकार के रास है।

(1) कायिक रास (2) वाचिक रास (3) मानसिक रास

तीनो प्रकार का रास हमारे जीवन मे होना चाहिये।

(1) कायिक - शरीर (2) वाच्चिक - वाणी

(3) मानसिक - मन, तीनो से परमात्मा के लिये समर्पित रहे।

⇒ भगवान ने जिस समय गोपियो के साथ महारास किया उस समय भगवान की उम्र आठ वर्ष की थी। रस नाम परमात्मा का ही है, "रसो वै सः" श्री कृष्ण ही रस रूप है। जिन गोपियों के साथ भगवान ने रास किया वह गोपी कौन थी ? गोपी किसे कहते है ?

"गोभिः इन्द्रियैः कृष्ण रसं पिवति इति गोपी"।

जो प्रत्येक इन्द्रिय से कृष्ण रस का पान करे, उसका नाम गोपी है। गो का अर्थ इन्द्रियाँ और पी का अर्थ पीना अर्थात- जो जीव चलते - फिरते, उठते-बैठते, प्रत्येक परिस्थिति मे कृष्ण रस का पान प्रत्येक इन्द्रिय के द्वारा करे, उसे गोपी कहते है।

⇒ जिन गोपाल किए अपने वस उर धरि स्याम भुजा ॥
अर्थात- प्रेमरसमयी भक्ति की प्रवर्तिका गोपियां ही है। श्री कृष्णदर्शन की लालसा ही गोपी है। गोपी कोई स्त्री नही गोपी कोई पुरुष नही है। 'गोपी' का अर्थ परमात्मा को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है। 'महारास' का अर्थ आत्मा और परमात्मा का मिलन। गोपिया शरीर से तो अपने घर पर ही रही और आत्मा से परमात्मा के समीप पहुंच गयी।

जो अपने नेत्रो से श्रीकृष्ण के दर्शन करे, कान से कृष्णनाम रसका श्रवण पान करे, मन से कृष्ण का स्मरण करे, मुख से कृष्ण नाम गाये, हृदय मे कृष्ण के अलावा कोई न हो उसे गोपी कहते है।
गोपियो मे भी दो श्रेणियाँ है।

(1) नित्यसिद्धा - जो अनादिकाल से भगवान के साथ है।

जिसने साधन के द्वारा गोपीदेह को प्राप्त नही किया है वह नित्यसिद्धा गोपी है। जैसे ललिता, विशाखा इत्यादि।

(2) साधनसिद्धा - भगवान की नित्यसिद्धा चिदानंदमयी गोपियों के अतिरिक्त बहुत सी गोपियां और थी जो अपनी महान साधना के फलस्वरूप भगवान कि मुक्तजन वांछित सेवा करने के लिये गोपियों के रूप मे अवतीर्ण हुयी थी। उनमे से कुछ पूर्वजन्म की दैत्यकन्या, कुछ श्रुतियाँ, कुछ तपस्वी ऋषि, कुछ अन्य भक्तजन थे।

⇒ साधन सिद्धा गोपियों के कई प्रकार है।
(1) श्रुति रूपा (2) मुनिरूपा (3) दैत्यकन्या (4) मत्स्यकन्या

(1) श्रुतिरुपा - श्रुतिरुपा गोपियाँ जो नेति-नेति के द्वारा निरन्तर परमात्मा का वर्णन करते रहने पर भी उन्हे साक्षात रूप से प्राप्त नही कर सकती, गोपियो के साथ भगवान के दिव्य रसमय विहार की बात जानकर गोपियों की उपासना करती है और अंत मे स्वयं गोपीरूप मे परिणत होकर भगवान् श्री कृष्ण को साक्षात अपने प्रियतम रूप से प्राप्त करती है,

(2) मुनिरुपा - भगवान राम जब चौदह वर्ष के लिये वन मे गये। और दण्डक वन से निकलने लगे, तो दण्डक वन मे वास करने वाले जितने भी दाढ़ी वाले संत है, उन संतो ने राम के सौन्दर्य को देखा और उनके मन मे यह भावना जगी क्या?
हम लोग भी स्त्री रुप होकर इनकी सेवा कर सकते है? भगवान संतो के मन के भाव को जान गये। भगवान ने उन संतो पर प्रसन्न होकर गोपी होकर प्राप्त करने का वर दिया। वही सन्त व्रज मे गोपी बनकर महारास मे पधारे।

(3) दैत्यकन्या - भगवान नारायण जब वामन रुप लेकर गये राजा बलि के यहाँ, तो बलि के यहाँ रहने वाली जितनी दैत्य कन्यायें है, उन दैत्य कन्याओ ने वामन भगवान के सौन्दर्य को देखा और मन मे विचार किया कि हम भी सखी रुप रखकर इनकी सेवा करती तो कैसा होता? भगवान दैत्य कन्याओ के भाव को जान गये और प्रसन्न होकर वर दिया तुम सभी गोपी बनकर महारास मे आना, वही दैत्यकन्यायें गोपी बनकर महारास मे पधारी।

(4) मत्स्यकन्या - समुद्र मंथन के समय जब मंदराचल पर्वत नीचे की ओर धँसने लगा, उस समय भगवान कछुआ का रुप लेकर गये। मै कच्छप भगवान को मत्स्य कन्याओ ने देखा, उनके मन मे भी गोपी भाव की जागृति हुई। भगवान ने मत्स्य कन्याओ के मनोरथ को भी पूर्ण किया। वही मत्स्य कन्यायें महारास मे गोपी बनकर के आयी।

श्लोक - भगवानपि ता रात्री: शरदोत्फुल्लमल्लिका: ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥

(1) ⇒ शुकदेव जी परीक्षित जी को रासपंचाध्यायी की कथा श्रवण करा रहे है। यदि ये स्त्री पुरुष के लौकिक श्रृंगार की चर्चा होती तो शुकदेव जी जैसे परमहंस इस चर्चा को करते ही नही।

(2) यदि स्त्री पुरुष के मिलन की ये लौकिक चर्चा होती तो जिनको थोड़ी देर बाद मरना है, वो राजा परीक्षित इस चर्चा मे रुचि ही नही लेते। ये तो आत्मा और परमात्मा के मिलन की कथा है। योगी जिसको समाधि कहते है। उसी को भागवत मे रास कहा गया। ज्ञानी जिसको मोक्ष बोलते है, वही पुष्टि रास है। ये रसानुभव है।

⇒ महारास का प्रारम्भ भगवान शब्द से हो रहा है, ये कोई लौकिक पुरुष की बात नही, श्रीकृष्ण साक्षात भगवान है। ये भगवान की लीला है।

(1) भगवान किसे कहते हैं?
ज्ञान, शक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, तेज, ये छः गुण सम्पूर्ण रुप से जिसके अन्दर विद्यमान हो, उसको भगवान कहते है।

(2) उत्पत्ति, अनन्त, अनन्त सृष्टि की उत्पत्ति, और अनन्त अनन्त सृष्टि का प्रलय, और इस सृष्टि मे जितने अनन्त, अनन्त प्राणी है, उन प्राणियो की गति, उन प्राणियो के कर्म, कर्म का फल, इन सब विषयो को जो प्रतिक्षण जानता रहता है। ऐसे सर्वज्ञ तत्व को भगवान कहते है।

कृष्णाअवतार मे भगवान के ये छः गुण लीला मे प्रकट होते है।

(1) ज्ञान - कृष्ण अवतार मे भगवान ने महाभारत युद्ध मे अर्जुन को एक घण्टे मे गीता सुनाई, 18 अध्याय, 700 श्लोक, भगवान ने अर्जुन को सुनाये, एक घण्टे का

प्रवचन जो भगवान का है, उसमे कितना ज्ञान भरा है आजतक दुनियां के विद्वान उसे पढ़कर के पूर्ण रूप से समझ नहीं पाये। ये भगवान के ज्ञान की एक झलक है।

(2) शक्ति → भगवान की शक्ति देखनी हो तो कृष्ण अवतार मे देखो। छः दिन के कृष्ण पूतना को दूध पीते हुये मार देते है। ये भगवान की शक्ति है।

(3) बल → बल देखना है तो कृष्णअवतार मे देखो, सांत वर्ष के कृष्ण ने सांत कोस लम्बे, चौड़े गोवर्धन को खेल, खेल मे ही भगवान ने उठा लिया। ये भगवान का बल है।

(4) ऐश्वर्य :- ऐश्वर्य अर्थात वैभव, भगवान का वैभव देखना है तो देखो, द्वारिकापुरी मे न कहीं से ईट लाना था, न कहीं से सोना लाना है, न कहीं से चांदी, केवल भगवान के संकल्प करते ही समुद्र के अन्दर सांत कोस की लम्बी, चौड़ी स्वर्ण की द्वारिकापुरी बनकर के तैयार हो गयी, ये भगवान का ऐश्वर्य है।

(5) वीर्य – वीर्य अर्थात पराक्रम, शत्रु की सेना में निर्भीक होकर अकेले साहस पूर्वक प्रवेश कर जाना, इसको वीर्य कहते है। रुक्मिणी जी का हरण करने भगवान जब आये, कितने देश की सेनायें लगी थीं, सुरक्षा मे, इतनी सेनाओं के मध्य गोविन्द अकेले आये, और रुक्मिणी जी को साहस पूर्वक लेकर चले गये। ये भगवान का पराक्रम है।

(6) तेज → तेज अर्थात प्रकाश, अग्नि तत्व को ही तेज तत्व कहा जाता है भगवान के अन्दर कितना

⇒ तेज है? सबसे ज्यादा तेज तत्व क्या है? अग्नि. अग्नि स्वयं तेज तत्व है। और उस अग्नि को भी जो पानी के समान पी जाये उसके अन्दर कितना तेज होगा?

⇒ वृन्दावन मे जंगल मे जब दावाग्नि लग गयी तब ग्वालबाल और बछड़ों की रक्षा के लिये भगवान उस दावाग्नि को मुख के द्वारा पान कर गये। ये है भगवान का तेज।

भगवान⇒

⇒ भगवान् शब्द से रासलीला का प्रारम्भ हुआ।

ता रात्रीः⇒ वे रात्रियाँ आयीं जिसके लिये भगवान ने गोपियों को वचन दिया था।

भगवानपि रन्तुं मनश्चक्रे ⇒ जीवों को तो भगवान से मिलने की तीव्र इच्छा है। आज भगवान ने भी जीवो से मिलने का मन बनाया। क्योंकि जब तक भगवान खुद से कृपा करके नही मिलते, तब तक हम भगवान से नही मिल सकते।

शरदोत्फुल्लमल्लिका :· शरद पूर्णिमा की रात्रि है, सबसे सुन्दर रात्रि होती है शरद की, मौसम भी बड़ा प्यारा होता है। बेला, चमेली आदि पुष्पो से पूरा ब्रजमण्डल सुगन्धित हो रहा है। शरद पूर्णिमा की रात्रि को ही भगवान ने महारास के लिये क्यों चुना?

⇒ शरदपूर्णिमा की रात्रि को महारास के लिये भगवान ने इसलिये चुना क्योंकि चन्द्रमा मन का देवता होता है। चन्द्रमा का दर्शन करके मन बहुत चंचल होता है। कामोदीप्त होता है चन्द्रमा का दर्शन करके, भगवान ने कामदेव से कहा देखो तुम बाद मे बहानेबाजी मत करना, कि हम बीमार हो गये थे, कमजोर हो गये थे। इसलिये तुमने हमको हरा दिया। इसलिये तुम्हारी ही शक्ति बढ़ाने

⇒ वाली तिथि पूर्णिमा, जिसमे चन्द्रमा पूर्णरूपेण चमकता है आकाश मे, जो तुम्हे शक्ति और प्रदान करेगा इसलिये हम शरद पूर्णिमा को ही चुनते है, ताँकि तुम पूरी शक्ति के साथ लड़ सको हमसे।

योगमायामुपाश्रितः- भगवान ने योगमाया का आश्रय किया। योगमाया का सहयोग लिया। कौन है योगमाया?

"योगाय या माया सा योगमाया"

भगवान के साथ जो संयोग कराने वाली माया है, प्रभु से मिलाने वाली जो माया है। वही योग माया है। कौन है वो? वो है श्री राधा, भगवान को भी राधा रानी का आश्रय करना पड़ा।

राधे तू बड़भागिनी, कौन तपस्या कीन्ह।
तीन लोक तारन तरन, सो तेरे आधीन॥

बिना राधा रानी की कृपा के रास मे प्रवेश नही मिल सकता। राधा रानी जिन पर कृपा करे, वही रास मे प्रवेश कर सकते है। राधा रानी के सहयोग से ही श्री कृष्ण रास रचाते है।

⇒ हम लोग भी श्री जी से प्रार्थना करे, कि हे! श्री जी हमे भी महारास मे प्रवेश की अनुमति दीजिये ताँकि हम भी मानसिक रुप से भगवान के महरास मे उपस्थित हो सके।

-! भजन !-

सरस किशोरी, वयस की थोरी
रति रस भोरी, कीजै कृपा की कोर।
श्री राधे, कीजै कृपा की कोर।

(1) साधन हीन, दीन मैं राधे
तुम करुणामयी प्रेम अगाधे
काके द्वारे जाय पुकारे, कौन निहारे, दीन दुःखी की ओर

सरस किशोरी वयस की थोरी
रति रस भोरी, कीजै कृपा की कोर
श्री राधे — — — —

(2) करत अघन नहिं नेकु उघाऊँ
भजन करन मे मन को लगाऊँ
करी बरजोरी, लखि निज ओरी
तुम बिनु मोरी, कौन सुधारे दोर

सरस किशोरी — — — — —

(3) भलो बुरो जैसो हूँ तिहारो
तुम बिनु कोउ न हितु हमारो
भानुदुलारी, सुधि लो हमारी
शरण तिहारी, हौ पतितन सिरमोर
सरस किशोरी, वयस की थोरी
रति रस भोरी, कीजै कृपा की कोर
श्री राधे, कीजै कृपा की कोर

(4) गोपी प्रेम की भिक्षा दीजै
कैसेहु मोहिं अपनी करी लीजै
तव गुण गावत, दिवस बितावत
हृदय भर आवत, बहवे प्रेम हिलोर
सरस किशोरी, वयस की थोरी
रति रस भोरी, कीजै कृपा की कोर
श्री राधे, कीजै कृपा की कोर।

सरस किशोरी — — — — — —

24

25

⇒ आँज शरद पूर्णिमा की रात्रि है। मेरे कृष्ण ने वेणु का निनाद किया। मेरे कन्हैया यमुना किनारे चले गये। कल-कल निनादनी पावन यमुना के तट पर शरद पूर्णिमा की रात्रि मे बालुका खिल रही है, चन्द्रमा प्रमुदित हो रहा है।

⇒ पहले जब वंशी बजी थी वह -

① इति वेणुरवं राजन् सर्वभूतमनोहरम् ।

सभी को सुनाई पड़ी थी, सभी प्राणियो के मन को चुरा लेने वाली वह वंशी की ध्वनि थी। किन्तु शरद पूर्णिमा पर भगवान ने जब वंशी बजाई वह वंशी की ध्वनि सभी को सुनाई नही पड़ी।

② जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ।

आँज जो वंशी बजी उसकी ध्वनि केवल गोपियों को सुनाई पड़ी।

भगवान श्री कृष्ण वंशी बजाते है या शंख बजाते है। भगवान वृन्दावन मे वेणु बजाते है, और कुरुक्षेत्र मे शंख बजाते है। वेणु हो या शंख इसमे प्राण फूको तो ही बजेगा। भगवान ने वेणु मे प्राण फूके, वेणु नाद सदवृत्तियों को आकर्षित करता है और शंख नाद दुरवृत्तियों को दूर भगाता है। दोनों नाद है, नाद ब्रह्म है। लेकिन दोनो का परिणाम अलग-अलग है।

श्लोक - निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं
व्रजस्त्रियः कृष्ण गृहीत मानसाः ।
आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः
स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ॥

⇒ भगवान ने जब वेणु का निनाद किया, तो वेणु मे 'क्लीं' कामबीज को प्रकट किया। गोपियों ने जब वेणु का नाद सुना तो उनके मन मे काम जाग्रत हुआ। लेकिन वो काम कृष्ण विषयक है।

→ तदनङ्गवर्धनं गीतं निशम्य
अनङ्ग अर्थात काम वंशी की ध्वनि गोपियों के मन मे काम को जगाने वाली थी। कौन से काम ? कृष्ण मिलन की लालसा रुपी कामना को जगाने वाली।

शुकदेव जी कहते हैं -

श्लोक - कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च।
नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ॥

⇒ परमात्मा से सम्बन्ध बनाओ, भले ही वो सम्बन्ध काम विषयक हो, आपका सम्बन्ध भगवान के साथ होना चाहिये, वह सम्बन्ध चाहे जैसा हो - काम, क्रोध, भय, स्नेह, नातेदारी या सौहार्द का हो। चाहे जिस भाव से भगवान मे नित्य - निरन्तर अपनी वृत्तियाँ जोड़ दी जायें वे भगवान से ही जुड़ती हैं।

→ वेणु का नाद सुनकर गोपियां अपने - अपने घरो से निकलकर प्रियतम से मिलने के लिये दौड़ पड़ी।

→ शुकदेव जी कहते है वंशी की ध्वनि सुनकर के गोपियों को ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो श्री कृष्ण उनका नाम लेकर बुला रहे हो, इसलिये जो गोपी जिस कार्य को कर रही थी, उसे कार्य को छोड़कर कृष्ण से मिलने के लिये दौड़ पड़ी।

(1) एक गोपी गाय दुह रही थी और गाय को दुहते समय गोपी ने जैसे ही मुरली को सुना, दूध का बर्तन वहीं पटक दिया और दौड़ पड़ी कृष्ण से मिलने।

(२) एक गोपी अपने बच्चे को गोद मे लेकर दूध पिला रही थी, जैसे ही मुरली की तान सुनी, बच्चे को पलना मे डालकर दौड़ पड़ी कृष्ण से मिलने।

3) एक गोपी अपनी आँखो मे काजल लगा रही थी और जैसे ही मुरली को सुना बस एक आँख मे काजल लगाया, दूसरी में लगाया ही नहीं और दौड़ पड़ी।

(4) एक ने बिना लहंगा साड़ी पहन ली, एक ने लहंगा पहना तो साड़ी पहनना ही भूल गयी, ऐसी परिस्थिति उन गोपियों की बन गयी।

श्लोक - ता वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः।
गोविन्दापहृतात्मानो न न्यवर्तन्त मोहिताः॥

⇒ जब गोपियों के पिता, पतियों, भाई, जाति-बन्धुओं ने देखा कि वे मध्य रात्रि के समय घर से बाहर अकेले दौड़ते हुये जा रही है तो उन्हे रोका, परन्तु गोपियां वेणु के नाद को सुनकर के इतनी मोहित हो गयी थीं कि रोकने पर भी न रुकीं।

(5) एक गोपी के पति ने गोपी को पकड़कर एक कक्ष मे बन्द कर दिया, और ताला लगा दिया। गोपी ने अपने पति से कहा, इस शरीर के पति हो आप, आत्मा के नही, इस शरीर का कोई पति हो सकता है, किन्तु आत्मा के पति श्री कृष्ण ही हैं। आप मेरे शरीर को गोविन्द से मिलने से रोक सकते है, मेरे आत्मा को नही।

श्लोक- जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः।

⇒ गोपी ने अपने गुणमय शरीर को उसी समय त्याग दिया। और कृष्ण से मिलने पहुंच गयी। गोपी ने अपने गुणमय शरीर को त्याग दिया, अर्थात- देह भाव से ऊपर उठ गयी, देह भाव मे जबतक आप हो तबतक सारे बन्धन है संसार के, जब देह भाव ही नही रहा, तो बन्धन भी नही रहे। गोपियाँ हैं अन्तःकरण की वृत्तियां जब मन भगवान मे लग जाता है, तो संसार उसे कृष्ण से मिलने से रोक नही सकता।

= सभी गोपिया दौड़ी - दौड़ी श्री कृष्ण के पास आई। गोपियों को देखकर मेरे गोविन्द मुस्कराने लगे- और गोपियों से बोले-

श्लोक - स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः।

व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ॥

स्वागतम्, सुस्वागतम् - आप यहाँ आई हो, मैं आपका स्वागत करता हूँ। जब जीव परमात्मा के पास जाता है, तो भगवान उसकी परीक्षा लेते हैं। यदि जीव परीक्षा से पास हो जाता है, तो भगवान उसे अपनी चरण सन्निधि प्रदान करते है।

⇒ जैसे एक कुम्भकार घट को ठोक, बजाकर देखता है, घट पका है या कच्चा ठीक इसी प्रकार परमात्मा भी देखते है ये जो भक्त मेरी शरण मे आया है, ये मेरा अनन्य भक्त है या अभी कच्चा है।

⇒ भक्ति के नाम पर दिखावा करने वाले भक्त भगवान् को पसन्द नही है। जो भक्त मन, कर्म, वचन तीनो से अपने आप को भगवान को समर्पित कर देता है, भगवान् उसी को स्वीकार करते हैं।

⇒ भक्ति के नाम पर जो दिखावा करते है, भगवान उन्हे कभी स्वीकार नही करते हैं।

उदाहरण → एक मौलवी साहब बीच रास्ते मे बैठकर नमाज अदा कर रहे थे। उसी समय एक लड़की दौड़ी-दौड़ी आई और मौलवी साहब के आसन को लांगकर चली गई। मौलवी साहब तुरन्त अपने आसन से खड़े हो गये और उस लड़की के वापिस आने का इन्तजार करने लगे। जब वह लड़की वापिस आई तो उस मौलवी ने उससे पूछा, तुम इतनी जल्दी मे कहाँ भागकर जा रही थी, तुमको पता है तुम्हारी वजह से मेरी नमाज खण्डित हो गई, उस लड़की ने कहा माफ करना मौलवी साहब मै किसी से प्रेम करती हूँ, और आज मुझे उससे 4 बजे मिलने जाना था, 4 बज गये थे, मै लेट हो

गई थी, कही मेरा प्रेमी लौट न जाये यह विचार करके जल्दी, जल्दी भागकर जा रही थी, आपके आसन को लांग कर कब चली गयी, मुझे पता ही नही चला। किन्तु माफ करना मौलवी साहब आप अल्लाह की सच्ची इबादत नही कर रहे थे, यदि आप अल्लाह की सच्ची इबादत कर रहे होते तो आपको पता ही नही चलता कि आपके आसन को लांगकर कौन चला गया।

⇒ आप बैठे भगवान के सामने है, मन आपका संसार मे गति कर रहा है, ऐसी भक्ति परमात्मा को पसन्द नही है। आपके भक्ति का क्या परिणाम आपको प्राप्त होगा यह विचार किये बिना, मन कर्म, वचन तीनो से समर्पित होकर भक्ति करनी चाहिये।

उदाहरण – एक पण्डित जी थे, वह भगवान के बहुत बूढ़े भक्त थे, हर समय माला लेकर नाम जप करते रहते थे। एक दिन पण्डित जी नाम जप कर रहे थे, उसी समय भगवान वहाँ प्रकट हो गये। पण्डित जी ने भगवान को प्रणाम किया। नारायण ने पण्डित जी से कहा, मैं तुम्हे ये बताने के लिये यहाँ आया हूँ, कि तुम इतने वर्षो से मेरा नाम जप कर रहे हो, किन्तु मैं आज तक तुमसे प्रसन्न नही हुआ। यह सुनकर पण्डित जी तेज-तेज से हँसने लगे। नारायण ने पण्डित जी से कहा मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न नही हुआ यह सुनकर भी तुम हँस रहे हो, पण्डित जी ने कहा नारायण, मैं इसलिये हँस रहा हूँ कि कमसे कम आपको याद तो है कि मैं इतने वर्षो से आपका नाम जप कर रहा हूँ, आप मेरी भक्ति से प्रसन्न हुये कि नही यह तो अलग विषय है, आपको यह ज्ञात है कि मैं इतने वर्षो से आपका नाम जप कर रहा हूँ, मेरी लिये यही प्रसन्नता का विषय है।

⇒ जो जीव हमारे भक्ति, जप, का क्या परिणाम हमे प्राप्त होगा, यह विचार किये बिना भक्ति करता है, भगवान उसे अपनी चरण सन्निधि प्रदान करते है।

⇒ गोपियां जब मध्यरात्रि को भगवान की शरण मे आयी, तब ठाकुर जी ने गोपियों की पहले परीक्षा

ती। ये गोपियां जो मध्य रात्रि को अपने - अपने पतियों को छोड़कर यहां आई है ये मेरी अनन्य भक्त है या अभी कच्ची है? भगवान ने गोपियों से पूछा?

श्लोक- रजन्येषा घोररुपा घोरसत्त्वनिषेविता।
प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः॥

⇒ ये रात्रि का समय है और ये वृन्दावन है, कोई नगर का बगीचा नही, इस वक्त तुम यहां क्यों आई हो? इस वक्त तुम्हारा यहां आना और रहना उचित नही है। जंगल मे वन मे रात्रि के समय हिंसक पशु और बुरी नियत वाले लोग घुमते रहते है। तुम्हे यहां नही आना चाहिये था। तुम अपने पतियों को सगे सम्बन्धियों को छोड़कर यहां आई हो, ये तुमने ठीक नही किया। स्त्रियों का परम धर्म यही है कि वे पति और उसके भाई-बन्धुओं की निष्कपट भाव से सेवा करें।

श्लोक- भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया।
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम्॥

⇒ गोपियों अपने पति की सेवा करना, सास, ससुर की सेवा करना, सन्तान का पालन पोषण करना यही स्त्रियों का परम धर्म होता है।

श्लोक- दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी॥

⇒ भगवान कहते है- गोपियों पति बुरे स्वभाव-वाला, भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी या निर्धन कैसा भी हो उसका परित्याग नही करना चाहिये।

⇒ जिन स्त्रियों को उत्तम लोक प्राप्त करने की अभिलाषा हो, वे पातकी (अत्यधिक पाप करने वाला) को छोड़कर और किसी भी प्रकार के पति का त्याग न करें)

⇒ भगवान गोपियों को पतिव्रत धर्म के प्रभाव के बारे मे बताते है।

⇒ भगवान कहते है- एक पण्डित जी थे, जो भगवान की कथा गाकर के अपने घर का पालन पोषण किया करते थे। एकदिन पण्डित जी कथा कहकर के थके हुए शाम को देरी से घर आये। पण्डित जी की पत्नी ने उन्हें भोजन कराया, भोजन करने के बाद पण्डित जी अपनी पत्नी की गोद मे सिर रख कर सो गये। उसका एक छः महीने का बच्चा था, वो बालक घुटमन - घुटमन चलते हुए अग्नि कुण्ड के पास खेलता हुआ चला गया। उस नारी ने देखा मेरा इकलौता बेटा है। कहीं ये अग्निकुण्ड में गिर न जाये? लेकिन करे क्या?

⇒ उसने सोचा, यदि बच्चे को बचाने के लिए जाती हूँ, तो मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट होता है। पति अभी आकर सोये हैं, इनको जगाऊँ कैसे? यदि बालक को बचाने नहीं जाऊँ, तो ये बालक जल कर राख हो जायेगा। गोपी ऐसा विचार मन मे कर ही रही थी कि उसका बालक अग्निकुण्ड के पास जाकर झाँकने लगा और तुरन्त अग्निकुण्ड मे पलट गया। नारी ने अपनी आँखो को बन्द कर लिया, मेरा बालक जलकर राख भले ही हो जाये, लेकिन मैं मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट नहीं कर सकती।

⇒ एक घण्टे के बाद जब पति की नींद खुली। पत्नी दौड़ी-दौड़ी अग्निकुण्ड के पास मे गयी, तो देखा अग्निकुण्ड मे बड़ी जोर से अग्नि प्रज्जवलित है। जलते हुए अग्नि कुण्ड मे उसका बालक किलोल कर रहा है, खेल रहा है।

⇒ पतिव्रत धर्म के प्रभाव से जलती हुई अग्नि चंदन के समान शीतल हो गयी। अग्नि के अन्दर, जो दाहकत्व शक्ति है, वो समाप्त हो गयी। ये होता है पतिव्रता नारी का महत्व। एक आप सब गोपियाँ है, मेरी मुरली को सुनकर अपने पतियों को छोड़कर चली आयीं मेरे पास। जाओ, अपने-अपने पतियों की सेवा करो, यही सर्वोच्च धर्म है।

भगवान अपने प्रेमियों की बड़ी कठिन परीक्षा लेते हैं।

⇒ 10 श्लोकों मे भगवान गोपियों से प्रश्न करते हैं तुम क्यों आई हो? और 11 श्लोकों मे गोपियां उत्तर देती है भगवान को। 11 श्लोकों मे प्यारा गीत गाकर के गोपियाँ उत्तर देती हैं भगवान को, इस गीत का नाम है प्रणयगीत। आइये एक दो श्लोक हम भी श्रवण करते हैं।

श्लोक – मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं
सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम्।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून्॥

श्लोक – चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु
यन्निर्विशत्युत करावपि गृह्यकृत्ये।
पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद्
यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा॥

⇒ गोपियाँ कहती हैं हे प्रभो! आपके लिये हम घर, परिवार, सम्बन्ध, रिश्ते सबसे नाता तोड़कर आ गई, पर जबसे आई है आपके मुख से एक ही बात सुन रही हैं, चली जाओ, लौट जाओ, भाग जाओ, क्या हम इतनी कुरूप हैं, जो आते ही हमें भगाना शुरू कर दिया। एक बार भी आपने हमसे प्रेम भरी कोई बात नहीं की, आप तो मधुरता की साक्षात मूर्ति हो, कम से कम दो बातें तो मीठी बोल देते, अगर आप कहते हो यहाँ से चली जाओ, तो हम चली जायेगी, क्यों कि हम आपसे प्रेम करती हैं, जिसमे प्रियतम सुखी, उसी मे प्रेमी सुखी, किन्तु आप हमे पतिव्रत धर्म का उपदेश मत करिये, पतिव्रत धर्म क्या होता है, हमे पता है, आपके जैसी कहानियाँ हमे भी आती है कहो तो सुनाऊ? भगवान कहते हैं सुनाओ?

दृष्टान्त – गोपियाँ कहती हैं, पहले आप यह बताओ संसार के प्रत्येक प्राणी के अन्दर आप हो कि नही? भगवान कहते हैं, हाँ, मैं संसार के प्रत्येक प्राणी के अन्दर रहता हूँ, गोपियां कहती हैं प्रभो! मैं अपने पति, सास, ससुर सभी के अन्दर आपके दर्शन करके

उनकी सेवा करती हैं किन्तु प्रभो संसार के जितने भी प्राणी है, वह आपकी फोटोकॉपी है। सभीके अन्दर आप विराजित हो। अब मैं आपसे पूछना चाहती हूँ? यदि मैं अपने पति के चित्र की पूजा कर रही हूँ और दरवाजे पर मेरे पति खड़े हो, तो मुझे चित्र की पूजा करनी चाहिये या दरवाजे पर खड़े पति को अन्दर बुलाकर उनकी पूजा करनी चाहिये? भगवान कहते हैं गोपियों जब तुम्हारे पति आ जाये तो तुम्हे उनकी पूजा करनी चाहिये, चित्र की नही।

⇒ गोपियाँ कहती हैं प्रभो यही तो हम आपसे कहना चाहती है, हमारे पति तो आपकी फोटोकॉपी हैं, हमारे असली पति तो आप हो।

उदाहरण - आप अपने गुरु जी का पूजन चित्र रखकर के कर रहे हो, उसी समय आपके गुरु जी साक्षात आपके घर आ जाये, तो आप गुरु जी का पूजन करोगे या चित्र का, सीधी सी बात है, जब गुरु जी साक्षात आपके घर आ जाये तो आप उनका पूजन करेंगे, चित्र का नही।

⇒ गोपियाँ कहती है, जब हमे असली पति मिल गये है तो मिट्टी के पतियों की सेवा करने की क्या आवश्यकता? जब हमे आत्मा के पति श्रीकृष्ण परमात्मा मिल गये तो मिट्टी के पतियों की सेवा करने की क्या आवश्यकता।

ऐसे वर को क्यों वरें, जो जन्मे और मर जाय।
वर वरिये गोपाल जी, जासे चुड़लो अमर हो जाय॥

⇒ ऐसे पति वरने का क्या प्रयोजन कि आज पति का वरण किया और दस दिन बाद वैधव्य देखना पड़े। यदि वरण ही करना है तो गोपाल को वरण करो।

⇒ गोपियाँ कहती- श्याम सुन्दर आप हमसे कह रहे हो कि हम अपने घर चली जाये किन्तु-

पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद्

⇒ हमारे पैर घर की तरफ उठ ही नही रहे है।

⇒ भगवान ने कहा क्यो क्या हो गया ?
गोपियाँ कहती -

⇒ चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु

आपने वंशी बजाकर हमारा चित्त चुरा लिया, हमारा मन हर लिया। प्रभो! आपको ज्ञात होना चाहिये, जिसके पास मन नही रह जाता, चित्त नही रह जाता, उसका शरीर भी किसी काम का नही रह जाता। आप पूजा कर रहे है और मन आपका रसोईघर मे पहुँच जाये, अरे! गैस पर दूध रख आई थी कही उफन न जाये, तो आप कितनी भी पूजा कर लो, आपकी पूजा भगवान कभी भी स्वीकार नही करेगी, किसी कर्म को करते समय शरीर और मन दोनो से एक ही जगह होना चाहिये। गोपियाँ कहती प्यारे जब मन हमारा आपने हर लिया तो ये मन घर जाये, तो कैसे जाये?

⇒ भगवान बोले तो कोई बात नही, मै तुम्हे घर भेजने की कोई व्यवस्था करता हूँ। फिर तो घर जाओगी?
गोपियाँ बोली - 'करवाम किं वा"

घर पहुँचा भी दिया, तो घर जाकर हम क्या करेगी वो तो बताओ? जब मन हमारा आपके पास हैं, तो घर के काम भी हमसे नही होगे बिना मन के। तब भगवान ने गोपियों से कहा- क्या चाहती हो? तब गोपियो ने खुलकर हृदय की बात भगवान् से कही।

श्लोक - सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृत पूरकेण
हासावलोक कलगीतजहृच्छयाग्निम् ।

गोपियाँ कहती है - हे प्यारे! आप हमे अपनी अधर सुधा से अनुगृहीत करे, अन्यथा तुम्हारी विरह व्यथा की अग्नि से हम खुद को जलाकर शान्त कर देगी और ध्यान के द्वारा तुम्हारे चरणकमलो की प्राप्ति करलेगी।

=) जब गोपियों ने अपने मन की बात पहली बार भगवान के मुख को देखकर कही, भगवान प्रसन्न हो गये, भगवान जानते थे कि गोपियाँ मुझसे प्रेम करती हैं, किन्तु गोविन्द गोपियों के मुख से उनकी मन की बात सुनना चाहते थे। भगवान ने गोपियों से कहा अभी भी वक्त है लौट जाओ घर, नहीं तो बदनाम हो जाओगी। गोपियाँ बोली - जो बदनामी से डरे वो प्रेम क्या करे? हमे तो श्रीकृष्ण चाहिये, भगवान चाहिये, लोग क्या कहेंगे यदि उसी पर विचार करते रहेंगे, तो क्या भगवान की भक्ति करेंगे? भगवान गोपियों के सच्चे प्रेम को देखकर प्रसन्न हो गये। गोपियाँ भगवान के लिये अपना घर परिवार सब छोड़कर आई हैं, गोपियों का त्याग अविवेकजन्य नहीं, विवेकजन्य है, और तब भगवान ने रास रचाया - गोविन्द अन्तिम छड़ तक परीक्षा तो लेते ही हैं।

०: भजन :०

ऐसो रास रच्यो वृन्दावन
है रही पायल की झंकार ॥

(1) घुंघरू खूब छमा-छम बाजे,
बजते बिछुवा बहुते बाजे
रवा कौंधनी केहु बाजे
अंग अंग मे गहना साजे
चूडियन की झंकार,

ऐसो रास रच्यो वृंदावन
है रही पायल की झंकार ॥

(२) बाजे भाँति-भाँति के बाजे
झांझ पखावज दुन्दुभि बाजे
सारंगी और महुवर बाजे
बंसी बाजे मधुर, मधुर बाजे
वीणा हूं के तार,

ऐसो रास रच्यो वृंदावन
है रही पायल की झंकार

(3) राधा मोहन दै गलबईयाँ
नाचे संग-संग ले फिरकईयाँ
बयार चले शीतल सुखदईयाँ,
जामा, पटुका, लहंगा, फरिया
करे सनन सनकार

ऐसो रास रच्यो वृन्दावन - 2
है रही पायल की झंकार - 2

⇒ भगवान प्रत्येक गोपी के साथ रास खेल रहे है, जितनी गोपियाँ उतने कृष्ण, भगवान प्रत्येक गोपी के साथ रास कर रहे है।

⇒ हम सब भी गोपी है, गोपी कोई, स्त्री, पुरुष नही, गोपी एक भाव है। वैसे तो रास मे कोई गोपी पांच वर्ष की है, कोई सौ वर्ष की, किन्तु भाव की दृष्टि से देखा जाये तो सभी गोपियाँ समान है, सभी श्री कृष्ण को पाना चाहती है।

⇒ भगवान प्रत्येक गोपी के साथ रास कर रहे है, इसका क्या अर्थ है? इसका यह अर्थ है संसार का वह प्रत्येक प्राणी जो अपनी इन्द्रियों से कृष्ण रस का पान करता है, वह गोपी है। और उसके अन्दर उपस्थित आत्मा श्रीकृष्ण है। तुम मन, कर्म, वचन से अपने आप को श्री कृष्ण के चरणो मे समर्पित कर दो, भगवान तुम्हारे भी साथ रास करेगें। रास करते-करते प्रत्येक गोपी को ये लगा कि कृष्ण मेरे साथ ही केवल नृत्य कर रहे है, ये केवल मेरे है। मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ, कभी-कभी सात्विकता का अभिमान हो जाता हैं। और वह सात्विकता का अभिमान हमे भगवान से दूर करता हैं। गोपियों के मन मे अभिमान देखकर भगवान राधा रानी को लेकर वहां से अन्तर्ध्यान हो गये।

⇒ अच्छा बनना बहुत अच्छी बात हैं, किन्तु अच्छाई का अभिमान सबसे बुरी बात हैं। कभी-कभी भक्तो को भी अभिमान हो जाता है।

⇒ आप नाम जप करते हो, अच्छी बात है। मैं इतनी माला नित्य करता हूं ये भजन का अभिमान है। अभिमान किसी का भी हो, आपके लिये हानिकारक है, आप सत्संग, जप, यज्ञ, दान करते हो अच्छी बात है। किन्तु मैं इतना जप करता हूं, इतना दान करता हूं ये आपका अभिमान है।

श्लोक - तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ।।

⇒ उन गोपियों के सौभाग्यमद को देखकर, उस अभिमान का प्रशमन करने के लिये, उन गोपियों पर कृपा करने के लिये, भगवान वही अन्तर्ध्यान हो गये।

⇒ गोपियां श्री कृष्ण को ढूंढने के लिये कुन्ज, निकुन्ज मे भटकने लगी।

:भजन:

भटकते रहेंगे हम तो होके बावरे,
तेरे बिन जाये कहाँ, ओ सांवरे ॥

(1) तेरे भरोसे हमने ये जग छोड़ा
हे निर्मोही हमसे क्यों मुख मोड़ा,
विरहा जला ना डाले बन आग रे,
तेरे बिन जाये कहाँ ओ सांवरे

(2) तुमने बुलाया हमे वंशी बजाके,
हम चली आई कितने सपने सजाके,
नटखट कन्हैया ऐसे मत भाग रे,
तेरे बिन जाये कहाँ ओ सांवरे ॥

(3) हम हैं तुम्हारे मोहन तू ही हमारा है,
तेरा ही सहारा हमको तेरा ही सहारा है,
श्याम शरण मे ले ले यही भाव रे,
तेरे बिन जाए कहाँ ओ सांवरे ॥

श्लोक - अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥

⇒ जैसे- हथिनियों के समूह के सरदार (गजराज) के बिना हथिनियों की दशा हो जाती है, वही दशा गोपियों की श्यामसुन्दर के बिना हो गयी।

⇒ श्री कृष्ण को ढूँढने के लिये गोपियाँ वन-वन में भटकने लगी। वे व्रजयुवतियाँ, पीपल, पाकर, बरगद के वृक्षों से पूछती हैं - तुमने हमारे श्यामसुन्दर को कही देखा है? श्याम-सुन्दर अपनी प्रेमभरी मुसकान और चितवन से हमारा मन चुराकर कही चले गये हैं।

⇒ एक गोपी तुलसी के पौधों के पास जाकर पूछती है ?

श्लोक :- कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ।
सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥

बहिन तुलसी ! तुम तो हमारी श्यामसुन्दर की अति प्रिय हो, हमारे श्यामसुन्दर भी तुमसे प्रेम करते हैं, तुमतो सदैव भगवान के समीप रहती हो, बिना तुम्हारे तो श्याम-सुन्दर भोग तक स्वीकार नही करते, क्या तुम बता सकती हो हमारे श्यामसुन्दर इस समय कहाँ है ?

⇒ तब तक दूसरी गोपी बोली अरे गोपियों इस तुलसी से क्यों पूछ रही हो ? यह तो हमारी सौत है, यह हमारा भला क्यों चाहेगी।

⇒ अपने प्यारे श्यामसुन्दर को वन वन मे ढूँढते-ढूँढते गोपियाँ अपने आप को ही श्री कृष्ण समझने लगी और भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का अनुकरण करने लगी।

⇒ एक गोपी पूतना बन गयी, तो दूसरी गोपी श्री कृष्ण बनकर के उसका स्तन पान करने लगी। एक गोपी छकड़ा बन गयी तो दूसरी गोपी बालकृष्ण बनकर के

⇒ रोते हुए उसे पैर की ठोकर मार के उलट देती हैं। कोई गोपी बालकृष्ण बनकर बैठ गयी तो कोई गोपी तृणावर्त दैत्य का रूप धारण करके उसे हर ले गयी।

⇒ एक गोपी श्री कृष्ण बनकर कहती - अरे व्रजवासियो तुम डरो मत, मैंने गोवर्धन - धारण कर लिया है अपने बाएँ हाथ के कनिष्ठिका अंगुली पर, तुम सब इसके नीचे आ जाओ, अनुकरण करने के लिये गोपी अपनी ओढ़नी उठाकर ऊपर तान लेती है। इस प्रकार लीला का अनुकरण करते - करते गोपियाँ वृन्दावन के वृक्ष और लता आदि से श्री कृष्ण का पता पूछने लगी।

⇒ जिस समय गोपियाँ वृक्ष और लताआदि से श्रीकृष्ण का पता पूछ रही थी, उसी समय उन्हे एक स्थान पर भगवान श्री कृष्ण के चरणचिह्न दिखाई पड़े, उन चरणचिह्नों के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को ढूंढते हुये गोपियां जब आगे बढ़ी तोउन्हें श्री कृष्ण के साथ किसी व्रजयुवती के भी चरणचिह्न दिखाई पड़े। उन चरण चिह्नों को देखकर गोपियां कहने लगी।

श्लोक - अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥

⇒ अवश्य ही यह चरणचिह्न हमारे श्यामसुन्दर की आराधिका के होंगे, लगता है हमारे प्यारे श्यामसुन्दर हम सभी को छोड़कर अपनी प्रिय आराधिका को लेकर कही चले गये हैं यहाँ आराधिका शब्द किशोरी राधा रानी के लिये प्रयुक्त किया गया है।

⇒ भागवत मे शुकदेव जी कही भी स्पष्टरुप से राधा नाम नही बोलते है किन्तु इसका अर्थ यह नहीहै कि भागवत जी मे श्री जी का कही नाम नही, भागवत जी मे शुकदेव जी श्री राधा के जगह राधा शब्द के पर्यायवाची शब्दो का प्रयोग करते है। अन्य शब्दो का का प्रयोग राधा के जगह किया गया हैं।
- श्रीमद् भागवत महापुराण के 10/30/28 मे शुकदेव जी राधा जी के लिये "आराधिका" शब्द का प्रयोग करते हैं। राधा शब्द के दो अर्थ है।

(1) आराधिका- (कृष्ण की आराधना करने वाली)

(2) आराध्या - (जिसकी सब आराधना करे)

= रास करते समय जिस गोपी को लेकर श्री कृष्ण अन्तर्ध्यान हुये थे उनके लिये गोपियां भागवत जी के दशम स्कन्ध के त्रिंशोऽध्याय के श्लोक संख्या 28 मे "अनयाऽऽराधितो" आराधिका शब्द का सम्बोधन करती है। यहां आराधिका शब्द का प्रयोग किशोरी राधा रानी के लिये ही किया गया हैं।

⇒ भागवत जी के दशम स्कन्ध के त्रयस्त्रिंशोऽध्याय के श्लोक संख्या 17 मे शुकदेव जी कहते हैं -

"रेमे रमेशो व्रजसुन्दरीभिः"
यहाँ रमा शब्द का प्रयोग राधा रानी के लिये किया जा रहा है। रमारमण प्रभु निर्विकार भाव से गोपियों को हृदय से लगा लेते हैं, गोपियों के साथ रास कौन कर रहा श्रीकृष्ण, महाविष्णु नही, रमा शब्द राधा का पर्यायवाची हैं यहाँ पर रमा अर्थात श्री राधा रानी हैं।

⇒ सम्पूर्ण भागवत में श्री राधा जी का नाम स्पष्ट रूप से क्यों नही हैं?

प्रथम कारण-

(1) श्री राधानाममात्रेण मूर्छा षाण्मासिकी भवेत्

⇒ श्री राधा बोलते ही शुकदेव जी की 6 महीने की समाधि लग जाती थी। जबकि शुकदेव जी को परीक्षित का 7 दिन मे उद्धार करना था। इसलिये स्पष्ट रूप से शुकदेव जी ने कही भी राधा नाम नही लिया।

द्वितीय कारण- राधा नाम शुकदेव जी का गुरु मन्त्र हैं। और शास्त्र कहते हैं- "गोपनीयं, गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः" अपने गुरुमन्त्र को गुप्त रखना चाहिये। इसलिये शुकदेव जी सम्पूर्ण भागवत मे राधा जी का नाम स्पष्ट रूप से नही लेते हैं।

→ शुकदेव जी कहते है - परीक्षित! गोपियाँ मतवाली-सी होकर - अपनी सुधबुध खोकर एक दूसरे को भगवान श्री कृष्ण के चरणचिह्न दिखलाती हुई वन-वन मे भटक रही थी।

→ इधर भगवान श्रीकृष्ण राधाजी को एकान्त मे लेजाकर के उनके साथ चर्चा करने लगे। जब राधा जी ने देखा प्यारे श्यामसुन्दर समस्त गोपियों को छोड़कर उनके साथ एकान्त मे चर्चा कर रहे हैं। राधा जी मन मे विचार करने लगी इन गोपियों मे, मै ही सबसे श्रेष्ठ हूँ, तभी तो श्यामसुन्दर समस्त गोपियों को छोड़कर इस समय मेरे साथ हैं कृष्ण मुझे कितना आदर देते हैं।

→ श्री राधा रानी प्रेम और सौभाग्य के मद से मतवाली होकर श्री कृष्ण से कहने लगी -

श्लोक - न पारयेऽहं चलितुं नय मां यत्र ते मनः ॥

हे! प्यारे श्यामसुन्दर मुझसे अब और चला नही जाता, मेरे सुकुमार पाँव थक गये हैं। अब तुम जहाँ चलना चाहो, मुझे अपने कंधे पर चढ़ाकर ले चलो।

→ भगवान श्री कृष्ण ने अपनी प्रियतमा से कहा -

श्लोक - एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति ।

अच्छा प्यारी! ऐसा करो तुम मेरे कंधे पर आकर चढ़ जाओ। जैसे ही राधारानी भगवान के कंधे पर चढ़ने चली, त्यों ही भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। राधा रानी भगवान को अपने समीप न देखकर रोने लगी। हानाथ! हा रमण! तुम कहाँ हो? इस प्रकार जोर-जोर से पुकारने लगी, भगवान को पुकारते, पुकारते, राधा रानी मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। इधर जब गोपियाँ भगवान के चरणचिह्नो के सहारे भगवान को ढूंढ़ते, ढूंढते आगे बढ़ी तो देखा कि किशोरी जी एक वृक्ष के नीचे अचेत पड़ी है।

सभी गोपियों ने राधा रानी को जगाया, राधारानी ने सभी गोपियों को बताया कि उनके प्यारे श्याम सुन्दर उन्हे भी छोड़कर चले गये। गोपियों को अपने शरीर की भी सुध नहीं थी। उनके मन मे एक ही इच्छा थी जल्दी से श्यामसुन्दर से भेट हो जाये। सभी गोपियां राधा रानी को साथ लेकर यमुना पुलिन पर रमणरेती में लौट आती हैं। और कृष्ण मिलन

श्लोक - पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः।
समवेता जगुः कृष्णं तदागमन कांक्षिताः ॥

की लालसा से एक गीत गाती हैं, गोपियों ने जिस गीत को कृष्ण मिलन की लालसा से गाया उसे गोपी गीत कहते हैं।

-। गोपी गीत !-

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १

शरदुदाशये साधुजातसत-
सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥ २

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया -
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥ ३

न खलु गोपिकानन्दनो भवा -
नखिल देहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥ ४

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥ ५

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ॥ ६

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनं ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥ ७

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती-
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥ ८

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥ ९

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि । १०

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥ ११

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥ १२

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपंकजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥ १३

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥ १४

अटति यद् भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड़ उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥ १५

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा-
नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥ १६

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥ १७

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥ १८

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥ १९

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥

:: भजन ::

रो रहे है हम कृष्ण याद मे - 2
आ जाओ प्रभू, जी न पायेगे - 2

आपके नयन बाण बन गये - 2
आपके चरण प्राण बन गये - 2

:: गोपी गीत अर्थ ::

रास के समय गोपियों की 19 टोलिया थी। प्रत्येक टोली मे एक टोली नायिका थी। 18 टोलियों की टोली नायिका अन्य गोपियाँ थी एक टोली की टोली नायिका स्वयं श्री राधा रानी थी। गोपी गीत के 18 श्लोक 18 टोलियों की टोली नायिकाओ ने गाये है और अन्तिम श्लोक स्वयं श्री राधा रानी ने गाया है।

श्लोक-1 गोपियाँ सर्वप्रथम जयति शब्द से अपने गीत का प्रारम्भ करती है। गोपियाँ कहती है - प्यारे आपके वृज की जयजयकार हो रही है, जब से आपने वृज मे जन्म लिया है तबसे वृज की महिमा बढ़ गयी है। प्यारे इस वृज मे आप नंगे पैर घूमे, अजन्मा ने इस वृज मे जन्म लिया हैं, इसलिये इस वृज की कोई तुलना नही, चला लक्ष्मी भी यहां बेलवन मे बैठकर अचला हो गयी हैं, और आपके आश्रय को स्वीकार करना चाहती हैं। हम तुम्हारी प्रिया - हे! हमारे प्रियतम जिन्होने तुम्हारे लिये अपने सम्पूर्ण भाव और प्राण को समर्पित कर दिया है, जो तुम्हारी हो गयी है, तुम्हारे होने के बाद भी ऐसे रात्रि मे वनों मे भटकना पड़ेगा, तो सच बताओ कोई तुम्हारा होना चाहेगा। जरा तुम भी इसका विचार करो, तुम्हे अपना सबकुछ देने के बाद भी उन्हे भटकना पड़े, आप भी विचार करो, हम आपको ढूंढ रही है सरकार, ढूंढने मे समस्या नही है, पर आप प्रगट हो जाओ

श्लोक-2 हे! सुरतरति के नाथ - सुरतनाथ, शरदकालीन सरोवर मे खिले हुये अति सुन्दर बिकसित पुण्डरीक की भी कान्ति को चुरा लेने वाले, हे! नयनाभिराम सरसिज की भी कान्ति को अपहृत करने वाले हे। नयनाभिराम सुन्दर आंखो वाले - प्रभु के नेत्रों मे देखो, तो वह भी देखने लगते है। गोपियाँ कहती हैं, हम तुम्हारी बिना मोल की दासी हैं। यदि शुल्कदासिका भी मानते हैं, तो हमे हमारी Salary (वेतन) दो, आपने हमे बुलाया, रमण किया हम तो आपकी सेवा करना चाहती हैं, किन्तु आपने हमारी सेवा को स्वीकार ही नही किया, आप सदैव व्यस्त रहते हैं। यदि हम आपकी शुल्क दासिका हैं, तो आपने हमारी सेवा को स्वीकार किया हो या नही किन्तु हमे हमारा वेतन दो। क्या शुल्क चाहिये गोपियों को? कृष्ण का दर्शन हो जाये, यही शुल्क चाहिये गोपियों को। गोपियाँ कहती हैं हम आपसे इसलिये शुल्क माँग रहे हैं क्यो कि नौकरी पर आपने रखा है। कौन कहता है तीर से मारने पर ही मृत्यु होती हैं, क्या नेत्रों से मारना वध नही हैं।

श्लोक-3 यमुना जी के विषैले जल से, अघासुर से इन्द्र की वर्षा से, बिजली आँधी के रूप मे आये तृणावर्त से, दावानल अग्नि से, वृषभासुर, व्योमासुर आदि से आपने बार-बार हमारे प्राणो की रक्षा की। पर आज सबसे खतरनाक असुर ने हम पर आक्रमण किया, इतना बड़ा असुर आज से पहले कोई नही आया, ये असुर है आपके वियोग का आपके अन्तर्ध्यान होने का, इसलिये ठाकुर जी आज हमे फिर से बचाओ, जैसे पहले आप बचाते थे। इसबार आपके दर्शन से ही ये असुर मरेगा। प्रभु प्रगट हो, हमारी रक्षा करो।

श्लोक-4 (I) हे प्रिय सखा - आप केवल गोपिका यशोदा के पुत्र नही हो, बल्कि आप समस्त शरीरधारियों के अंतरात्मा के द्रष्टा परमात्मा हो, ब्रह्मा जी की प्रार्थना से आप इस जगत मे, जगत के उद्धार के लिये, सात्वत

यदुवंशियों के घर मे आपका उदय हुआ हैं।

श्लोक 4 (II)
व्यंग भाव - न तो तुम यशोदानन्दन हो, न तुम समस्त प्राणियों के अन्दर बाहर रहते हो, न ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर तुम्हारा अवतार हुआ है, न तुम संसार की रक्षा के लिये अवतरित हुये हो और न ही तुम यदुवंशियो मे अवतीर्ण हुये हो।

हमे लगता है ब्रह्मा ने तुमसे प्रार्थना की है, क्यो कि ब्रह्मा जी जब गाय, बछड़े चुराकर ले गये तो तुमने ब्रह्मा का अपमान किया था। तबसे ब्रह्मा जी बहुत चिढ़ते ब्रजवासियों से, ब्रह्मा ने तुम्हे सौगन्ध दी होगी इन गोपियों की रक्षा मत करना, इनको कष्ट देना, इसलिये तुमने ऐसा किया, गोविन्द ब्रह्मा की प्रार्थना यही है कि गोपियों की रक्षा मत करना, इनको कष्ट देना, तुम उस कुल मे प्रगटे हो, जिसमे कंस आदि बड़े-बड़े असुर हुये है, तो तुमसे कैसे आशा करे तुम प्रेम करोगे, भक्तो के कुल मे जन्मते तो तुम मे स्वाभाविक दयालुता होती।

श्लोक-5 हे यदुवंशियो मे शिरोमणि, हे वृजकुलभूषण, अपने सम्पूर्ण प्रेमियो की अभिलाषाओं को पूर्ण करना आपका मूल वैदिक स्वभाव है, एकबात हमको पता है नाथ, जिसने आपके चरणो की नौका को स्वीकार कर लिया हैं वो निश्चित रुप से इस संसार चक्र से पार हो गया हैं। गोपियाँ कहती है ठाकुर जी आपके चरणो का आश्रय संसार मे रहते हुये भी जीव को भय से मुक्त कर देता है।

आपके कर कमल की, जिसको छत्रछाया प्राप्त हो जाती हैं, सरकार वो निश्चित रुप से अभय हो जाता है गोपी जी, अभय देने वाले ठाकुर जी है, आश्रय देने वाले ठाकुर जी है, सरोवर मे डूबे हुये व्यक्ति को बचाने के लिये जैसे कोई हाथ देता है। ऐसे ही संसार के चक्र मे फंसे हुये हमजीवो को ठाकुर जी हाथ दे रहे हैं वो निकाल कर

सकते हैं। इसलिये कम से कम आपने जिस हाथ से, श्री जी के हाथ को पकड़ा हुआ है, हम उनके आश्रय मे हैं, तो आप कम से कम उस हाथ को हमारे हाथ पर नही सिर पर तो धर सकते हो।

श्लोक-6 हे वीर शिरोमणि! राधारमण व्रजजनो के आर्त का हरण करने वाले, दुःख दूर करने वाले, आपकी जो मन्द मन्द मुस्कनिया हैं। आप मुस्कुराकर के बड़े-बड़े जनो के मान को नष्ट कर देते हो, आपकी मुस्कुराहट सबके मान, अभिमान, काम, क्रोध सबको दूर कर देती हैं।

हे हमारे प्रिय सखा- आप हमसे मत रूठो, आप हमसे नाराज मत हो, हमारे प्रेम को स्वीकार करो, मैं क्या करू मैं क्या करू, हम तो सतत आपके लिये- यही विचार करती हैं। हम आपके चरणो की सूक्ष्म सी दासी हैं। सरकार आप हमे किंकरी रुप मे स्वीकार करें। किंकरी को सर्वोत्तम रस मिलना चाहिये, क्रम की दृष्टि से यदि देखे तो ठाकुर जी प्रिया जी से रस ले, प्रिया जी का रस सखियो को मिले, सखियों का रस मंजरियों को मिले, मंजरियों का रस किंकरियो को मिले, जिसको किंकरी बनकर सर्वोत्तम रस की प्राप्ति होनी चाहिये थी, वह आज वियोग मे डूबी हुयी हैं। इसलिये हे ठाकुरजी हम और कुछ नही चाहती, तुम्हारे चरणो पर हम न्योछावर हैं। बस एक कार्य करो, एकबार अपना प्यारा सा, सांवरा सा, मन्द मन्द मुस्कान से सुशोभित, चन्द्रमुख का दर्शन करा दो।

श्लोक-7(1) जो शरणागत हैं, ऐसे देहियों के जो आपके भक्त हैं उनके पापो का आप कर्षण करने वाले हैं, उनके पापो को मिटाने वाले हैं। गोपियाँ कहती हैं "तृणचर अनुगमू, जब ठाकुर जी, गैया चराने जाते हैं तो, तिनके के ऊपर, शिलाओं के ऊपर- पत्थरो के ऊपर, कंकड़ो के ऊपर चलकर जाते हैं। आपके जो ये चरण कमल हैं, यह लक्ष्मी के निवास स्थल हैं। लक्ष्मी जी भगवान के चरणों की सेवा करती हैं।

आपके चरण कमल कालिय नाग के फणो पर नृत्य करने वाले हैं। हे गोविन्द! हमारे वक्षःस्थल पर ऐसे चरणारविंद धारण करिये। हे गोविन्द! हमारे हृदय मे भी अहंकार रुपी कालियनाग बैठा हुआ है। आपके चरण वक्षःस्थल पर धारण करने से अहंकार रुपी कालिय नाग का दमन हो जायेगा। गोपी गीत के प्रारम्भ के 5 श्लोको मे गोपियाँ कह रही थी दर्शन दो, अब 6 श्लोक मे गोपियाँ कह रही हैं गोविन्द केवल दर्शन से काम नही चलेगा, क्यो कि अब गोपियों ने समझा हृदय मे ज्वाला इतनी तेज हैं, कि केवल दर्शनमात्र से यह ज्वाला शान्त नही होगी। इसलिये गोपियाँ कह रही, हे गोविन्द करोणो चन्द्रमा की शीतलता तो केवल आप मे ही हैं। जब तक आप आकर हमे स्पर्श नही करेगे तब तक हृदय की ज्वाला शान्त नही होगी। गोपियाँ कहती हैं, हमे पता है कृष्ण आपके चरण धारण करके हमे शान्ति मिल जायेगी।

→ किन्तु आपको अशान्ति मिलेगी, क्यो कि हमारा हृदय कठोर है और उसमे ज्वाला जल रही हैं, आपके इतने कोमल चरण है, आपको वेदना होगी। किन्तु हमको याद है नाथ, कालिय नाग के ऊपर आप नाचे थे,

आपने तो कालिय नाग की कठोरता को मिटा दिया था, कालिय नाग के अन्दर जो विष था, वो विष भी समाप्त कर दिया था। गोविन्द हमारे अन्दर भी बहुत विष हैं, वो विष समाप्त हो जाये, हमारे अन्दर जो कठोरता हैं, वह नष्ट हो, हमारा हृदय भी कोमल हो जाये, यह प्रार्थना हैं। गोपियाँ कहती है गोविन्द जब आपके चरण

कमल, हृदय पर धारण होगे, तो हृदय के अन्दर उपस्थित काम रुपी विष समाप्त हो जायेगा।

श्लोक-7 (II) प्रणाम करने से ही जो बड़े-बड़े पापियों के पापो को नष्ट कर देते हैं, सबसे बड़ा पाप क्या है? मनुष्य शरीर पाकर के कृष्ण तुमसे प्रेम न होना, और इससे बड़ा कोई पाप कर सकते हो आप? इससे बड़ा पाप क्या होगा? व्रज मे आकर के कृष्ण पर

न्योछावर होने का मन नही किया। हे ठाकुर जी आपके चरण कमलो पर शरणागत हुये भक्तो के सभी पापो को आप नष्ट कर देते हैं, आपके चरण लक्ष्मी जी के सौन्दर्य, शील, शोभा की परम खान है, आपके चरण श्री का निवास स्थान हैं।

ः भजन ः

राधा रमण कृपा कर, उपकार इतना कर दो
कोमल चरण तिहारे, शीतल चरण तिहारे - २
मस्तक पे मेरे धर दो - - - -

राधा रमण कृपा कर - - - - -

(1) मेरी निगाहों से तुम होना कभी ना ओझल
तेरी याद ही में बीते, मेरी जिंदगी का हर पल
सदा तेरे गीत गाउ - सदा तेरे गीत गाउ
मेरी वाणी मे वो स्वर दो - - -

राधारमण कृपाकर - - -

(2) तुमको जो चाहते हैं, मैं सदा उन्ही को चाहू
जहाँ तेरा नाम ना हो, वहाँ भूल कर ना जाऊ
तेरी राह पे चले जो तेरी राह पे चले जो
मुझे ऐसा हमसफर दो - - -

राधा रमण कृपा कर - -

गोपियाँ कहती - आप तृणचरानुगं है, आपके चरण इतने कोमल है कि लक्ष्मी भी उसे दबाती नही हैं, बल्कि जो उनके नखमणि से तेज निकल रहा है न, उस तेज से आपकी सेवा करती हैं, यदि लक्ष्मी जी आपके चरण दबा दे, तो आपकी कराह निकल जाये, पर व्रज के प्रति आपका भाव देखो, आप नंगे पैर व्रज मे (तृणो के ऊपर) चलते हैं। आपने कालिय नाग के माथे पर अपने चरण पधरा दिये। आप कितने दयालु हैं हमारे हृदय पर भी अपना चरण पधरा दीजिये, और कोई कामना नही है।

श्लोक - 8 - हे ठाकुर जी, हे कमलनयन, आपकी वाणी कितनी मधुर हैं, सुन्दर - सुन्दर वचन, बड़े-बड़े बुद्धिमान, ज्ञानवान भी, आपकी वाणी के सामने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। जब आप बोलते हो तो सरस्वती श्रोता होती हैं। दूसरो के मन को आप जानने वाले है।

हे वीर हमे ज्यादा कुछ नही चाहिये, बस थोड़ा सा अपने अधरामृत का दान दे दो, वो हमारे विरह की ताप के लिये औषधि की तरह है, कही आग लग जाये तो जल की बौछार करनी पड़ती हैं, ऐसे ही ये वंशी के छिद्रो से अपने अधरामृत की बौछार कर दो, तो हृदय मे लग रही आग शान्त हो जायेगी।

अधरामृत - अ का अभिप्राय नही, धरा अर्थात् पृथ्वी जो पृथ्वी का अमृत नही हैं, वह हमे पिलाइए, ये कौन सा अमृत है. गोपिया अगले श्लोक (9) मे बताती है।

श्लोक - 9 हे स्वामी, आपकी कथा अमृत के समान हैं।

आपमे और आपकी कथा मे कोई अन्तर नही है। आपकी कथा भी षड् गुण युक्त है, और आप भी षड् गुण युक्त हो। आपकी कथा विरहपूर्ण जीवनों के लिये शान्ति प्रदायक हैं, और जिसके अन्दर आपसे मिलने की उत्कंठा नही हैं, उसके अन्दर आपके दर्शन की तीव्र इच्छा जगाती हैं। आपकी कथा अमृत है।

ये कथा किसी साधारण पुरुष ने नही गायी हैं, बड़े बड़े ज्ञानी इस कथा का गान करते हैं, स्वयं शंकर जी भी कैलाश पर बैठकर इस कथा का गान करते हैं। कथा के माहात्म्य से कलिकाल के सारे दोष नष्ट हो जाते हैं। आपकी कथा सुनने मात्र से जीव का कल्याण हो जाता हैं, मंगल हो जाता है। आपकी कथा श्री मद्त्व से से युक्त हैं। ये कथा कभी समाप्त होने वाली नही है। ये अमृत हैं, इसमे श्री जी का परम महाभाव उपस्थित हुआ है। इस दुनियाँ मे जो आपकी कथा करता है, उससे बड़ा

दानी आजतक नही हुआ। वो महादानी हैं जो आपकी कथा कहता हैं।

श्लोक-(10)(I) हे मेरे प्राण प्यारे - एक वो भी दिन था, जब आपकी मीठी-मीठी बाते, आपकी हँसी आपकी विभिन्न प्रकार की लीलाये, क्रीड़ाए, गमन, आगमन, विचार, अवस्थान, व्यवहार, आपकी चितवन, आपकी त्रिभंग ललित मुद्राये, आपकी सारी क्रियाएं, वो सब देखकर अत्यन्त आनन्द मे मग्न हो जाती थी। हे कपटी! कैसी बात है जो चीजे देखकर चिन्तन करके हमे रस का संचार होता था आज आपकी वो ही सारी क्रियाएं, क्रीड़ाए याद करके हमे क्षोभ हो रहा है। तुम हमारा दिल चुराकर ले गये वो ही सारी क्रियाएं याद करके हम अपने आपको ठगा सा महसूस कर रही हैं। और हमारे हृदय मे क्षोभ पैदा हो रहा हैं। अब ये बात आपके हाथ मे हैं कि आप इस क्षोभ को फिरसे प्रसन्नता मे बदल दो, प्रगट होकर जो वादे आपने किये थे उनको निभाओ। आपकी एकान्त की हृदयस्पर्शी ठिठोलियां, प्रेमभरी बाते वो सब हमे क्षोभ दे रही है। अब आप प्रगट होकर उस क्षुब्धता को दूर करो।

10 II अर्थ- हे प्रिय! तुम्हारा मधुर हास्य, तुम्हारी प्रेमपूर्ण दृष्टि, जब देखते हो हमे, तो उन नेत्रो से प्रेम बरसता हैं। तुम्हारा मधुर विहार, एकान्त मे हुये तुम्हारे साथ वो संवाद, वो बाते दिल को छूने वाली हैं।

हे कपटी! तुम्हारी वही सब बाते याद करके हमारे मन मे क्षोभ उत्पन्न होता हैं। पहले तो तुम हमारे अन्दर प्रेम जगाते हो, फिर तुम चले जाते हो, हमे अपने वियोग मे तड़पाते हो, ऐसा कपट क्यों करते हो, ये खेल क्यो खेल रहे हो हमारे साथ, तनिक हमारे प्रेम को देखो प्रगट होकर हमारे दुःख को दूर करो।

श्लोक संख्या 11 ⇒ हे हमारे स्वामी, हे नाथ - तुम्हारे चरण कितने कोमल हैं, सुकोमल हैं हमे अच्छी तरह मालूम है आपके चरण की कोमलता से हम अच्छी तरह (पूर्ण रूप से) परिचित हैं, जब आप गैया चराते हुये व्रज मे निकलते थे, तो आपके कमल जैसे सुन्दर चरणो मे कभी कंकड़ चुभ जाते थे, कभी दूर्वा चुभ जाती थी, उसको ध्यान करके, याद करके, हे प्रभु! हमारा मन व्याकुल हो रहा हैं, आपके चरणो मे चुभने वाला कंकड़ भी हमारे मन को पीड़ा देता हैं, जब हमारा प्रिय हमसे दूर चला जाता हैं तो हमे उसकी बाते याद आती हैं। गोपियां कह रही हैं, मानो हे गोविन्द! जब तुम चलो तो हम अपना हृदय बिछा दे, जिससे तुम्हे न काटे चुभे, न कंकड़ चुभे, यदि आप हमारे हृदय के ऊपर चले, तो दो कार्य होंगे, एक तो आपको कोई कष्ट नही होगा, दूसरा हमारे हृदय को भी लाभ मिल जायेगा। लेकिन ऐसा सौभाग्य हमे कहाँ मिलेगा? क्या करे हमारा मन कलिलता को प्राप्त हो रहा हैं। कलिलता क्या हैं? व्याकुलता, हमारे मन मे बहुत सारे विचार आते हैं, हमारा मन ही हमारे साथ झगड़ा कर रहा हैं, मन मे द्वन्द हो रहा है। अर्थात - जिससे कलियुग आता हो, वो कलह, लड़ाई, झगड़ा वही कलिलता हैं। यदि मन मे झगड़ा चलता रहा तो मन मे अधर्म आ जायेगा, मन वश मे होना चाहिये। गोपियां कहती हैं - हे प्यारे! हम आपके प्रेम मे भटक रही हैं, क्या आपका हृदय विगलित नही होता? आपके दर्शन के लिये हम बहुत बेचैन हो जाती थी, आज आप हमे दर्शन दो।

⇒ एक बात विचारणीय यह है कि भगवान व्रज मे नंगे पैर क्यों चलते है?

⇒ भगवान व्रज मे नंगे पैर इसलिये चलते हैं, ताकि व्रज भूमि और गोवर्धन पर कृपा हो जाये, बिना पादुका के व्रज भूमि मे चलकर अपने चरण चिह्नो से व्रजभूमि को अंकित किया भगवान ने और

गोवर्धन जो हरि के दासो मे सर्वश्रेष्ठ हैं उनके ऊपर अपना चरण रखते है। तो ऐसे जो कृष्ण हैं, वो चमड़े के जूते (पादुका) क्यों नही पहनते हैं?
कृष्ण कहते हैं जीवमात्र मेरी सन्तान हैं। अपनी ही सन्तान के चमड़े से बने जूते हम कैसे पहनेगें।

श्लोक संख्या 12→

(I) हे वीर!, हे हमारे प्रियतम, जब आप गौधूलि बेला मे गैयाओं के मध्य सबके साथ वापिस लौटते हैं, उस समय, आपके मुखकमल के ऊपर आते हुये आपके कुंतल अलकावलि वायु के वेग से ऐसे प्रतीत होती जैसे सूर्य ढल रहा है, और कमल एकदम मुरझाने वाला हो, तो मानो हजारो भौरों मे जल्दी-जल्दी कमल के मकरंद को पीने की प्रतिस्पर्धा हो गयी हो, अरे! ये सिमटने वाला हैं, जल्दी ले लो, ऐसे ही गौधूलि बेला मे आपके मुख पर आ रही अलकावलि हमे ऐसी ही प्रतीत हो रही हैं। इतना ही नही, जब गैयाओं के खुर से उड़ी हुई धूली आपके ऊपर पड़ जाती हैं और आपका गौरांग वेश हो जाता हैं। बृज की श्वेत श्वेत धूली आपको आच्छादित कर देती हैं। प्रभु आप गौर समान प्रतीत होते हैं, आपका ये सौन्दर्य देखकर ही हमारे हृदय मे आपको प्राप्त करने की इच्छा प्रकट हो जाती है।

[12 - II] दिनभर तुम्हारे विरह ताप मे हम तपती रहती है और जब संध्या समय तुम वापिस लौट आते हो, आगे-आगे गैया, पीछे-पीछे तुम, तो गायों के खुर से उड़ी हुई धूल से भर जाते हो, वैसे तो श्याम हो तब पांडुरंग हो जाते हो। गायों के पीछे दौड़ते हुये हाथोंमें छड़ी और वंशी लेकर जब चले आते हो, तो उस वक्त तुम्हारे मुखचन्द्र पर काले घुंघराले लम्बे बालो की

अलके नृत्य कर रही होती है, और उस मुखारविंद का दर्शन करके हमारे मन मे तुमसे मिलने की, पाने की कामना जागृति होती हैं। उस कामना को पूर्ण करने के लिये हम तुम्हारे चरणों मे नमस्कार करती हैं क्योंकि जो इन चरणों मे नमस्कार करता है, उसकी कामना पूर्ण हो जाती हैं।

श्लोक संख्या - 13-I प्रणत (शरणागत) जो आपकी शरण मे आ जाये, उसकी सारी मनोकामनाएं आप पूरी करते है। (पद्मजार्चितं) ब्रह्मा जी जिन चरण कमलो की वन्दना करते है। (धरणिमण्डनं) ऐसे आपके चरणकमल पृथ्वी के आभूषण हैं। (ध्येयमापदि) आपके चरण कमलो का जो भी ध्यान करता हैं, उसकी आपत्तियों को नष्ट करते हैं। (चरणपंकजं शन्तमं - च ते) आपके चरण कमल सबका कल्याण करने वाले हैं, और अन्धकार को दूर करने वाले हैं।

(रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्) हे राधा रमण! हमारे वक्षःस्थल पर ऐसे चरणकमलों को विराजमान कर दीजिये। क्यो कि आपके चरण कमलो के आश्रित हो जाते है जो, आप उनकी समस्त आधि (मन की समस्या) व्याधि (शरीर की समस्या) को मिटा देते हैं।

13 - II → हे प्रियतम! समस्त कष्टो और दुःखो को दूर कर देने वाले, आपके चरणारविंद, समस्त शरणागत भक्तो की सम्पूर्ण अभिलाषाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य रखते हैं। सरकार आप मे भी वो सामर्थ्य नही हैं जो सामर्थ्य आपके चरणकमलो मे हैं। आपके चरणकमल इतने अच्छे हैं कि कभी - कभी आप खुद मुख मे डालकर उसका सेवन करते है। उन चरणो का ध्यान मात्र करने से जीव को बड़ी - बड़ी आधि - व्याधि से मुक्ति मिल जाती हैं। हे राधारमण! हमारे वक्षःस्थल पर अपने चरणकमलो को पधरा दीजिये।

श्लोक संख्या - 14 सुरतवर्धनं → यहां पर सुरतवर्धनं का अर्थ काम से नही है। यहाँ पर सुरतवर्धनं का अर्थ प्रेम से हैं। सुन्दरता से भक्ति मे लगे रहना।
शोकनाशनं → दुःख को मिटाने वाला
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् स्वरो से जो युक्त हैं, ऐसी वंशी के द्वारा जिनका निरन्तर चुम्बन किया जा रहा हैं।
इतररागविस्मारणं नृणां → भगवान से अलग जो राग है, संसार का राग, उसको भुलाने वाला हैं, नष्ट करने वाला हैं।

वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् विस्तार करिये, बाँटिए, अपना अधरामृत बांटिए। ये अधरामृत क्या है? पूर्व मे ही स्पष्ट किया जा चुका है। अ अर्थात नहीं धरा अर्थात पृथ्वी जो पृथ्वी का अमृत नही हैं। कथामृत पृथ्वी का अमृत नहीं है। कथामृत ही अधरामृत हैं। कथामृत से ही संसार से राग नष्ट हो सकता है।

अर्थ → शोभा को बढ़ाने वाले, शोक का नाश करने वाले, तुम्हारे अधर, अधर का अमृत (स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्) वेणु जब स्वरित होती है, बज रही होती हैं, तब ऐसा लगता है, जैसे वेणु तुम्हारे अधरो को चूम रही हैं। तुम्हारे वो अधर और उन अधरो का अमृत हमे पिलाओ। भगवद् अनुभूति का जो अलौकिक सुख हैं, उस सुख का दान हमे करो।

श्लोक - 14 II अर्थ - हे ठाकुर जी ये जो आपका अधरामृत हैं, ये ही तो हमे आकर्षित करता हैं। हे वीर शिरोमणि! आपका कथामृत रति का वर्धन करके आपको पाने की इच्छा बढ़ाता है। साथ ही साथ मे शोक को भी नष्ट करता हैं। सबसे सुन्दर बात क्या हैं? इस अधरामृत कथा के आस्वादन का सबसे बड़ा साधन है वंशी का निनाद, जैसे- पात्र मे रंग भरके, सबके ऊपर डाल दिया जाता है,

ऐसे ही आपका ये विग्रह जो रस का भण्डार हैं, वंशी उसमे से सारे रस को खींचकर सबके ऊपर न्योछावर कर दे, सबको रंग मे भीना कर दे।

हे ठाकुर जी जिन्होने भी आपके इस परम रस का रसास्वादन कर लिया हैं, वो स्वतः रूप से अन्याभिला-षिता शून्यता को प्राप्त कर लेगा। जिसने आपका कथा रूपी रस पी लिया हैं, उसे जगत से आसक्ति छोड़नी नही पड़ेगी, स्वतः संसार के प्रति जो आसक्ति हैं वह छूट जायेगी।

श्लोक - 15 हे ठाकुर जी जब आप वन विहार को चले जाते

हो, तो हमसे दिन भर भी आपका वियोग सहना असम्भव हो जाता हैं। हे हमारे प्राण प्यारे - एक क्षण भी हमे (निमि) एक युग के समान आपके बिरह मे प्रतीत होता है। कितनी हमारी दुर्दशा हो रही हैं, देखी हैं आपने, वैसे तो आप दूर चले जाते हो, और जब आप हमारे सामने

खड़े होते हैं, तो हमारी आँखो के ऊपर पलके हैं, जब हम आपका दर्शन करती हैं, तो हमारी पलके गिर जाती हैं इससे हमे बड़ा कष्ट होता हैं, अरे ये विधाता कैसा था, जिसने हमारी आँखो पर पलके बना दी, उसको भी दोष हैं, इतना बिरह चर्म पर है, आप हमे छोड़कर चले गये, अब हमारा क्या होगा सरकार ?

15-II → जब तुम वन मे गाय चराते हो, तो तुम्हारे वियोग

मे हमारा एक, एक छड़ युग के समान बीतता हैं। फिर संध्या के समय जब तुम वापिस लौट आते हो, तब हम तुम्हारा दर्शन करती हैं। तब ये आंखो की पलके जो बीच मे आती हैं न, उतना भी विक्षेप, तुम्हारे दर्शन मे हमसे सहा नही जाता, तब हमको लगता हैं, ब्रह्मा ने ये पलके क्यो बनाई? जड़ हैं ब्रह्मा कुछ आता नही हैं ब्रह्मा को।

श्लोक-16(I) हे हमारे प्राण प्यारे श्यामसुन्दर (यहाँ गोपी परम धर्म का निरुपण कर रही हैं। (सर्व धर्मान्परित्यज्य - मामेकं शरणं व्रज) हम अपने पति, पुत्र, बंधु, बांधव स्वजन, सम्बन्धी, सबको त्यागकर और उनकी आज्ञा, इच्छा का उल्लंघन करके भगवन आपके चरणो मे समर्पित हुई हैं। तुम्हारे पास आई हैं। आप कहो कि मैंने तुम्हारा नाम लेकर के बुलाया हैं, तो हम तुम्हारी प्रत्येक इच्छा, प्रत्येक अभिलाषा, सारे इशारे को समझती है। ((गतिविदस्तवोदगीतमोहिताः) प्रेमी वही हैं जो ठाकुर जी की एक-एक गति समझ ले। इसलिये आपके गीत से, आपके संकेत को हम समझ गई हैं। और हम आपसे मिलने इस प्रकार मध्य रात्रि मे आई हैं।
(कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि) हे प्रिय, कपटी, ये बताओ- क्या कोई इस प्रकार रात्रि मे आई स्त्रियों का परित्याग करता हैं, अपरिचित भी कोई परित्याग नही करता हैं, आप हमे अकेले छोड़ कर चले गये।

16-II - तुम्हारे प्रेम मे पागल होकर, हम अपने पतियों अपने भाईयों, अपने मांता, पिताओ, सगे सम्बन्धियों सब को छोड़कर और उनकी आज्ञा का अल्लंघन करके दौड़कर तुम्हारे पास आ गई, स्त्री होते हुये भी, मर्यादाओं मे जकड़े हुये भी, रात्रि का समय होते हुये भी, कितना बडा साहस किया हमने, और एक तुम हो, कि हमको इतनी रात्रि मे जंगल मे अकेला छोड़कर के चले गये, कितने गैर जिम्मेदार पुरुष हो, कोई दूसरा होता तो कहता डरना नही मैं हू न, और एक तुम हो, हमे अकेला इस वन मे छोड़कर चले गये।

श्लोक संख्या-17(I) हे प्यारे एकान्त मे जब हम लोग बैठते, मिलन के वक्त, आप कितनी प्रेम भाव को जगाने

वाली वार्तालाप करते हैं, जिससे हम आपकी ओर आकर्षित हो जाये, जब आप अचानक हमारी ओर देखकर हँस देते हैं, तो हमारे हृदय मे तरंगे उठ जाती हैं। ये तुम्हारा विशाल वक्षःस्थल श्री का निवास स्थान है, उसे देखकर आपको प्राप्त करने की हमारी अभिलाषा और भी अत्यधिक बढ़ती है। हे ठाकुर जी आप एकबार हमे हृदय से लगा लो, तो हमे भी ये सुख प्राप्त हो जाये।

श्लोक -17-II- हमने सुना था कामदेव के पांच बाण होते हैं लेकिन हमे पता नही था, वो कैसे होते हैं? (रहसि -संविदं) एकान्त मे हमारी बाते होती थी। (हृच्छयोदयं) कैसे हृदय को उल्लास से भर देती थी, कैसी बात है, उस समय बात करते समय, आपके चेहरे पर मुस्कान (प्रेमवीक्षणम्) होती थी। किसी को भी प्रभावित करने के लिये, तीन चीजे चाहिये। (1) Smile (2) Body language (3) Attitude यहाँ पर गोपियाँ यही कह रही हैं। (प्रहसितानन्नं) आपका जो मुस्कान भरा चेहरा था। (प्रेमवीक्षणम्) आँखो मे प्रेम था, हमारे लिये, इससे क्या हुआ? आपने हमारे हृदय को चुरा लिया, संसार मे मन चुराया जाता है, भक्ति मे हृदय चुराया जाता है। (बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते) हे प्रभो! जिनका वक्षःस्थल चौड़ा है। आपका हृदय लक्ष्मी का निवास स्थल है। आपके स्वरूप को देखकर (मुहुरति -स्पृहा मुह्यते मनः) हमे बार-बार प्रेम की इच्छा हो रही है।

गोपियाँ कहती हैं-
कामदेव के पाँच बाणो की तरह तुमने मेरे हृदय को चुरा लिया है, कामदेव के बाण चुराते भी है, जलाते भी हैं। ये पांच बाण कौन से है श्री कृष्ण के ?

(1) रहसि संविदं → एकान्त मे प्रेम की बाते
(2) हृच्छयोदयं → हृदय मे प्रेम बढ़ाता हैं
(3) प्रहसितानन → मुस्कान भरा चेहरा
(4) प्रेमवीक्षणम् → प्रेम से देखना
(5) बृहदुरः श्रियो धाम → चौड़ा वक्षःस्थल

इन पाँचो को बार-बार देखने से हमारे हृदय मे (स्पृहा) इच्छा हो रही हैं। और इतनी हो रही है कि बार-बार हम Unconscious (अचेत) हो रही हैं। चेतना आने पर फिर याद आ जाता हैं। इससे अच्छा क्यों न अपना दर्शन करा दो। हम जानती हैं, जब तेरा दर्शन करेगी तो भी Unconscious इससे भी अधिक घातक होने वाली हैं। जो इस समय कष्ट हो रहा हैं, वो तेरा दर्शन करके और भी बढ़ेगा, क्यो कि कभी न कभी तू हमे छोड़कर जायेगा।

सुख लेते हुये कभी भी आप पूरा सुख नही ले सकते। पूर्ण सुख चाहिये, तो वर्तमान मे जिये।

श्लोक-18 → (व्रजवनौकसां) - व्रज, वृन्दावन की रक्षा के लिये ही आपका अवतार हुआ हैं। (व्यक्तिरङ्ग ते) आप अभिव्यक्त हो रहे हो। (वृजिनहन्त्र्यलं) बड़े-बड़े असुरो का उद्धार करने वाले (विश्वमङ्गलम्) विश्व का मंगल करने वाले है आप। हे गोविन्द, अपने हट को छोड़ो (नः) हमारे अन्दर (त्वत्स्पृहा) तुम्हारे लिये जो इच्छा हो रही हैं, व्याकुलता हो रही हैं। (आत्मनां) अन्तःकरण मे उसे समझो। (स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्) जो स्वजनो को त्यागकर आई हैं, ऐसी गोपियों को मत त्यागो,

नही तो कलंक लग जायेगा तुम्हारे ऊपर, हम इसलिये व्याकुल नही है कि तुम हमे दर्शन नही दे रहे हो, हम इसलिये व्याकुल है कि तुम्हारे ऊपर कलंक नही लग जाये, लोग कल को ये न कहे कृष्ण बड़ा निष्ठुर था। कृष्ण बड़ा कठोर था। इसलिये आ जाओ, गोपियां कहती है, हे कृष्ण! सबके लिये तुम्हारे पास समय है। असुरो को मारा, ब्रजवासियों की रक्षा की ब्रजवासियों को अपने दर्शन के द्वारा खूब कृतार्थ किया। चाहे यशोदा हो, चाहे नन्द हो, खूब लीलायें की, घर-घर गये, माखन चोरी की, वन गये, सखाओ के लिये गोचारण किया, यमुना को पवित्र किया, गिरिराज को धारण किया, इन्द्र पर भी कृपा की है। एक बात बताओ तुम्हारी ये कंजूसता की मुट्ठी है, वो हमारे लिये ही है क्या? हमारे लिये तुम्हारा हाथ क्यों बंध जाता है, सबके लिये दोनो हाथो से भर-भर के दे रहे हो, हमारे लिये मुट्ठी बाँध लेते हो, अरे कृष्ण हमारा हृदय केवल तुम्हारी लालसा से भरा है, समझ लेना जितनी अनन्यता हमारे जीवन मे, किसी और के लिये नही है। हमने आपके लिये प्रार्थना की है, प्रार्थना से ही तो आप निर्गुण से सगुण बने हो। अब हमारी प्रार्थना से प्रगट हो जाओ, क्योंकि आपका स्वरूप देखना ही हमारे इस प्रेम रोग की औषधि हैं। अब और कोई साधन नही हैं।

श्लोक संख्या - 19 → भागवत की आत्मा गोपी गीत, और गोपी गीत की आत्मा अन्तिम श्लोक, अन्तिम श्लोक की आत्मा अन्तिम शब्द हैं। गोपी गीत के उपसंहार मे श्री राधा रानी कह रही हैं।

हे प्रभु! (यत्ते) - जो आप (सुजातचरणाम्बुरुहं - स्तनेषु) हे सुजात! - जो अच्छी जाति या कुल मे उत्पन्न हुये हैं, हे गोविन्द आपके चरण इतने कोमल है। (चरणाम्बुरुहं) अर्थात कमल, कमल के समान कोमल है आपके चरण कमल, (स्तनेषु भीताः) ऐसे आपके कोमल चरण हमे अपने वक्षःस्थल पर भी रखने मे डर लग रहा है। क्यो डर रही है? क्यों कि हमारा हृदय कठोर है, कही आपके चरणो मे कष्ट नही हो जाये, (तेनाटवीमटसि तद् व्यथते) ऐसे ही चरणो से आप इस वन से उस वन मे जा रहे हैं। (व्यथतेन) उससे हमारा हृदय व्याकुल हो रहा हैं। (कूर्पादिभिर्भ्रमतिधी) हमारी बुद्धि भ्रमित हो रही है। क्यों हो रही है? हे गोविन्द आपको दर्शन नही देना तो मत दीजिये, अपने चरण कमलो की तो चिन्ता करो, आपके चरण इतने कोमल हैं, कि हम अपने वक्षःस्थल पर भी धारण नही करती हैं, हमारे हृदय से भी अधिक कठोर भूमि हैं वन-वन मे आप भ्रमण कर रहे हैं, मार्ग मे कंकड़ हैं, कांटे हैं, रात्रि का समय हैं, अगर कही कष्ट हो गया, तो हमे वेदना हो जायेगी।

हमे वेदना इसलिये नही हो रही कि आप हमे दर्शन नही दे रहे है, हमे वेदना इसलिये हो रही हैं, कही आपको कष्ट तो नही हो रहा हैं, राधा रानी गोपियों से कहती हैं, हम और आगे नहीं जायेगी कृष्ण के पीछे हम जितना जायेगी, कृष्ण उतना ही और हमसे दूर चले जायेगे, आगे निकल जायेगे, इससे कृष्ण के चरणो मे और अधिक कष्ट होगा। कृष्ण को यदि एक भी कांटा चुभा, तो उसके दोषी हम हो जायेगे, नारद जी भक्ति सूत्र मे कहते हैं - (तत् सुख - सुखित्वं) ही

प्रेम है प्रेम और काम मे क्या अन्तर है? काम मे हमे अपनी सन्तुष्टि चाहिये और प्रेम मे प्रियतम की सन्तुष्टि चाहिये प्रेम वह है, जहाँ हम अपने लिये नही सोचते, हमारे प्रियतम को किसमे सुख मिलेगा, हम वो कर्म करते है। चाहे उसमे हमे कष्ट मिले। हम समझ गयी, आप सही थे

→ हम इतने दिन तक आपकी भावना नही समझ पायी 18 श्लोक कहने के बाद अन्तिम श्लोक मे स्वयं राधा रानी कह रही हैं, गोपियों सच्चाई तो यह हैं कृष्ण की भावना को हमने समझा नही हैं मुझे लगता है दर्शन देने मे आपको कोई कष्ट हो रहा है, इसलिये आप दर्शन देना नही चाह रहे हैं क्या आप आयेगे? दर्शन देगे? सन्तुष्ट करेगे? हजारो गोपियां हैं, किस किस को दर्शन देगे, सन्तुष्ट करेगे, दर्शन दे चाहे न दे, लेकिन अब वन-वन मे मत जाओ, तेजी से मत चलो।

→ धीरे-धीरे लौटकर अपने घर जाओ, कमल से भी सुकोमल चरण हैं, जब कंकड़ पर पड़ते होगे, वेदना हो जाती होगी। हृदय कम्पायमान हो रहा हैं, हे गोविन्द अब तुम पूछोगे, हमारे प्राण क्यों नही निकल रहे, तो इसका कारण भी हम बता देती हैं, हमारे प्राण हमारे पास हैं, ही नही। (भवदायुषां नः) हमारे प्राण तो आप हैं। इसलिये प्राण निकल नही रहे हैं। हे गोविन्द चिन्ता मत करो, अब हम तुम्हे कष्ट नही देगीं। वेदना नही देगी, लेकिन अपने चरणो को अगर हमारे हृदय पर धारण कर दो, तभी हमारा हृदय का रोग नष्ट होगा। हमारे हृदय के रोग को नष्ट कर दो सरकार

गोपी गीत का सार - गोपी प्रेम से बढ़कर जगत मे कुछ नही हैं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध हो गई हैं, इसलिये उद्धव जैसा ज्ञानी भी गोपियों को प्रणाम करता हैं।

बड़े-बड़े भक्त चाहते है। हे ठाकुर जी हमे गोपी भाव मिले, गोपियां अपने वक्षःस्थल पर कृष्ण के चरण इसलिये धारण कर रही हैं, ताकि कृष्ण को सुख मिले। 18 श्लोकों मे गोपियों ने अपनी चिन्ता की अन्तिम श्लोक मे राधारानी कृष्ण की चिन्ता करती है। कृष्ण के सुख के लिये जब चिन्तन करने लगी तब तो ठाकुर जी को आना ही था।

श्लोक- इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा।
रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः ॥

⇒ कृष्ण दर्शन की लालसा से, कृष्ण विरह मे गोपियाँ आपस मे प्रलाप (पागलों जैसी बात करना) करने लगी। प्यारे श्यामसुन्दर दर्शन दे, इसी इच्छा से वे करुणाजनक सुमधुर स्वर से फूट-फूट कर रोने लगी।

शुकदेव जी कहते है- रुरुदुः सुस्वरं राजन् —

गोपियाँ बड़े स्वर मे रो रही है, इनका रोना कितना सुन्दर हैं। किसी ने पूछा रोना भी सुन्दर होता हैं? तो उत्तर मिला हाँ सुन्दर हैं। गोपियाँ रो तो रही हैं, लेकिन बेटा के लिये नही रो रही हैं, बेटी के लिये नही रो रही हैं, धन के लिये नही रो रही हैं, रोने के लिये तो सारी दुनियां रोती हैं, हम और आप भी रोते है, रात-दिन रोते हैं, कितने तो ऐसे रोते हैं उनका रोना पता ही नही चल पाता, भीतर ही भीतर रोते हैं। लेकिन किसके लिये रोते? संसार के लिये, जो संसार के लिये रोता हैं, उसका रोना तो बेकार हैं, लेकिन जो गोविन्द के लिये रोता है, उसका रोना भी कितना सुन्दर है। गोपियाँ कृष्ण दर्शन की लालसा से रो रही हैं। इसलिये उनका रोना भी सुन्दर हैं

श्लोक:- तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥

⇒ भगवान गोपियों के अश्रु पोछनें के लिये अपना पीताम्बर लेकर के प्रगट हो गये। प्यारे श्यामसुन्दर को देखकर सभी गोपियाँ प्रसन्न हो गयी। जैसे प्राणहीन शरीर मे पुनः प्राणों का संचार होने पर नवीन स्फूर्ति आ जाती हैं ऐसे ही वे सब गोपियाँ एक साथ उठकर खड़ी हो गयी। गोपियों ने भगवान को पकड़ लिया, पकड़ कर के एकान्त मे लेकर के गयी, किसी ने हाथ पकड़ा, किसी ने चरण पकड़ा, किसी ने पीताम्बर को पकड़ लिया, किसी ने पीठ पर हाथ रखा, सबने सोचा कृष्ण पुनः कही गायब न हो जाये, इसलिये गोपियों ने भगवान को एकान्त मे ले जाकर बैठाया, गोपियों ने भगवान से अनेक प्रश्न किये, उन प्रश्नों का भगवान ने उत्तर दिया हैं। गोपियों का अभिमान दूर हो गया, उनका मान दूर हो गया। भगवान पुनः उन गोपियों के साथ (लीला) रास करने लगे।

श्लोक- कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया ॥

⇒ जितनी गोपियाँ थी उतने रूप भगवान ने धारण कर लिये, भगवान आत्माराम, पूर्णकाम, परम निष्काम, उन गोपियों के साथ रमण करने लगे।

⇒ इस रासलीला का दर्शन करने के लिये सभी देवता अपनी, अपनी पत्नियों के साथ पधारे आकाश मे शत- शत विमानों की भीड़ लगा गयी।

⇒ जिस समय भगवान गोपियों के साथ रास कर

रहे थे, उसी समय कामदेव श्री कृष्ण को परास्त करने के लिये अपने बाणो को चलाता हैं। कामदेव विचार करते हैं, कृष्ण गोपियों के हाथो मे हाथ पकड़कर नृत्य कर रहे हैं, अभी कुछ देर मे ही कृष्ण के अन्दर काम भावना जागृत हो जायेगी।

⇒ किन्तु जैसे ही कामदेव ने भगवान श्री कृष्ण को देखा, देखते ही उनकी सारी शक्ति क्षीण हो गयी, कामदेव परास्त होकर चले गये। यही कामदेव श्रीकृष्ण के पुत्र बने जिन्हे हम प्रद्युम्न के नाम से जानते हैं।

इस रासलीला मे काम का कोई स्पर्श नहीं, काम का अगर कोई यहां पर अंश होता तो काम के शत्रु भगवान् शंकर और पार्बती जी इस रासलीला मे क्यों आते ?

⇒ भगवान शंकर भी माता पार्वती के साथ रासलीला का दर्शन करने आये।

⇒ त्रेता युग मे जब भगवान दशरथ पुत्र राम बनकर के आये उस समय शंकर जी राम जी का दर्शन करने आये, जब माता पार्वती को यह ज्ञात हुआ कि शंकर जी राम जी का दर्शन करने जा रहे हैं तो माता पार्वती ने शंकर जी से निवेदन किया स्वामी मुझे भी अपने साथ ले चलिये, किन्तु शंकर जी ने माता पार्वती की एक न सुनी, और चोरी से पार्वती जी को बिना बताये काकभुशुण्डि जी के साथ दर्शन करने चले गये।

चौ० काकभुसुंडि संग हम दोऊ ।

मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥

⇒ जब माता पार्वती को यह ज्ञात हुआ कि शंकर जी अकेले दर्शन करने चले गये, तो उन्हे बहुत दुःख हुआ

उसी दिन माता पार्वती ने सौगन्ध खा ली, द्वापर युग मे जब भगवान अवतार लेकर आयेगे, तो हम अकेली भगवान के लीला का दर्शन करने जायेगी, शंकर जी को साथ नही ले जायेगी।

⇒ किसने मुझसे क्या कहा था, क्या किया था, माताएं मरते दम तक नहीं भूलती है।

⇒ जब द्वापर युग आया तो भगवान श्री कृष्ण की रास-लीला का दर्शन करने के लिये पार्वती जी नित्यप्रति रात्रि के 10 बजे शंकर जी को बिना बताये चली जाये। एक दिन हुआ, दो दिन हुआ, शंकर जी सुबह उठे तो देखे, पार्वती जी तो गायब, न कोई स्नान के बाद वस्त्र देने वाला, न कोई नास्ता देने वाला, शंकर जी तो परेशान हो गये।

⇒ शंकर जी ने गणों से पूछा, ये हमारी श्रीमती जी कहाँ चली गयी? कही देखा है क्या? गणो ने कहा हमको क्या पता कहाँ गयी, वो तो नित्य रात्रि को 10 बजे जाती हैं, और सुबह 10 बजे आती हैं, शंकर जी ने कहा तुम लोग गेट पर क्यों बैठते हो रोक, टोक करनी चाहिये, गणो ने कहा पत्नी आप की, हम क्यों रोकटोक करे। हम तो यहाँ नौकरी करते हैं, और हमको तो यही बताया गया कि अगर नौकरी पर रहना है, तो मालकिन की बात सदैव मानना, भले एक बार मालिक की बात अनसुनी कर देना। अगर मालकिन की बात टाली तो नौकरी से निकाल ही देगी, फिर चाहे रोओ या गिड़गिड़ाओ, इसलिये हम कुछ मतलब नही, देवी जी कहीं जाये, कहीं से भी आये।

⇒ अगले दिन शंकर जी मुख्यद्वार पर बैठ गये, पार्वती जी रास का दर्शन करके आ रही थी, शंकर जी ने रोक लिया, और पूछा कहाँ से आ रही हो? देवी जी ने कहा आपको क्या मतलब? हम कही भी जाये, कही से भी आये।

शंकर जी ने कहा रात्रि को रोज कहाँ गायब हो जाती हो ?

पार्वती जी ने कहा क्या आपको मेरे आचरण पर सन्देह हैं।

शंकर जी ने कहा सन्देह तो नही है, लेकिन तुम नित्य रात्रि को गायब हो जाती हो, कहाँ जाती हो, ये तो बताओ ?

माता पार्वती ने कहा, हम वृन्दावन जाती हैं। शंकर जी ने कहा वृन्दावन, वहाँ क्या हैं?

माता बोली भगवान निधिवन मे रास करते हैं, हम रास का दर्शन करने जाती हैं।

शंकर जी बोले भगवान का रास देखने अकेले-अकेले चली जाती हो, हमको क्यों नही ले जाती हो?

माता बोली उस कौवा के साथ जाओ, शंकर जी बोले देवी तुम भी, अभी तक पुरानी बात पकड़ कर बैठी हो, माफ कर दो अब, हमे भी महारास के दर्शन कराओ। देवी जी बोली महारास मे किसी पुरुष का प्रवेश नही है, इसलिये आप नही जा सकते हो, पुरुष केवल एक श्री कृष्ण हैं, बाकि सब गोपियाँ हैं, मै आपको कैसे ले चलू रास मे? शंकर जी ने कहा, हमको गोपी बना लो, हम भी साड़ी पहनकर चले चलेगे, पार्वती जी ने शंकर जी को ऊपर से नीचे तक देखा, गोपा का गोपी कैसे बनाऊ इन्हे ?

ः भजनः

एकदिन वो भोले भंडारी
बनके ब्रज की नारी, वृन्दावन आ गये - 2

पार्वती जी मना के हारी
ना माने त्रिपुरारी
वृन्दावन आ गये - - -

(1) गौरा से बोले बाबा मै भी चलूगा तेरे साथ मे-2
राधा संग श्याम नाँचे, मै भी नाँचूगा तेरे साथ मे 2
रास रचेगा ब्रज मे भारी, हमें दिखाओ प्यारी -
वृन्दावन आ गये - - -

(2) बाबा से बोली गौरा कैसे ले जाऊ तुम्हे रास मे-2
कृष्ण ने शिवा वहाँ कोई, पुरुष न जाये उस रास मे-2
हँसी करेगी ब्रज की नारी, मानो बात हमारी-2
वृन्दावन आ गये - - -

* शंकर जी भगवान के महारास का दर्शन करना चाहते हैं, रास मे किसी भी पुरुष का प्रवेश वर्जित हैं। मन्दिर मे भीड़ ज्यादा हो, आप लोग लाइन मे लगने को तैयार नही, शंकर जी रास का दर्शन करने के लिये नर से नारी बनने को तैयार हैं। शंकर जी ने पार्वती जी से कहा जो वेश बनाना हो बना दो, बस किसी प्रकार से महारास का दर्शन करादो। पार्वती जी ने बाबा से कहा, स्वामी कोशिश करती हू। पार्वती जी ने दो गण बुलाये और कहा जितने भी ब्यूटीपार्लर वाले हैं सभी को पकड़ लाओ, गण (भूत) गये और जितने भी ब्यूटीपार्लर वाले थे सभी को पकड़ लाये, जब ब्यूटीपार्लर वाले पार्वती जी के सामने पहुंचे तो डरने लगे, कहने लगे माता हमने कुछ गड़बड़ नही किया, हमे यहां पकड़कर के क्यो लाया गया।

पार्वती जी ने कहा डरो मत, एक छोटा सा कार्य करना है, इसलिये तुमलोगो को यहां बुलवाया हैं।

⇒ ब्यूटीपार्लर वालो ने पूछा क्या कार्य करना हैं?

⇒ मैया बोली ये जो हमारे स्वामी हैं, इनको गोपी बनाना हैं। ब्यूटीपार्लर वालो ने भोले बाबा को ऊपर से नीचे तक देखा और बोले, मैया माफ करना, ये गोपा का गोपी हम नही बना सकते। भूत, प्रेतो ने ब्यूटीपार्लर वालो से कहा बनाते हो या नही?

⇒ ब्यूटीपार्लर वाले दुविधा मे फस गये, नही बनाते तो मार पड़ेगी, और बनाये तो बनाये कैसे?

⇒ ब्यूटीपार्लर वालो ने कहा, मैया (i will try) कोशिश करके देखते हैं। मैया ने कहा कोशिश से क्या काम नही हो सकता, कोशिश करो, ब्यूटीपार्लर वालो ने कहा मैया कुछ सामान चाहिए? मैया ने पूछा क्या सामान चाहियें?

⇒ ब्यूटीपार्लर वाले बोले पहले एक ट्रक रेगमाल मगाओं भोले बाबा कि घिसाई होगी, क्योंकि इतनी राख जमी हैं इनके ऊपर, परतो की परत, पहले उसे साफ करना होगा। एक ट्रक रेगमाल आया, शंकर जी की घिसाई की गई, कुंटलो भस्म निकली शरीर से, किसी ने रेगमाल ज्यादा तेज से चला दिया, तो कही, कही शरीर मे खरोंचें (छिल) पड़ गये, अब तो शंकरजीऔर बुरे लगने लगे, चितकबरे से लगने लगे, अब क्या करे? तब ब्यूटीपार्लर वालो ने कहा मैया एक कार्य करिये, दो ड्रम पाउडर और मगा दीजिये, अब दो ड्रम पाउडर मगाया, पूरे शरीर मे लगाया गया, जहाँ गड्ढे थे, वो भर गये, किन्तु शरीर मे चमक बिल्कुल नही, तब ब्यूटीपार्लर वालो ने कहा मैया एक ड्रम क्रीम और मंगा दीजिये, एक ड्रम क्रीम आई, जब क्रीम लगाई गई तब शरीर पर चमक आई। अब जटाये, इतनी बड़ी-बड़ी जटायें, कंघे मगाये गये, जिस कंघे को लगायें

वही टूट जाये, कंघा काम नही कर रहा, कैंची से काटे तो कैंची नही काम कर रही, मैया बोली ऐसा करो इसका जूड़ा बना दो। जूड़ा बनाने के लिये बीच मे डोनट लगाया जाता, अब ये डोनट कहा से आये? तब ब्यूटी पार्लर वालो ने एक पत्थर को घिस कर जूड़े मे लगाकर जूड़ा बनाया, एक गण को जयपुर भेजकर 80 गज का लहंगा मंगाया, सबने मिलकर बाबा को लहंगा पहनाया, अब चिलम पीते-पीते काले-काले होंठ, ऐसे होंठ तो महिला के होते ही नही हैं, कौन से रंग की लिपस्टिक लगाये, न लाल काम करे, न गुलाबी काम करे, अन्त मे ब्यूटीपार्लर वालो ने डार्क चॉकलेट रंग की लिपस्टिक लगाई, वह मैच कर गयी, काजल लगाया,

= अब ये जो सर्प थे, शरीर पर रेंग रहे थे, इधर से उधर, गणो ने कहा माता जी जब वहां पर गीत-संगीत बजेगा तो ये सर्प फन-फनायेगे, और कितना भी करो ये पकड़े जायेगें, पार्वती जी ने कहा ये सर्प उतारो स्वामी, सर्प रोने लगे, कहने लगे मॉं हम सदैव साथ रहते हैं, शादी मे साथ थे, हमको भी साथ ले चलो, तब ब्यूटीपार्लर वालो ने सर्पो को स्तनो की जगह चोली मे रख दिया, और कहा शान्त बैठे रहना, वहां पहुंच कर प्रभु का रास देखने के लिये बाहर मत आ जाना, सर्पो ने कहा मैया चिन्ता मत करो हम शान्त बैठे रहेगें, अन्त मे बाबा की चुनरी उढ़ाई, घूंघट कर दिया, पार्वती जी ने कहा देखो स्वामी वहां पहुचकर ज्यादा तूफान मत मचाना, जैसे सब नाचे, वैसे नाचना, और कोई कितना भी कहे, तुम घूंघट उठाओ, घूंघट उठाओ, घूंघट मत उठाना, भोले बाबा बोले ठीक हैं, मैं घूंघट नही उठाऊंगा, मैया बोली उठाऊंगा नही उठाऊंगी बोलो, अभी से गा की जगह गी बोलने का अभ्यास करो, नही तो पकड़े जाओगे, शंकर जी बोले ठीक घूंघट नही उठाऊंगी, ले तो चलो, शंकर जी ने पहले ही कहा था,

ऐसा बना दे मुझको, कोई न जाने इस राज को -2

अगर वहां कोई तुमसे पूछे ये कौन हैं? तो कह देना -

मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना ब्रजराज को -2

अब भोले बाबा गोपी बनकर के चले -

लगा के बिंदिया, पहन के साड़ी, चाल चले मतवारी -2
वृन्दावन आ गये हैं, वृन्दावन आ गये - ——

एक दिन वो भोले भंडारी, बनके ब्रज की नारी
वृन्दावन आ गये - - - - - - - -

भोले बाबा, लम्बे, चौड़े, बड़े-बड़े पैर बन गये गोपी चाल, चले मर्दों वाली, मैया ने कहा गोपी ऐसे नही चलती, थोड़ा मटक-मटक कर चल कर दिखाओ,

- भोले बाबा थोड़ा मटक-मटक कर चलना प्रारम्भ किये, मैया बोली अब लग रहे हो, गोपी - मैया और बाबा दोनो कैलाश से चलकर वृन्दावन आ गये, जब बाबा निधिवन के पास पहुंचे, तो मैया ने देखा बाबा के चेहरे पर बहुत पसीना आ रहा हैं, और सारा मेकअप धुल गया, (यह घटना गोपीश्वर महादेव मन्दिर के पास की हैं)

उस समय पर वाटर प्रूफ मेकअप नही चलता था, मैया विचार करने लगी अब करे तो क्या करे, तब मैया ने अपने हाथ मे जो पर्स लटका रखा था, उसको उतारा, माताए कही भी जाये, साथ मे कुछ ले जाये न ले जाये, पर हाथ वाला पर्स अवश्य ले जाती हैं, और उस पर्स मे कुछ हो न हो किन्तु छोटा, मोटा मेकअप का सामान अवश्य होता है। मैया ने अपना पर्स उतारा और उसमे से पाउडर, क्रीम, लिपस्टिक निकालकर बाबा का मेकअप सही किया पुनः घूंघट डाला और निधिवन मे प्रवेश किया समस्त देवता आकाश मे उपस्थित हो गये महारास का दर्शन करने के लिये आ गये।

अष्ट सखियों के साथ श्री जी का प्रवेश हो गया, जैसे ही भगवान का प्रवेश हुआ, रास का प्रारम्भ हुआ, शंकर जी को तो नृत्य का अभ्यास नही था, शंकर जी तो धम, धमा, धम करने लगे, अन्य गोपी जो नृत्य कर रही थी उनकी ताल बिगड़ गयी, सबने नृत्य करना बन्द कर दिया।

भगवान ने कहा- राधा जी ऐसा लगता हैं कोई नई गोपी आ गई है आज, उसने ताल, स्वर सब बिगाड़ दिया, देखो कौन हैं? दूर खड़े थे शंकर जी घूंघट मे संकोच मे, अच्छा जो नया- नया होता है, वह थोड़ा संकोच मे होता हैं। भगवान ने कहा लगता है, तो जो गोपी दूर खड़ी हैं, वह नई आई हैं, जरा पूछो तो सही, राधा जी ने कहा आप ही जाओ और पूछ के आओ।

जैसे ही ठाकुर जी शंकर जी की ओर बढ़े, पार्वती जी दौड़कर शंकर जी के पास गयी और बोली, चाहे कुछ भी हो जाये पर घूंघट मत उठाना। जब भगवान श्री कृष्ण शंकर जी के समीप आ गये तब शंकर जी ने अपना घूंघट और नीचे कर लिया, भगवान श्री कृष्ण ने शंकर जी से कहा लगता है गोपी तुम आज पहली बार रास मे आई हो, जरा घूंघट तो ऊपर करना, शंकर जी ने घूंघट और नीचे कर लिया, ठाकुर जी ने फिर कहा, सखी जरा घूंघट तो ऊपर करना, शंकर जी ने और नीचे घूंघट कर लिया,

तीसरी बार जब ठाकुर जी ने कहा- तो शंकर जी ने दोनो हाथों से घूंघट पकड़कर बोला, नही उठाऊंगी नही उठाऊंगी, मेरी घरवाली ने मना किया हैं, चाहे कुछ भी हो जाये घूंघट मत उठाना। ठाकुर जी ने कहा तुम किसी की घरवाली हो, या तुम्हारी घरवाली हैं क्या चक्कर हैं?

मोहन ने देखा जब, जान गये सब बात रे-
ऐसी बजाई मुरलिया, सुध-बुध भूले भोलेनाथ रे-

सिर से सरक गयी जब साड़ी मुस्काये गिरधारी
वृन्दावन आ गये हैं, वृन्दावन आ गये हैं - -

एक दिन वो भोले भंड़ारी - - - - -

जैसेहीघूंघट हटा, सभी देवता जय-हो, जय-हो शंकर भगवान की, पार्वती मैया की कहने लगे, शंकर जी ने अपना ताण्डव नृत्य प्रारम्भ कर दिया।

⇒ ठाकुर जी ने कहा भोलेनाथ आप ताण्डव के कलाकार है, और ये लास्य नृत्य है इसलिये ये नृत्य आपके बस की बात नही है अब आप तो बस बैठकर के देखो ठाकुर जी ने भगवान शंकर को रासमण्ड़ल मे एक जगह बैठा दिया, और घूंघट कर दिया, फिर घूंघट उठाकर के बोले, बहुत अच्छी लग रही हो, सखी जैसी, अब तो आप यही बैठो, भगवान श्री कृष्ण ने बैठा दिया इसलिये आज भी भोलेनाथ उसी रूप मे वृन्दावन मे गोपी [illegible] बनकर के बैठे हैं। जिन्हे हम और आप गोपीश्वर महादेव के नाम से जानते हैं।

रासलीला का प्रसंग सुनकर के परीक्षित जी के मन मे सन्देह हो गया, उन्होने शुकदेव जी से प्रश्न किया -

श्लोक- संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च।

अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ॥

⇒ राजा परीक्षित ने कहा भगवान तो धर्म की स्थापना के लिये अवतार लिये थे, और भगवान ने ये कौन सी लीला की।

⇒ प्रतीपमाचरद् ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ॥

दूसरे की स्त्रियो के साथ नाचना, गाना, कूदना, खेल खेलना, ये कौन सा धर्म है?

शुकदेव जी कहते है- राजन तुमने कथा ठीक से नही सुनी क्या? मैने पहले ही बता दिया था, कोई गोपी शरीर से रासमण्डल मे गई ही नही, उनका शरीर तो उनके घर मे ही रखा था। रासपंचाध्यायी के अन्त मे शुकदेव जी कहते है,

श्लोक- नासूयन् खलु कृष्णाय मोहितास्तस्य मायया।
मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रजौकसः

⇒ उन व्रज के ग्वाल बालो ने देखा जिस रात्रि मे भगवान ने रासलीला की उस रात्रि मे उनके घर की स्त्रिया उनके घर मे ही थी, इसलिये किसी ने कृष्ण की निंदा नही की। इसलिये जिसकी पत्नी, जिसकी बेटी रासलीला मे गयी, उसने निंदा नही की तो तुमको क्या अधिकार है, निंदा करने का?

⇒ भगवान अपनी माया के द्वारा ये सारी लीला करते है, गोपियो का शरीर तो घर मे ही रखा था। शरीर से ही काम का सम्बन्ध है, आत्मा से काम का सम्बन्ध नही हैं। ये (कामविजय प्रख्यापनार्थ सेयं रासलीला) काम विजय लीला हैं। शरीर मे रहते हुये काम पर विजयपाना बहुत कठिन है, और शरीर के भाव से देहाशक्ति से ऊपर उठ जाने पर ही काम पर विजय प्राप्त होती हैं। इसलिये भगवान ने गोपियों की देहाशक्ति को मिटाकर उनके पांचभौतिक शरीर को उनके घर मे ही छोड़ दिया, और उन्हे दिव्य शरीर प्रदान करके, भगवान ये लीला की,

⇒ अन्त मे शुकदेव जी कहते हैं-

⇒ भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं।
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः॥

जो व्यक्ति भगवान की इस रासलीला की कथा को

सुनता है, उसके हृदय के अन्दर जो काम का रोग हैं उससे वो मुक्त हो जाता हैं। और भक्ति प्राप्त होती हैं।

⇒ रासपंचाध्यायी की कथा के बाद शुकदेव जी राजन परीक्षित को सुदर्शन और शंखचूड़ के उद्धार की कथा का श्रवणपान कराते हैं।

⇒ शुकदेव जी कहते राजन- एकदिन नन्दबाबा और सभी गोप, ग्वालबालोंने, शिवरात्रि के पावन अवसर पर भगवान् शिव का अभिषेक करने के लिये आम्बिकावन की यात्रा की, शिवरात्रि के दिन सभी ने सरस्वती नदी मे स्नान किया, और भगवान शंकर का अभिषेक किया, इसके बाद सभी गोप, ग्वाल, नन्दबाबा रात्रि मे उसी वन मे रुक गये। रात्रि मे बड़ा विशाल एक अजगर सर्प आया, नन्दबाबा सो रहे थे उस अजगर ने नन्दबाबा के पैर को पकड़ लिया, और धीरे-धीरे निगलने लगा, शिवरात्रि के समय तो ठण्ड़ी पड़ती है, नन्दबाबा को लगा कि कोई कम्बल उड़ा रहा हैं, अजगर धीरे-धीरे निगलता चला गया, कमर तक का हिस्सा जब मुँह के अन्दर चला गया, तब नन्दबाबा की नींद खुली, नन्दबाबा, चिल्लाये, बचाओ, बचाओ, सब गाँव के लोग उठ गये, कोई लाठी, कोई अग्नि की ज्वाला लेकर उस अजगर को जलाने लगे, किन्तु वो अजगर बड़ा भयानक था, वह नन्दबाबा को निगलते ही जा रहा था नन्दबाबा की आवाज सुनकर सभी गाँव वाले लाठी लेकर बचाने के लिये आ गये, किन्तु वही पास मे भगवान श्रीकृष्ण सो रहे थे, उनकी नींद नही खुली, पूरा गाँव उठ गया, ऐसा क्यो?

⇒ क्योंकि नन्दबाबा ने श्रीकृष्ण को बुलाया नही, भगवान् कहते हैं, मुझसे जीव जबतक रक्षा की उपेक्षा नही

करेगा, तबतक मैं उसकी रक्षा के लिये जाता नही

द्रोपदी ने जबतक संसार और अपने बल पर भरोसा किया तब तक भगवान नही आये, जिस दिन जीव अपने बल का भी भरोसा छोड़कर केबल भगवान भरोसा करता हैं, उस दिन भगवान वैकुण्ठ छोड़कर के अपने भक्त की रक्षा करने आते हैं।

जब तक नन्दबाबा पुकारते रहे, बचाओं, बचाओं तब तक भगवान श्रीकृष्ण नही गये, अन्त मे, जब नन्दबाबा ने देखा ये अजगर तो मुझे खा जायेगा, तब कहने लगे अरे! मेरा कृष्ण कहाँ हैं, अरे कन्हैया मुझे बचा,

ज्यो ही भगवान कृष्ण को पुकारा नन्दबाबा ने, ठाकुर जी दौड़े-दौड़े आये, और उस अजगर के मुख को पकड़कर चीर दिया, और नन्दबाबा को बाहर निकाल दियां।

वो अजगर कोई और नही था, सुदर्शन नाम का गन्धर्व था, अंगिरा नाम के मुनि के शाप से अजगर योनि को प्राप्त हो गया था। आज भगवान के द्वारा इसका उद्धार हो गया।

आगे कथा आती है, भगवान ने शंखचूड़ नामक यक्ष का उद्धार किया।

अगले क्रम मे शुकदेव जी युगलगीत का वर्णन करते हैं।

युगल गीत क्या हैं? 10-10, 5-5 गोपियाँ अपनी-अपनी टोली बनाकर बैठी हैं, और आपस मे कृष्ण की चर्चा कर रही हैं, वही युगल गीत हैं। इस युगलगीत मे भी भगवान के अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया हैं।

युगल गीत मे गोपियाँ कहती हैं -

श्लोक - वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो
वेणुवाद्यहृतचेतस आरात् ।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा
निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥

⇒ जब ठाकुर गैया चराने जाते है तो वन मे जाने के बाद गायो को ठाकुर जी वन मे छोड़ देते हैं। अब ठाकुर जी एक वृक्ष के नीचे बैठे हुये हैं। नन्हे से कन्हैया का मन तो लगता नही, इसलिये ठाकुर जी गौओं को साथ क्रीड़ा करते हैं। कैसी क्रीड़ा?

⇒ ठाकुर जी वन मे से बेलो को ढूढ़कर लाते हैं और एक बेल को सिर पर बाध लेते है, एक बेल को कमर पर बाध लेते है, एक बेल को बाजूबन्ध बनाकर बाध लेते हैं, ऐसे करके ठाकुर जी बहुत सारे पत्तो से से श्रृंगार करके वनमाली वेष धारण करते हैं।

⇒ श्रृंगार करने के बाद ठाकुर जी गैयाओं को बुलाने वाली धुन बजाते हैं। जब ठाकुर जी शाम को लौटकर जाते हैं, तो वंशी पर एक धुन बजाते हैं, उस धुन को सुनकर सारी गैया पूछ उठाकर दौड़कर कन्हैया के पास आ जाती हैं फिर उनको लेकर ठाकुर जी नन्दभवन आ जाते हैं। ठाकुर जी गैयाओ को बुलाने के लिये उस धुन को बजाते हैं, जिसको सुनकर गैयाओं को याद आ जाता हैं कि ठाकुर जी हमको पुकार रहे हैं। जो गाय घास चर रही हैं, जैसे ही वो धुन सुनती हैं, सब दौड़ी-दौड़ी जाती है और जैसे ही कृष्ण को देखती है, तो कन्हैया के कमर, हाथ, कान, गले सबमे घास लटक रही हैं सभी गैया दौड़कर के जाती हैं और ठाकुर जी के अंग पर लगी हुयी घास को अपनी जीभ से चाटकर के खाना शुरु कर देती हैं। अब जैसे ही गैया अपनी जीभ लगाती है, ठाकुर जी को गुदगुदी होती हैं।

अब ठाकुर जी कही इधर भागते हैं, कही उधर, मैया भगवान के समस्त अंगो को जीभ से चाटकर गीला कर देती हैं।

→ इस भाव का दर्शन गोपियां कर रही हैं, कितने मधुर लग रहे हैं कन्हैया,

→ एक गोपी ने प्रश्न किया ये कृष्ण को वंशी बजाना किसने सिखाया, इसके गुरुजी कौन हैं? सब गोपियाँ गयी और जाकर के यशोदा मैया से पूछती हैं, मैया तुम्हारे लाला ने वंशी बजाना कहा से सीखा? यशोदा मैया उत्तर देती हैं-

श्लोक- विविधगोपचरणेषु विदग्धो
वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।
तव सुतः साति यदाधरबिम्बे
दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥

मैया कहती हैं, मेरा लाला किसी से सीखने नही गया मेरे लाला को अपने आप ही वंशी बजाना आता हैं।

ठाकुर जी कैसी वंशी बजाते हैं? कोई अच्छा वंशी वादन करने वाला वंशी बजाये, जानकार लोग सुनकर बता देंगे कौन सा राग बजाया जा रहा हैं, लेकिन ठाकुर जी जब राग बजाते है, सुबह का राग बजाते हैं तो सूर्य को पता चल जाता है, मुझे उदय होना हैं, ठाकुर जी शयन का राग बजाते हैं तो चन्द्रमा को पता चल जाता हैं, मुझे उदय होना हैं और कभी-कभी ठाकुर जी ऐसा राग बजाते हैं, सूर्य और चन्द्र दोनो आकाश से देखते हैं, हम आये कि जाये? पता ही नही चल रहा हैं, सुबह का राग

हैं या शाम का।

श्लोक:- सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः
शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।
कवय आनतकन्धरचित्ताः
कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥

→ ठाकुर जी सवनश राग बजाते हैं, ये सवनश राग क्या हैं?

→ सरस्वती जिन्होने रागों को जन्म दिया, वो सरस्वती भी, जब ठाकुर जी वेणुवादन करते हैं, तो आकाश से प्रणाम करती हैं। एक स्वर मे एक राग दूसरे स्वर पर जबतक पहुचते हैं, बीच मे न जाने कितनो रागो को प्रणाम कर लेते हैं, ठाकुर जी, ऐसी सुन्दर वंशी बजाते है, ठाकुर जी,

⇒ जब ठाकुर जी गैया चराकर के शाम को वंशी का वादन करते हुये लौटकर आते हैं, तो धूप के कारण जो प्रस्वेद के बिन्दु ठाकुर जी के मुखमण्डल पर आ जाते हैं, उसको देखकर गैया मन मे विचार करती हैं

लाला का नित्य श्रृंगार यशोदा करती हैं हमतो ठाकुर जी का श्रृंगार कर ही नही सकती हैं, क्यों कि हमारे पास तो हाथ ही नही हैं।

→ लेकिन आज सब गाय सोचती हैं, कन्हैया को श्रृंगार करना हैं, जब ठाकुर जी गायो को लेकर नन्दभवन जा रहे थे, तो ठाकुर जी के चेहरे पर प्रस्वेद के बिन्दु आ गये, तब गायो ने तिरछी नजर से ठाकुर जी को देखा, और धूल मे अपने खुरो को गड़ाकर के तेज-तेज से कूदना प्रारम्भ कर दिया और जैसे ही गाय कूदने लगी, गायों के खुरो

से उड़ने वाली धूल मे ठाकुर जी धूल धूसरित हो गये। और जैसे ही उस धूल से बाहर आये जहां-जहां प्रस्वेद के बिन्दु थे, वहां-वहां छोटे-छोटे बिन्दुओ से ठाकुर जी के मुखमण्डल पर अद्भुत श्रृंगार हो गया। ठाकुर जी जब घर आये, तो मैया द्वार पर ठाकुर जी की आरती करती हैं, कि कोई नजर न लगी हो मेरे लाला को, लेकिन आज जैसे ही ठाकुर जी आये और उनके पत्रावली का श्रृंगार जैसे ही देखा मैया ने, एक-एक बिन्दी भगवान के मुख पर लगी और गालो तक आकर पीछे की तरफ घूम गयी, पहले माताए भी ये पत्रावली का श्रृंगार करती थी, ये पत्रावली का श्रृंगार कहा से आया ये पत्रावली का श्रृंगार सर्वप्रथम ठाकुर जी ने किया, और ठाकुर जी का ये पत्रावली का श्रृंगार गायों ने किया। यशोदा मैया को पत्रावली का श्रृंगार इतना सुन्दर लगा कि मैया नित्य ठाकुर जी को स्नान कराकर पत्रावली का श्रृंगार करने लगी

ये सब भाव गोपियाँ इस युगल गीत मे कहती हैं।

शुकदेव जी कहते हैं,-परीक्षित ! भगवान श्री कृष्ण को मारने के लिये कंस ने अरिष्टासुर नाम का एक असुर भेजा जो वृषभ का रुप धारण करके आया, भगवान ने उसको मार दिया।

अरिष्टासुर को जब भगवान ने मार दिया, तो नारद जी ने जाकर धीरे से कंस को सबकुछ बता दिया, नारद जी ने सोचा अब बहुत हो गया, बहुत वंशी बजाई कन्हैया ने वृन्दावन मे, खूब माखन खाया, रासलीला की, अब मथुरा चलकर के कंस का बध होना चाहिये, अब ये मथुरा चले और कंस को मारे, जिस कार्य के लिये इनका अवतार हुआ हैं, वह कार्य पूर्ण करे, कब तक ये वंशी बजायेगे, आगे का भी,तो कार्य करना हैं।

⇒ अब ठाकुर जी अपने से जायेगे नही और कंस यहाँ आयेगा नही तो कंस का वध कैसे होगा ? तब नारद जी ने भूमिका बना दी, नारद जी ने कंस से जाकर कहा- राजन् सब ठीक तो हैं ? कंस ने कहा- महाराज सब ठीक हैं, लेकिन आजतक मै अपने शत्रु का पता नही लगा पाया।

⇒ नारद जी ने कहा धिक्कार हैं तुम्हारे राजतन्त्र को तुम्हारे कर्मचारियो और गुप्तचरो को, जो आजतक तुम्हारे शत्रु का पता नही लगा पाए। तुम्हारे शत्रु ने तुम्हारे आदमियों को चुन-चुनकर के मारा, पूतना को मारा, अघासुर को मारा, बकासुर को मारा, धेनुकासुर को मारा, तृणावर्त को मारा, तुम्हारे इतने आदमियों को तुम्हारे शत्रु ने मार डाला और तुम आजतक उसका पता भी न लगा पाए।

⇒ कंस ने कहा - नारद जी आप ही बता दो कौन हैं मेरा शत्रु जिसने मेरे आदमियों को एक-एक कर के मार डाला ?

⇒ तब नारद जी ने कहा- वृन्दावन मे जो गोपों के सरदार है, नन्दबाबा, उनके घर मे जो बालक कृष्ण हैं वही तुम्हारा शत्रु हैं, उसी ने तुम्हारे इन आदमियो को मारा हैं।

⇒ कंस ने कहा कृष्ण मेरा शत्रु हैं ? मेरा शत्रु तो देवकी की आठवीं संतान थी ? नारद जी ने कहा तुमको पता नही हैं, देवकी की आठवी सन्तान वही कृष्ण हैं।

⇒ कंस ने कहा देवकी की आठवीं सन्तान कन्या थी, वो आकाश मे चली गयी, नारद जी ने कहा तुम मूर्ख हो, तुमको पता नही हैं, तुम्हारे कारागार के अन्दर से वसुदेव जी महाराज निकलकर, अपने बच्चे को लेजाकर अपने मित्र नन्दबाबा के घर मे दे दिये,

और आज वो दस वर्ष का हो गया, तुमको अभी तक पता नही चला, नारद जी के मुख से इस प्रकार सुनकर कंस बहुत क्रोधित हो गया। वसुदेव ने मेरे साथ इतना बड़ा छल किया, आज ही मैं देवकी वसुदेव को मार डालूगा, नारद जी ने कहा देवकी वसुदेव को यदि कुछ हो गया, तो जो तुम्हारी मृत्यु दो दिन बाद होने वाली हैं, वो आज ही हो जायेगीं, संकेत मे नारद जी ने कह दिया, अब तुम्हारी आयु दो दिन की बची हैं, लेकिन इसके बाद भी उस मूर्ख कंस को समझ मे नही आया,

कंस ने नारद जी से कहा - महाराज मैं क्या करु ? नारद जी ने कहा - एक उत्सव का आयोजन करो, और उस उत्सव मे कृष्ण, बलराम को बुला लो, यहाँ तुम्हारे बड़े-बड़े वीर हैं, वो कृष्ण को मार देगें।

कंस ने एक यज्ञ का आयोजन किया, और कृष्ण, बलराम को उस यज्ञ मे बुलाने के लिये निमन्त्रण पत्र लिखा कंस ने वह निमन्त्रण पर अक्रूर जी को देकर कहा आप वृन्दावन जाओ और नन्दबाबा को यह निमन्त्रण पत्त देकर कहो - अपने पुत्र कृष्ण और बलराम को लेकर इस यज्ञ मे सम्मिलित होने के लिये आयें, राजा की आज्ञा, अक्रूर जी मना भी नही कर सकते, अक्रूर जी वह निमन्त्रण पत्र लेकर वृन्दावन आये, और नन्दबाबा के घर पहुँचे, भगवान ने अक्रूर जी का स्वागत किया, गाय की सेवा कर रहे थे, कृष्ण, बलराम दोनो भाई, अक्रूर जी को देखा, दौड़कर गये, जाकर के प्रणाम किया, जी को भोजन कराया।

इसके बाद अक्रूर जी

रात्रि मे अक्रूर जी ने नन्दभवन मे विश्राम किया। प्रातः होते ही समाचार सुनाया, और कहा कंस ने कृष्ण बलराम को उपहार देने के लिये सम्मानित करने के लिये मथुरा बुलवाया हैं।

⇒ यह बात सुनकर के नन्दबाबा को प्रसन्नता तो हुई, लेकिन ब्रजवासियों को बिल्कुल प्रसन्नता नही हुई घर-घर मे जाकर के नन्दबाबा ने ढ़िंढोरा पिटवाया, पूरे वृन्दावन को बता दो जाकर के, कृष्ण और बलराम दो दिन के लिये मथुरा जा रहे हैं, इनको सम्मान मिलने वाला हैं, साराब्रजमण्ड़ल खुश हो जायेगा, लेकिन यहाँ उल्टा हुआ, जब नगाड़ा बजाता हुआ व्यक्ति कहता हुआ जा रहा था, सुनो-सुनो ध्यान से कृष्ण और बलराम दो दिन के लिये मथुरा जा रहे हैं, कंस महाराज ने उन्हे सम्मानित करने के लिये बुलाया हैं, जब ब्रजवासी यह सुनते हैं, कन्हैया दो दिन के लिये मथुरा जा रहे हैं, सम्मान मिलेगा, यह बात तो उनको सुनायी नही देती सम्मान मिलेगा, केवल यही सुनते हैं, कृष्ण बलराम मथुरा जा रहे हैं, मन मे विचार करते हैं, इसका मतलब कल हमको कृष्ण का दर्शन नही होगा, सब ब्रजवासी अपने-अपने घरो को छोड़कर नन्दभवन के बाहर जाकर बैठ गये, मन मे सब विचार कर रहे हैं, कन्हैया जब सामने होते हैं, और पलक झपक जाये तो ऐसा लगता है, अरे राम! ये पलक क्यों बनाई ठाकुर जी ने, अब तो कन्हैया दो दिन के लिये हमको छोड़कर जा रहा हैं, हम कैसे जियेंगे? नन्दभवन मे बैठी यशोदा मैया बाहर से दिखा तो रही हैं, वो बहुत प्रसन्न हैं किन्तु अन्दर से प्रसन्न नही हैं, मैया विचार कर रही हैं, मेरा लाला जब से हुआ है, तबसे मैंने

एक क्षण के लिये भी लाला को दूर नही किया हैं दो दिन के लिये मथुरा जा रहा हैं, मैं कृष्ण के बिना कैसे रहूँगी? यशोदा मैया ने कन्हैया को समझाया लाला तू एक कार्य कर बलराम को जाने दे, तू मत जा, तू मेरे पास रह, मैं तेरे बिना कैसे रहूँगी?

= कन्हैया बोले मैया सबके बालक घूमने जाते हैं सबके बालक मथुरा घूमकर आ चुके है, और मै कभी मथुरा नही गया, मैया मेरा भी मन कर रहा हैं, एक बार मथुरा घूम कर आये, मैया मन मे विचार करती है, सबके बालको की तरह मेरे बालक की भी इच्छा है मथुरा घूमने की, मैं क्यो रोकू? मैया कन्हैया से बोली ठीक है लाला तू चला जा

⇒ आज ठाकुर जी ने स्नान किया, स्नान करके श्रृंगार किया, और श्रृंगार करके जैसे ही नन्दभवन से बाहर आये सब ब्रजवासी ठाकुर जी को देखकर रुदन करने लगे। ब्रजवासियों ने ठाकुर जी से कहा लाला तुम हमे छोड़कर के मत जाना, हम तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे कन्हैया? ठाकुर जी बोले बस दो दिन की तो बात हैं, मैं परसों आ जाऊगा, ब्रजवासी बोले लाला तू नही समझेगा, बात दो दिन की नही हैं, तुझे देखे बिना एक क्षण भी हमारा अच्छा नही जायेगा, कही हमारे प्राण न निकल जाये, और लाला तू शर्त लगा ले, दो दिन बाद जब तू लौटकर आयेगा, तो हमको तो ऐसा लगता हैं, दो, चार के प्राण निकल जायेगे तेरे वियोग मे, इसलिये लाला मत जा।

⇒ ठाकुर जी बोले नही, मै तो जाऊगा, मुझे भी मथुरा देखकर आना हैं, कैसा हैं? यही बहाना बनाते हुये, सबसे कहते हुये ठाकुर जी रथ पर बैठ गये, वृन्दावन को प्रणाम किया, ब्रजवासियो को प्रणाम

06

किया, और सबको प्रणाम करते हुये, जैसे ही रथ आगे बढ़ने लगा, सब ब्रजवासी रथ के पीछे-पीछे चलने लगे, इतने मे ही यशोदा मैया दौड़ती हुयी आई नन्दभवन से, अरे कान्हा रुक जा, जैसे ही यशोदा मैया की आवाज सुनी कन्हैया ने, चलते हुये रथ से कन्हैया कूद पड़े, और दौड़कर के मैया से जाकर के लिपट गये, कन्हैया बोले मैया क्या हुआ? तू क्यों व्याकुल हो रही हैं? मैया के नेत्रों से अश्रु नही रुक रहे थे मैया ठाकुर जी के मुखमण्डल का स्पर्श करें, ठाकुर जी के श्री अंग का स्पर्श करे, मैया ने कन्हैया से कहा लाला मुझे पता है तू अब कभी वापिस नही आयेगा, क्यो कि मुझे अक्रूर जी ने बता दिया है, तू मेरा बेटा नही, तू तो देवकी का बेटा हैं। तुझे जन्म देने वाली मैया तेरी प्रतीक्षा कर रही हैं, कन्हैया मुझे नही पता था, तू देवकी का पुत्र है, नेंक सो माखन खाने के लिये मैंने तुझे ऊखल से बांध दिया, तेरे पीछे छड़ी लेकर दौड़ी, तेरे कान पकड़कर डांट लगायी, लाला मेरी तुझसे विनती हैं, ये सब बात अपनी मैया देवकी को मत बताना, नही तो कहेगी, मैंने अपना लाला भेजा, यशोदा ने उसको मारा, ऊखल से बांधा उसके कान पकड़कर डांट लगायी, लाला तू मेरी शिकायत मत करना देवकी से,

⇒ तू जहाँ भी रहे, प्रसन्न रहना, मेरा आशीर्वाद तेरे साथ हैं कन्हैया, लेकिन मुझको एक वचन देकर जा कन्हैया, जिस समय मेरे प्राण निकले उस समय तू मेरे सामने हो, अपने लाला को देखते हुये, प्राणो का त्याग कर दूगी, मुझे लगेगा

मैंने जीवन मे सब पा लिया, ठाकुर जी बहुत रोये, मैया, तू ऐसी बात मत कर, तू मुझको पराया मत बता, मैं तेरा ही लाला हूं, मैया बोली लाला मैंने तो तुझे पाला हैं, जन्म तो तेरा देवकी के यहाँ पर ही हुआ है। अब लाला तू चला जा, और सदा तेरी विजय हो, मेरा आशीर्वाद सदा तेरे संग हैं, बस मेरी बात याद रखना, अन्तिम समय जब आये मेरा, तो तू आ जाना, ऐसा कहते-कहते यशोदा मैया को मूर्छा आ गयी, और मैया प्रथ्वी पर गिर पड़ी, ठाकुर जी मैया को हृदय से लगाकर के रुदन करने लगे, तभी, गोपियां आई और यशोदा मैया को संभाला, नन्दबाबा ने कन्हैया से कहा, लाला अब विलम्ब मत कर जल्दी प्रस्थान कर, आज सबको प्रणाम करके ठाकुर जी रथ पर विराजमान होकर चल दिये, जाते-जाते कन्हैया ने सभी से कहा आप लोग चिन्ता मत करना, मैं परसो आ जाऊगा, रथ वृन्दावन से मथुरा की ओर चल दिया।

झूठी प्रीत करी मनमोहन, -2
या कपटी की बात
ओ कान्हा तोरी जोहत रह गयी बाट
जोहत रह गयी बाट

→ ब्रजवासी सब खड़े-खड़े रथ को देख रहे हैं, रथ से उड़ने वाली धूल जबतक शान्त नही हो गयी, जब तक रथ दिखना बन्द नही हो गया, तब तक ब्रजवासी खड़े-खड़े मथुरा जाने वाले मार्ग को देखते रहे, शायद कन्हैया को हमारी याद आ जाये, और वो लौटकर हमारे पास आ जाये, किन्तु ब्रजवासी खड़े-खड़े देखते रहे, कोई लौटकर नही आया, सब ब्रज-वासी अपने-अपने घरो को लौट गये।

⇒ अक्रूर जी कृष्ण बलराम, नन्दबाबा, परिजनो को लेकर मथुरा के लिये जब चलते हैं, तो रास्ते मे अक्रूर जी को भगवान्‌ने अपनी माया का दर्शन कराया, फिर मथुरा मे आकर विश्राम घाट पर विश्राम किया।

⇒ सायंकाल के समय भगवान श्रीकृष्ण ने नन्दबाबा से कहा, आप की अनुमति मिल जाये तो हम थोड़ा मथुरा घूम लें, सखाओं की इच्छा हैं, क्यों कि पहलीबार बच्चे शहर मे आये तो नगर की शोभा देखकर सबको घूमने का मन हुआ, आप की अनुमति हो तो इन सभी को मथुरा घुमा दे।

⇒ नन्दबाबा ने कहा- देखो बेटा जाओ तो, लेकिन कही किसी से लड़ाई झगड़ा मत करना, यहाँ पर जगह-जगह कंस के सिपाही हैं, सावधानी पूर्वक जाओ और शान्ति से घूम कर के चले आओ, कृष्ण बलराम ने कहा, बाबा जैसे जायेगे, वैसे ही आ जायेगे, दोनो भाई चल पड़े।

⇒ मथुरा की गलियों मे कृष्ण और बलराम जब घूमने निकले, तो मथुरा की जितनी स्त्रिया थी, वो हाथों मे पुष्प लेकर कृष्ण की बाट जोहने लगी, कृष्ण हमारी गली से निकले, कृष्ण हमारी गली से निकले, यही विचार करने लगी।

शुकदेव जी कहते है-

प्रासादशिखरारूढाः प्रीत्युत्फुल्ल मुखाम्बुजाः ।
अभ्यवर्षन् सौमनस्यैः प्रमदा बलकेशवौ ॥

⇒ सभी स्त्रिया अपने-अपने मकान के छत पर जाकर प्रसन्नता पूर्वक प्रतीक्षा करने लगी, और कृष्ण भगवान

⇒ जब गली मे आये, तो उन स्त्रियों ने भगवान श्रीकृष्ण के ऊपर पुष्प की वर्षा की, पुष्प वर्षा तो एक बहाना था, गोपियाँ तो भगवान श्रीकृष्ण के मुख का दर्शन करना चाहती थी, जब भगवान श्रीकृष्णु मथुरा की गलियों से निकले तो, गोपियों को उनके मुख का दर्शन नही हो रहा था, इसलिये गोपियों ने गोपियों ने भगवान के मुखमण्डल का दर्शन करने के लिये एक योजना बनाई।

⇒ सभी गोपियाँ अपने-अपने मकान की छतो पर चढ़कर श्री कृष्ण के ऊपर पुष्पो की वर्षा करने लगी, जब गोपियों ने भगवान के ऊपर पुष्पो की वर्षा की तो भगवान ने विचार किया ये कौन हैं, जो मेरे ऊपर पुष्पो की वर्षा कर रही हैं, एकबार इनका दर्शन अवश्य करना चाहिये।

⇒ जैसे ही भगवान ने ऊपर की ओर देखा, गोपियों को भगवान के मुखमण्ड़ल के दर्शन हो गये, भगवान के मुखमण्ड़ल का दर्शन करके गोपियाँ आनन्द मग्न हो गयी।

⇒ मथुरा की गलियों मे घूमते हुये भगवान जा रहे थे, तभी भगवान ने देखा, उधर से एक धोबी आ रहा था, वह धोबी कंस के कपड़े धुलता था। उसको देखते ही भगवान् को क्रोध आ गया, ये धोबी कोई और नही था ये त्रेता युग का अयोध्या का वही धोबी हैं, जिसने जानकी जी के ऊपर झूठा आरोप लगाया था।

Date:
Page: 90

जिसके कारण जानकी जी को भगवान ने वन मे भेज दिया था। उस समय भगवान ने उसको दण्ड नही दिया था। क्यो कि वह अयोध्यावासी था। अयोध्यावासी भगवान को अतिप्रिय हैं।

चौ॰ अति प्रिय मोहि इहाँ के वासी।
मम धामदा पुरी सुख रासी॥

⇒ किन्तु आज भगवान ने विचार किया मैं इसे दण्ड दूँगा। वो जब सामने आया तो भगवान ने कहा- ये कपड़े लेकर कहा जा रहे हो? धोबी ने कहा महाराज कंस के ये कपड़े हैं, भगवान ने कहा कंस जो राजा हैं आपके, वो मेरे मामा हैं, धोबी ने कहा जाओ, जाओ, तुम्हारे जैसे कितने लोग महाराज को अपना रिश्तेदार और नातेदार बताते रहते हैं। कहाँ वो महाराज और कहाँ तुम गाँव के लोग? भगवान ने कहा जो मैं कह रहा हूं वो सत्य हैं। ये जो वस्त्र तुम मामा जी के लिये लिये जा रहे हो, वो मुझे देदो। इतना सुनते ही उस धोबी को क्रोध आ गया, और उसने कहा-

⇒ ईदृशान्येव वासांसि नित्यं गिरिवनेचराः।

परीधत्त किमुद्वृत्ता राजद्रव्याण्यभीप्सथ॥

⇒ तुम्हारे जैसे गांव के जंगली लोग ऐसे कपड़े नही पहनते, ये वस्त्र राजा, महाराजा पहनते हैं।

Date:
Page: 91

⇒ इतना कहना था कि भगवान को क्रोध आ गया। भगवान तो बहाना ढूंढ रहे थे, कोई बहाना मिले, तो मैं इसको मारू, भगवान को बहाना मिल गया, भगवान ने उछलकर उस धोबी के कनपटी पर एक थप्पड़ मारा, उसका सिर धड़ से अलग हो गया, उस धोबी की मृत्यु हो गयी, उस धोबी के जो सेवक थे, वो कपड़े छोड़कर अपने प्राण बचाकर भाग गये।

⇒ उन कपड़ो को कृष्ण बलराम ने उठा लिया, उसी समय, मथुरा मे एक दर्जी था भगवान का भक्त -

⇒ ततस्तु वायकः प्रीतस्तयोर्वेषमकल्पयत् ।
वो दर्जी देख रहा था, वह अपने पूरे परिवार के
⇒ साथ, सुई, धागा, कैंची लेकर के भगवान के समीप आ गये। और एक-एक कपड़ो को

एक-एक सखाओं को पहनाया, एक भगवान कृष्ण को पहनाया, एक, बलराम जी को पहनाया, एक मनसुखा को पहनाया, अब कंस का कुर्ता इतना लम्बा कि सखा उस कुर्ते से पूरा ढक गया, तब उस दर्जी ने कैंची से काट काटकर के जितना कपड़ा फालतू था, उतना निकाल दिया, और वस्त्र को पहनने योग्य बना दिया। राजसी वस्त्र पहनकर के कृष्ण बलराम आनन्दित हुये।

⇒ भगवान ने मन मे विचार किया कपड़े तो सुन्दर हो गये, अब गले मे सुन्दर माला हो जाती, तब भ्रमण मे आनन्द आता।

⇒ देखो नगर मे जब घूमने जाओ, तो दो कार्य होना चाहिये।

Date:
Page: 92

(1) एक कार्य तो यह हो आप तो नगर देखो,
(2) आप इतने सजधज के जाओ कि लोग आपको देखे

=) त्रेता युग मे जब राम जी नगर घूमने के लिये गये, कहाँ पर? जनकपुर मे, विश्वामित्र बाबा के साथ मे, लक्ष्मण जी की इच्छा हुई कि नगर घूमे, तो राम जी ने विश्वामित्र जी से कहा गुरुदेव आपकी आज्ञा हो तो लक्ष्मण को मैं नगर भ्रमण कराकर के ले आऊ ?

चौ० नाथ लखनु पुर देखन चहहीं।
प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं॥

⇒ भगवान ने कहा अगर आपकी अनुमति मिल जाये, तो लक्ष्मण को ले जाऊ नगर घुमाकर के ले आऊ, तो विश्वामित्र जी हँसने लगे, विश्वामित्र जी ने कहा हाँ ठीक है, राम जाओ, लक्ष्मण को नगर दिखा देना और तुम भी नगर देख लेना, लेकिन एक कार्य और करना, अपना भी दर्शन सबको करा देना, नगर देखने का तभी तो मतलब है, कि नगर आप देखो, और नगर के लोग आपको देखे, विश्वामित्र जी ने यही वचन राम जी से कहा -

दोहा- जाइ देखि आवहु नगरु, सुख निधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सबके नयन, सुंदर बदन देखाइ॥

Date:
Page: 93

⇒ अपने सुन्दर स्वरुप का दर्शन कराकर के सबके नेत्रो को सुफल करो।

→ आज कृष्ण, बलराम भी मथुरा की गलियों मे घूम रहे हैं, ये कृष्ण, बलराम कौन हैं? राम, लक्ष्मण ही तो कृष्ण, बलराम हैं। अन्तर बस इतना है जो लक्ष्मण है वो बलराम हैं, और जो राम है वो कृष्ण है, नगर भ्रमण हो रहा है, वहाँ भी एक बाबा जी थे, जिनसे पूछकर राम, लक्ष्मण भ्रमण करने गये थे, कौन थे वो?

विश्वामित्र जी थे वो, और यहाँ भी एक बाबा हैं, नन्दबाबा, जिनसे पूछकर कृष्ण, बलराम नगर भ्रमण करने गये।

⇒ आज भगवान् विचार कर रहे हैं, कपड़े तो सुन्दर हो गये, अब गले मे सुन्दर माला हो जाती, तो आनन्द आ जाता, तबतक, मथुरा मे एक सुदामा नाम का माली था, फूल बेचता था, माला बनाता था, भगवान उसके घर पहुँच गये, भगवान को देखकर सुदामा माली प्रसन्न हो गया, उसने भगवान को सुन्दर माला धारण कराई बलराम जी को माला पहनाई, सखाओं को माला पहनाई, अब तो माला पहनकर के सब आनन्दित हो गये, और भगवान ने उस सुदामा माली को भक्ति का वरदान दिया। ये सुदामा भगवान को बहुत प्रिय हैं, और भगवान की सभी

Date:
Page: 94

लीला मे सुदामा हैं। कृष्णावतार मे भगवान की बाल लीला कहाँ होती हैं, वृन्दावन मे, तो बाललीला मे भी सुदामा हैं। वहाँ पर उनका नाम क्या है? श्रीदामा, और भगवान जब मथुरा मे आये तो मथुरा मे भी एक भक्त मिले, सुदामा, ये सुदामा माली हैं। द्वारिका मे जब भगवान गये तो वहा भी सुदामा जी मिले जो भगवान के परम मित्र थे, इनको तो आप सभी लोग जानते हैं।

⇒ माला पहनकर के जब भगवान आगे चले, तब भगवान ने सोचा कपड़े तो हो गये बढ़िया गले मे माला भी होगई, अब मस्तक पर बढ़िया चन्दन लग जाता तो आनन्द आ जाता,

⇒ कितना भी बढ़िया कपड़ा पहन लो, श्रृंगार कर लो, लेकिन मस्तक पर अगर चन्दन नही हैं, तो शोभा नही होती, जिसके मस्तक पर चन्दन होता हैं, उसकी शोभा अलग ही होती हैं।

⇒ भगवान रास्ते मे विचार करते हुये जा रहे थे, ये चन्दन कहाँ से लेकर के आये, तब तक रास्ते मे उधर से एक स्त्री आ रही थी, तीन जगह से टेढ़ी कूबड़ निकला हुआ था उसका, कमर टेढ़ी और पीठ मे कूबड़ निकला हुआ था, हाथ मे एक थाली लिये हुये थी, और उस थाली मे कई कटोरियाँ थी, कटोरियों मे अलग-अलग चन्दन, कपूर मिश्रित, केसर मिश्रित, कस्तूरी मिश्रित

Date:
Page: 95

⇒ कुमकुम मिश्रित, अनेक पदार्थों को डालकर के अलग-अलग प्रकार के चन्दन को कटोरियों मे तैयार करके एक थाली मे सजाकर के ले जा रही थी, कहाँ ले जा रही थी? महाराज कंस के लिये उसका नाम सैरन्ध्री था। कूबड़ निकला हुआ था, इसलिये लोग उसे कुब्जा भी कहते थे।

⇒ भगवान ने जब उस कुब्जा को देखा -

श्लोक - अथ व्रजन् राजपथेन माधवः
स्त्रियं गृहीताङ्ग-विलेपभाजनाम् ।
विलोक्य कुब्जां युवतीं वराननां
पप्रच्छ यान्तीं प्रहसन् रसप्रदः ॥

⇒ चन्दन का पात्र लिये हुये उस स्त्री को भगवान ने देखा, उस कुब्जा को देखकर भगवान सामने खड़े हो गये, हँसते हुये, भगवान ने कुब्जा से कहा, अरी सखी, अरी सुन्दरी ये चन्दन लेकर के तुम कहा जा रही हो? ज्योही भगवान् ने उसको सुन्दरी कहा - वह तो नाराज हो गई, क्यो कि कुब्जा को लगा ये तो मेरी हँसी उड़ा रहे है। कोई स्त्री सुन्दर न हो, उसके अन्दर सुन्दरता न हो, और कोई सुन्दर, मनोहर

Date:
Page: 96

⇒ पुरुष आकर के उससे कहे, वाह! तुम तो कितनी सुन्दर हो, तो उसको कैसा लगेगा?

उसको तो यही लगेगा, ये मेरी मजाक उड़ा रहा है, उसी प्रकार वो कुब्जा नाराज हो गयी।

⇒ कुब्जा ने कहा श्यामसुन्दर मुझे सुन्दरी कहकर के मेरा अपमान कर रहे हो, मुझे तो कोई देखता नही, मैं सामने से गुजर जाती हूं, लोग मुँह मोड़ लेते हैं, तुम मुझे सुन्दरी कहकर के मेरा उपहास कर रहे हो, भगवान् श्यामसुन्दर ने कहा अरी सखी ये संसार के लोग चमड़े की सुन्दरता देखते हैं, और मैं तो हृदय की सुन्दरता देखता हूं, तेरे हृदय की सुन्दरता को देखकर के मैंने सुन्दरी कहा है, और ये चमड़े की सुन्दरता टिकाऊ नही होती, ये कब नष्ट हो जाये कोई ठिकाना नही; दो दिन मे सब बना, बनाया खेल बिगड़ जाता है,

EX- एकबार की बात कबीरदास जी महाराज के कुटिया के बगल मे एक वैश्या ने अपना कोठा बना लिया। नित्य वह उस कोठे मे बैठकर गाना, बजाना करती, जिस समय वह वैश्या गाना, बजाना करती, उसी समय कबीरदासजी अपनी करताल निकालकर जय सियाराम, जय-जय सियाराम करते, जब कबीरदास जी कीर्तन प्रारम्भ करे तो, उस वैश्या का ताल बेताल हो जाये, गाने, बजाने वालो का सुरताल बिगड़ जाये, उस वैश्या के यहाँ जो उसके आशिक आते थे, उन्होने ने कहा ये बाबा

Date:
Page: 97

⇒ तुम्हारे बगल मे आकर के कहाँ से बस गया, इसको भगाओ यहाँ से, हमारे आनन्द मे ये खलल डालता है। उस वैश्या ने कहा हम क्या करे तुम्ही लोग कोई उपाय कर लो।

⇒ सबने मिलकर के कबीरदास जी के घर मे आग लगा दी, जब आग लगा दिया, तो कबीरदास जी झोपड़ी मे से निकलकर बाहर चले गये, और पेड़ के नीचे बैठकर के कीर्तन करने लगे, भगवान की लीला देखिये,

⇒ जब कबीरदास जी की झोपड़ी जल रही थी, तभी तेज-तेज हवा चलने लगी, एक लपक उड़ती हुई उस वैश्या के घर मे पहुंच गई,

⇒ उस वैश्या के घर मे चारो तरफ शिल्क के पर्दे लगे हुये थे, वो शिल्क के पर्दे अग्नि पाते ही प्रज्वलित हो गये, अब तो देखते ही देखते, उसके घर मे आग लग गयी, तब तक शिल्क का जलता हुआ एक पर्दा उड़कर के उसके मुंह पर आकर के गिर गया, पूरा मुंह झुलस गया, सारी सुन्दरता नष्ट हो गयी. उसके, इसरे दिन से जो आशिक आते थे उसके घर पर, सबका आना बन्द हो गया, अब तो उस वैश्या का धंधा भी बन्द हो गया, बनी बनाई सुन्दरता चली गई दो मिनट मे, अब बेचारी क्या करे? अन्त मे उसने विचार किया सन्त का मैंने अपराध किया है, मेरे कारण सन्त की कुटिया जली, उसी पाप का परिणाम मुझे प्राप्त हुआ।

Date:
Page: 98

⇒ अब तो सन्त की शरण मे जाकर के ही कल्याण होगा। वह वैश्या कबीरदास जी के पास गई और उनके चरणो मे गिर पड़ी, उस वैश्या ने दोनो हाथो को जोड़कर के कहा महाराज मुझे क्षमा कर दो, मेरे कारण आपकी कुटिया जल गई, इस पाप का दण्ड मुझे भी मिला, अब मेरा कल्याण कैसे हो ? आप मुझ पर कृपा करो

⇒ मैं बहुत बड़ी पापिन हूँ, अपराधी, हूँ मेरे कारण आपकी कुटिया जली। उस वैश्या की बात

सुनकर के कबीरदास जी हँसने लगे, कबीरदास जी ने कहा नही, नही ऐसी बात नही हैं, तुम तो मेरी पड़ोसिन हो, पड़ोसी से तो मित्रता रखनी चाहिये, हमारा, तुम्हारा तो कोई झगड़ा नही है,

कबीरदास जी ने कहा ये तो यार का झगड़ा था। तेरे यार ने मेरा घर जलाया, और मेरे यार ने तेरा घर जलाया। उस दिन उस वैश्या को बोध हो गया

और फिर भगवान का भजन करने लगी, तो ये जगत की सुन्दरता नाशवान है, इसका कोई मूल्य नही है, अन्तःकरण से व्यक्ति कितना सुन्दर है इसका मूल्य है।

⇒ भगवान् ने जब कुब्जा को समझाया कि उन्होंने उसे सुन्दरी क्यों कहा, तो कुब्जा प्रसन्न हो गई, भगवान ने कुब्जा से कहा ये चन्दन मेरे मस्तक पर लगायेगी, कुब्जा ने कहा प्रभो ये चन्दन तो आपके ही योग्य हैं, लेकिन ये चन्दन मैं आपको एक शर्त पर लगाऊगी

Date:
Page: 99

⇒ भगवान ने पूछा क्या शर्त हैं? कुब्जा ने कहा यही शर्त हैं इस चन्दन के साथ मे इस चन्दन वाली को भी अपने चरणों की दासी बना लो, तो मैं ये चन्दन आपके मस्तक पर लगा दूगी।

⇒ भगवान ने कहा ठीक हैं, ये तो कृष्णावतार हैं, इस अवतार मे तो कोई आ जाये, चाहे लूली हो, चाहे लंगड़ी हो, चाहे भालू की बेटी क्यो न हो सभी को स्वीकार करेंगे। भगवान ने मन मे विचार किया, त्रैता युग मे जब यह मेरे पास विवाह का प्रस्ताव लेकर के आई थी, तो मैंने इसके प्रस्ताव को स्वीकार नही किया था। जिसके कारण इतना बड़ा युद्ध करना पड़ा। भगवान को त्रैता युग का बड़ा कटु अनुभव हैं।

⇒ ये कुब्जा कोई और नही त्रैता युग की सूर्पणखा थी। एकबार यह पंचवटी मे गई, और दोनों राजकुमारों (राम, लक्ष्मण) को देखकर विकल (काम से पीडित) हो गई। सूर्पणखा कुरूप थी किन्तु राम जी के पास सुन्दर रूप धारण करके गई,

चौ० (1) रुचिर रुप धरि प्रभु पहिं जाई।
बोली बचन बहुत मुसकाई ॥

(2) तुम सम पुरुष न, मो सम नारी।
यह संजोग बिधी रचा बिचारी ॥

⇒ सूर्पणखा ने राम जी से कहा, आपके समान सुन्दर कोई पुरुष नही, और मेरे समान सुन्दर कोई स्त्री नही,

Date:
Page: 100

विधाता ने यह संयोग (जोड़ा) बहुत विचार कर रचा हैं, इसलिये –

⇒ तुम बन्ना बनो, हम बन्नी बने
यह जोड़ा कोई बुरा नही।

⇒ आप बन्ना बन जाओ और हम बन्नी बन जाये, हम आपसे विवाह करना चाहती हैं।

⇒ सूर्पणखा हैं कुरूप किन्तु आई सुन्दर बनकर, चाहती क्या है? भगवान से विवाह करना।

⇒ भगवान को बनावटी लोग पसन्द नही है, ऐसे लोगों से विवाह करना तो बहुत दूर, उनकी ओर देखकर भगवान बात तक नही करते। इसलिए सूर्पणखा की तरफ देखकर भगवान ने उसको उत्तर तक नही दिया।

⇒ चौ० सीतहि चितइ कही प्रभु बाता।
अहइ कुमार मोर लघु भ्राता॥

⇒ भगवान जानकी जी की तरफ देखकर उत्तर देते हैं।

⇒ अब प्रश्न इसबात का उठता हैं? सूर्पणखा तो विवाह करना चाहती थी, लक्ष्मणजी ने सूर्पणखा के नाक, कान क्यों काट दिए?

⇒ बंधुओ सूर्पणखा राम जी की होना चाहती हैं, राम जी का होने के लिये संसार को छोड़ना पड़ेगा, जैसे गोपियों ने छोड़ दिया। अगर सूर्पणखा सुन्दर होती तो संसार के किसी न किसी पुरुष से उसका विवाह

Date:
Page: 101

हो गया होता। लक्ष्मण जी ने नाक, कान काट लिये अब कौन विवाह करेगा? अब संसार का कोई भी पुरुष सूर्पणखा को अपना नहीं सकता,

भगवान ने सूर्पणखा से कहा इस युग मे तो मैं तुम्हे अपना नही सकता, किन्तु ये वचन देता हूं, द्वापर युग मे जब मैं श्रीकृष्ण बनकर के आऊंगा तो तुम्हे अवश्य अपनाऊंगा।

त्रेता युग की वही सूर्पणखा द्वापर मे कुब्जा बनकर के आयी, किन्तु इस जन्म मे भी कुरूप बनी, ताकि कोई भी सांसारिक प्राणी उसका वरण न करे।

कुब्जा को तो ठाकुर जी का होना था, इसलिये भगवान ने सूर्पणखा को द्वापर मे भी कुरुप बनाकर के भेजा।

हमारे ठाकुर जी तो मन की सुन्दरता देखते हैं, शरीर की नही, इसलिए भगवान ने कुब्जा से कहा मैं तुम्हे और तुम्हारे चन्दन को अवश्य स्वीकार करूंगा,

जब भगवान ने कुब्जा को स्वीकार कर लिया, तब भगवान ने उससे कहा, कुब्जे आज मैं तुझे सुन्दरी बना देता हूं, आज से तुझे देखकर के कोई नही हँसेगा, और वही सड़क पर, मार्ग मे ही सखाओं के साथ थे भगवान्, कुब्जा के दोनों पैर के पंजो पर अपने दोनो पैर के पंजों को रखा, भगवान का दाहिना पैर कुब्जा के बाए पंजे पर, और

भगवान का बाया पंजा कुब्जा के दाहिने पंजे पर और अपने बाए हाथ को भगवान ने

Date:
Page: 102

लगाया कुब्जा के कमर पर (कूबड़) पर और दाए हाथ को लगाया उसकी ठुड्डी (होंठ के नीचे वाली हड्डी) पर और जोर से झटका दिया,

तीनजगह से टेढ़ी कुब्जा परम सुन्दरी बन गयी, भगवान्ने कुब्जा को सीधा कर दिया। हमारे ठाकुर स्वयं टेढ़े हैं, किन्तु बड़े-बड़े टेढ़ो को सीधा कर देते हैं। ठाकुर जी कहते हैं, टेढ़ो को सीधा करने के लिये टेढ़ा बनना पड़ता हैं भगवान ने विचार किया कृष्णावतार मे मुझे बड़े-बड़े टेढ़ो को सीधा करना पड़ेगा, इसलिये श्री कृष्ण टेढ़े बन गये। आज कुब्जा ने भगवान के मस्तक पर केसर मिश्रित चन्दन लगाया।

-: भजन :-

⇒ मस्तक पर मलयागिरि चन्दन
केसर तिलक लगाया।

रहे सलामत हाथ सदा वो
जिसने तुझे सजाया ॥

सजाता रहे वो हर बार सांवरे

तेरा किसने किया श्रृंगार सांवरे

लगे दूल्हा सा तू दिलदार सांवरे

तेरा किसने किया - - - - - - - -

Date:
Page: 103

⇒ शुकदेव जी कहते हैं-

श्लोक- ऋज्वीं कर्तुं मनश्चक्रे दर्शयन् दर्शनं फलम्।

⇒ आज अपने दर्शन का फल भगवान ने कुब्जा को दे दिया, उसे सुन्दरी बनाकर के, अब तो कुब्जा नृत्य करने लगी, कुब्जा ने ठाकुर जी से कहा श्यामसुन्दर आप मेरे घर चलो, मैं आपकी आरती उतारूगी, आपके चरण धोऊगी, भगवान ने कुब्जा से कहा अभी तुम अपने घर जाओ, बाद मे मैं तुम्हारे घर आऊगा तब तुमसे मिलूगा, भगवान की बात मानकर कुब्जा तो अपने घर चली गयी।

⇒ भगवान वहाँ पहुंचे जहा पर शंकर जी का धनुष रखा था जिस धनुष की कंस पूजा करता था, भगवान ने उस धनुष को उठाया और तोड़ दिया, शंकर जी के धनुष को तोड़ना भगवान का पुराना कार्य हैं, रामावतार मे तोड़ा और कृष्णावतार मे भी तोड़ा, लेकिन थोड़ा अन्तर हैं, वहाँ तोड़ने पर विवाह हुआ, यहाँ तोड़ने पर विवाह नही हुआ, भगवान ने विचार किया, इस अवतार मे तो सोलह हजार एक सौ आठ विवाह करने हैं, कहाँ तक धनुष तोड़ेगे, इसलिये धनुष तोड़कर

Date:
Page: 104

⇒ विवाह वाली परम्परा का निर्वाह नही होगा भगवान ने धनुष तोड़ दिया, कंस के सिपाही युद्ध करने के लिये आये, भगवान ने सबको मार दिया। जितने बचे वो भाग गये।

⇒ कंस को पता चला, कृष्ण, बलराम ने आकर के धनुष तोड़ दिया हैं, अब तो कंस को अपनी मृत्यु दिखाई देने लगी। दूसरे दिन भगवान कृष्ण को दरबार मे जाना हैं, कंस ने महल के द्वार पर कुवलयापीड नाम के हाथी को मदिरापान कराकर के खड़ा कर दिया, महावत से कहा कृष्ण, बलराम आये तो हाथी उनको कुचल दे, ऐसा प्रयास करना, हाथी को इशारा कर देना,

⇒ दूसरे दिन कृष्ण, बलराम, नन्दबाबा अपने परिजनो के साथ, कंस के दरबार मे उपस्थित होने के लिये आते हैं जब, तो देखते हैं महल के मुख्य द्वार पर हाथी खड़ा था, भगवान ने कहा हाथी को हटाओ, महावत ने कहा, ये हाथी नही हटेगा, भगवान ने कहा ये हाथी नही हटेगा, तो इस हाथी के सहित मैं तुमको यमपुरी पहुँचा दूगा, भगवान कृष्णावतार मे बड़े ही रोष मे हैं, यहाँ तो कोई समझौता नही है। सीधी बात मानो तो मानो, नही तो चलो हटो

⇒ भगवान ने कहा हटाओगे इस हाथी को कि नही महावत ने कहा ये हाथी नही हटेगा, तो भगवान् ने कहा -

श्लोक- नो चेत् सकुंजरं त्वाद्य नयामि यमसादनम् ।

Date:
Page: 105

⇒ अभी मैं तुमको यमपुरी पहुँचाता हूँ, भगवान दौड़े और दौड़कर मारा उस महावत को, महावत तो दूर जाकर गिर पड़ा, उसका राम नाम सत्य हो गया।

⇒ हाथी ने भगवान् को दौड़ा लिया, भगवान् भागे थोड़ी दूर जाने के बाद भगवान् जमीन पर लेट गये, हाथी ने सोचा अब ये बच्चा गिर गया है, इसको मैं अपने दांत से मार दूं, मारने के लिये वो झुका, तब तक भगवान् सरक कर के निकल गये, और जब तक वो हाथी अपने दोनो पैर को सीधा करता, तब तक भगवान् दौड़कर के उस हाथी के पीछे आ गये, और उसकी पूंछ को पकड़ लिया और पूंछ को पकड़कर के भगवान् खीचने लगे,

⇒ हाथी के शरीर से उसकी पूंछ सबसे कमजोर अंग होता है, अब तो भगवान् पूंछ पकड़कर के खींचने लगे तो हाथी चिंघाड़ने लगा, वो कुवलयापीड़ हाथी सोचने लगा कही मेरी पूंछ उखड़ न जाये, भगवान् तो बड़ो-बड़ो की पूंछ उखाड़ देने वाले हैं। भगवान् ने जब खींचना शुरु किया तो हाथी उल्टा पीछे की तरफ सरकने लगा,-

श्लोक - पुच्छे प्रगृह्यातिबलं धनुषः पंचविंशतिम्।
२५ धनुष अर्थात् 100 हाथ, 100 हाथ

Date:
Page: 106

पीछे तक भगवान् हाथी को खीचते हुये लेकर के चले गये। अब तो कुवलयापीड़ चिंघाड़ने लगा, तब तक भगवान पूंछ छोड़कर के सामने आये, उसकी सूड़ को पकड़ा, उठाकर के पटक दिया, और फिर उसके दोनो

दांतो को भगवान् ने उखाड़ लिया और उन दांतो को उसी के शरीर मे धंसा दिया,

कुवलयापीड़ की तो मृत्यु हो गयी, और फिर भगवान् ने एक दांत बलराम जी को दे दिया,

एक दाँत स्वयं ले लिया, खून से सना हुआ वो दांत, ताजा, ताजा उखाड़ा हुआ वो दांत, खून

उसमे से टपक रहा था, लेकर के भगवान् चल रहे हैं और उनके सखा अगल, बगल उनको घेरे हुये हैं, पीछे-पीछे नन्दबाबा हैं,

⇒ अब ये यादवों की मण्ड़ली जब कंस के दरवार मे प्रवेश करती हैं, कंस ने देखा कंस तो देखकर भयभीत हो गया। उसको अपनी

मृत्यु दिखाई पड़ने लगी, उसको ऐसा लगा

साक्षात् मृत्यु आ रही हैं।

⇒ शुकदेव जी कहते हैं—

⇒ मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः

स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान्

Date:
Page: 107

गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां
शास्ता स्वपित्रोः शिशुः।
मृत्युर्भोजपतेर्विराड्विदुषां
तत्त्वं परं योगिनां
वृष्णीनां परदेवतेति विदितो
रंगं गतः साग्रजः॥

⇒ सभा मे जितने लोग बैठे थे, जिसकी जैसी भावना थी, उसको वैसा दर्शन हुआ,
जैसे - मिथला मे भगवान जब पहुँचे तो -

चौ० जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

⇒ वही स्थिति यहाँ पर, क्या स्थिति?
⇒ बड़े-बड़े पहलवान जो थे, उनको लग रहा था, वज्र के समान कोई पुरुष आ रहा हैं। स्त्रियों को लग रहा था, परम मनोहर पुरुष आ रहा है, वृष्णिवंश के जो लोग थे, उनको लग रहा था, हमारे अपने आ रहे हैं, कंस को लग रहा था, मेरी मृत्यु आ रही हैं। योगियों को लग रहा था, परम तत्त्व आ रहे हैं। तब तक भगवान दरबार मे पहुँच गये।

Date:
Page: 108

⇒ कंस भीतर से तो डरा हुआ था। लेकिन कंस ने कहा, आओ वीरों, तुम्हारे जैसे वीर मेरे राज्य मे हैं ये मेरे लिये गौरव का विषय हैं

⇒ जैसे नेता लोग बनावटी भाषण देते हैं, ऐसे ही कंस भी अपना बनावटी भाषण देने लगा, भीतर से तो डर रहा था।

⇒ कंस ने कहा वीरों आज तुम्हारी वीरता हमारी प्रजा के लोग भी देखेगें, ये बडे-बडे पहलवान जो मेरे दरबार मे हैं, इनके साथ तुम्हारा मल्ल युद्ध होगा। कंस की योजना थी, इन पहलवानों से युद्ध करायेगें, और उसी मल्लयुद्ध मे मेरे पहलवान कृष्ण को मार देगें,

⇒ भगवान अखाडे मे पहुँचे, भगवान के सामने चाणूर मुष्टिक दो पहलवान आ गये। कृष्ण ने चाणूर से हाथ मिलाया, बलराम जी ने मुष्टिक से हाथ मिलाया, और फिर दोनों पहलवानों को दोनो भाइयो ने मार डाला, फिर दो पहलवान आ गये, शल, तोशल, उन दोनों को भी कृष्ण, बलराम ने मार दिया, कंस की आँख के सामने चाणूर, मुष्टिक, शल, तोशल चार बडे-बडे जब वीर मारे गये, कंस तो यह देखकर के पागल हो गया, चिल्लाने लगा, मारो-मारो, पकड़ो-पकड़ो, जाने मत

Date:
Page: 109

⇒ देना, ये मेरे शत्रु हैं, इनको मार दो, जितने गोप इनके साथ आये हैं, इनका धन हरण कर लो, जिस नन्द ने इनका पालन पोषण किया है, इसको भी बंदी बना लो, क्यो कि इसने मेरे शत्रु का सहयोग किया है।

⇒ जब इस प्रकार कंस बड़बड़, बड़बड़ बोलने लगा तब भगवान ने दाऊ दादा से कहा अब इसे मार देना चाहिये।

⇒ भगवान् दौड़ पड़े मंच की ओर, जहाँ कंस बैठा था, कंस उठकर के कुछ सावधान होता, कोई प्रयास करता, लेकिन ये मौका भगवान् ने नही दिया। भगवान् दौड़कर के मंच पर चढ़ गये, और कंस के पास पहुँचकर एक थप्पड़ मारा, उसका मुकुट जाकर के दूर गिरा,

⇒ भगवान् ने कंस के केशों को पकड़कर उसे उठा लिया, कंस बोला भांजे श्री दर्द हो रहा है, छोड़ो मेरे केशों को, ठाकुर जी बोले मामा जी, जब आपने मेरी माँ देवकी के केशों को पकड़ा था, तब उन्हे दर्द नही हो रहा था क्या?

⇒ जाके पग नही फटी बिवाई।
सो कहा जाने पीर पराई ॥

⇒ बन्धुओ जबतक अपने पैर की बिवाई

Date:
Page: 110

⇒ नही फटती, तबतक हमे दूसरो की पीड़ा का अनुभव नही होता है।

⇒ भगवान ने कंस को उठाकर के मंच से अखाड़े मे फेंक दिया, कंस उठने की कोशिश करे, तबतक भगवान मंच से सीधे कूदे कंस की छाती पर, "भगवान कंस की छाती पर कूदे, इतने मे ही कंस का राम नाम सत्य हो गया, मर गया महाराज, मारना नही पड़ा भगवान को -

⇒ प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी अपने "भागवत चरित्र मे लिखते हैं, मामाजी बक-बक कर रहे थे, इतने मे भगवान दौड़ पड़े।

बक-बक मामा करत, तुरत हरि उछले ऊपर
लीन्ही चोटी पकड़, धम्म ते कूदे नटवर।
मामा नीचे गिरो, भांजो ऊपर आयों
प्रभुतन परसत तुरत परम पद मामा पायों ॥

चोटी पकड़ के कंस की छाती पर कूदे, इतने मे ही कंस की मृत्यु हो गई, और मामा जी को परम पद (मोक्ष) की प्राप्ती हो गई। इस प्रकार भगवान ने कंस का उद्धार किया,

⇒ मामा जी जब मर गये, भगवान खूब रोये, ठाकुर जी कम नाटकी नही हैं, सब नाटक

Date:
Page: 111

⇒ करना आता है इनको, कंस जब मर गया भगवान् उसकी छाती पर ही बैठकर उसकी छाती को पीट-पीटकर रोने लगे, अरे! मेरे मामा जी तो मर गये, मेरे मामा जी तो मर गये, मामा जी मुझसे कितना प्यार करते थे, मेरी खोज, खबर लेने के लिये, कभी पूतना मौसी को भेजते थे, कभी अघासुर को भेजते थे, मेरे मामा जी मुझे छोड़कर के चले गये।

⇒ अब तो भगवान् खूब नाटक करने लगे, सभी लोग भगवान् की इस लीला को देख रहे थे। भगवान् कहते मैं तो पहले से ही जानता था मंच इतना कमजोर बना हुआ हैं मैं तो मामा जी को बचाने के लिये मंच से लेकर के कूद गया, लेकिन मेरे मामा जी नही बचे। इतना बड़ा नाटक भगवान् ने क्यों किया?

⇒ क्यों कि कंस की यही योजना थी, कंस ने योजना बनाई थी, ये बड़े-बड़े पहलवान जब कृष्ण को मार देंगे, तब मैं नाटक करूगा, क्या नाटक करूगा, रोने का नाटक करूगा, अरे! ये मेरे भांजे कितने अच्छे थे ये तो क्रीड़ा करने आये थे, लेकिन ये तो मर गये मैं क्या करू? ये मेरे भांजे थे, कितने प्यारे थे, इस तरह रोकर के प्रजा को

Date:
Page: 112

⇒ मैं अपने अनुकूल कर लूगा, देवकी और बसुदेव को भी समझा दूंगा, और मेरा काम भी बन जायेगा।

⇒ भगवान ने कहा कंस मामा तुम बहुत चतुर हो, तुम्हारे नाटक को मैं कैसे उल्टा करता हूं देखो, तुम्हारे नाटक को तुम्हारे ऊपर ही लागू कर देता हूं मैं, भगवान ने कंस का वध कर दिया और स्वयं नाटक करने लगे, मेरे मामा जी तो मर गये, मेरे मामा जी तो मर गये।

⇒ कंस का उद्धार करने के बाद भगवान ने कारागार मे बन्द उग्रसेन को मुक्त कराया, महाराज उग्रसेन मथुरा के राजा बने।

⇒ इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने मामा जी का अन्तिम संस्कार सम्पन्न कराया। कृष्ण, बलराम दोनो ने मामा जी को कन्धा दिया, उनकी अर्थी उठाई और विधिपूर्वक संस्कार सम्पन्न कराया हैं।

⇒ भगवान ने नन्दबाबा और उनके साथ मे आये हुए गोपो से कहा, आप लोग जाओ, मुझे मथुरा मे रहकर बहुत काम करना है, मैं सारे कार्यो को पूर्ण करके आऊंगा आपसे मिलने, मेरी मैया से कहना, मैया चिन्ता न करे, मैं आऊगा, मेरी जितनी वस्तुए हैं वो शुरक्षित रखे, मेरे खिलौनें मेरी लाठी, मेरी कामरी मेरी वंशी, मैं लौटकर अवश्य आऊगा। यह सब कहकर के समझाकर

Date:
Page: 113

के, भगवान ने अपने परिजनो और नन्दबाबा को बिदा किया। ठाकुर जी की लीला बड़ी मधुर है, और बड़ी करुण भी है। भगवान से बिदा लेकर नन्दबाबा वृन्दावन आये, यशोदा ने पूछा अकेले आये, मेरा कृष्ण कहाँ है? नन्दबाबा

रो, रो.कर के मथुरा की सारी घटना का वर्णन करते हैं। मैया यशोदा नन्दबाबा के मुख से सारी घटना सुनकर के अत्यन्त दुःखी होती हैं। फिर तो उसी दिन से मैया यशोदा का हँसना भी बन्द हो गया, कृष्ण की एक - एक वस्तुओं को देखकर हृदय से लगाती और रोती, कृष्ण का स्मरण करती।

⇒ ब्रज की गोपियाँ, श्री राधा रानी कृष्ण का स्मरण करके दुःखी होती, वृन्दावन से मथुरा की दूरी कोई ज्यादा नही थी, आज भी वृन्दावन से मथुरा की दूरी 12 किलोमीटर हैं। उस जमाने मे तो

१२ किलोमीटर तो कुछ भी नही, लोग २० किलोमीटर भी पैदल चलकर के चले जाते थे। ब्रज की गोपियाँ यदि चाहती तो नित्य मथुरा जाकर के कृष्ण से मिलकर के आ सकती थी,

⇒ लेकिन कृष्ण मथुरा आ गये, ब्रज की गोपियाँ कृष्ण से मिलने नही गयी, क्यो मिलने नही गयी?

⇒ गोपियों ने विचार किया, अगर मेरे कृष्ण को मथुरा मे ही रहकर के सुख हैं, तो

कृष्ण वही सुखी रहे, मैं दुःख का अनुभव कर लूगी, लेकिन कृष्ण के सुख मे, मैं बाधक नही बनूगी, कृष्ण के सुख मे मैं बाधक

Date:
Page: 114

→ बनू यह ठीक नही हैं, अपने प्रियतम के सुख मे ही अपना सुख देखना, यह प्रेम की सर्वोच्च स्थिति हैं। ब्रज की गोपियों की यही स्थिति है।

→ भगवान् मथुरा मे अपने माता पिता के साथ रहते, अब तो इनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, विद्या अध्ययन के लिए उज्जैन मे सांदीपनि मुनि के आश्रम मे भगवान गये, सांदीपनि मुनि के आश्रम मे रहकर के 64 दिनो मे भगवान ने समस्त विद्याओं को प्राप्त कर लिया, भगवान् को क्या पढ़ना हैं, यह तो भगवान् का कौतुक हैं।

चौ० (1) गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई।

अलप काल बिद्या सब आई॥

(2) जाकी सहज स्वास श्रुति चारी।

सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी॥

⇒ चारो वेद भगवान का स्वास हैं, समस्त विद्याएं भगवान की बुद्धि मे स्वतः प्रतिष्ठित है, समस्त विद्याओं के आश्रय भगवान हैं उनको क्या पढ़ना, लेकिन लीला हैं, मर्यादा की स्थापना के लिये भगवान गुरुकुल मे पढ़ने जाते हैं,

→ अध्ययन पूर्ण करके जब भगवान् चलने लगे तो सांदीपनि जी की पत्नी अर्थात् भगवान की गुरुमाता जो थी, वो दुःखी हो गयी, गुरुमाता

Date:
Page: 115

ने कहा कृष्ण तुम चले जाओगे, मुझे बहुत दुःख होगा भगवान् ने कहा माँ, कितने विद्यार्थी गुरुकुल मे आये और अध्ययन करके चले गये, वैसे मै भी चला जाऊगा, गुरु माँता ने कहा कृष्ण अन्य विद्यार्थीयों और तुम मे बहुत अन्तर हैं, अन्य विद्यार्थी आये और चले गये, लेकिन तुमको मैंने जबसे देखा, तबसे मुझे कभी भी अपने पुत्र की याद नही आई, भगवान ने कहा आपके पुत्र?

⇒ गुरु माँता ने कहा- हाँ मेरा पुत्र समुद्र मे स्नान करने गया था, और डूबकर के मर गया, मैं अपने पुत्र की याद मे दुःखी रहती थी, लेकिन कृष्ण जबसे तुम आये गुरुकुल मे, तुम्हे देखकर के मुझे अपने पुत्र की याद कभी नही आई। लेकिन अब गुरुकुल से तुम जाओगे तो मुझे अपने पुत्र की याद आयेगी, भगवान ने कहा यदि ऐसी बात हैं माँ तो मैं आपके पुत्र को आपकी गोद मे देकर के ही यहाँ से जाऊगा, यही मेरी गुरुदक्षिणा होगी, भगवान् समुद्र के समीप गये और समुद्र से कहा, तुमने मेरे गुरु के पुत्र को ग्रहण कर रखा हैं, समुद्र ने कहा नही मेरे पास नही हैं, लेकिन मेरे समुद्र के अन्दर मेरे गर्भ मे एक पंचजन नाम का असुर रहता हैं, हो सकता है उसने आपके गुरु पुत्र का भक्षण कर लिया हो, अब यह तो आप ही पता लगा सकते हैं, कि आपके गुरु पुत्र के साथ क्या हुआ हैं।

Date:
Page: 116

⇒ भगवान समुद्र के अन्दर गये, और जाकर के उस पंचजन असुर को ढूढ़ा, पंचजन नाम के असुर को पकड़कर के, (जो शंख के आकार का था) भगवान जब गये, तो वह शंख के खोली मे घुस गया, और उसका जो कवच था, वो बड़ा मजबूत था, भगवान ने पकड़ा, उठा लिया उस पंचजन दैत्य को, और उसके शरीर के अन्दर अपनी उगलियों को डालकर के खींचकर के उसे निकाल लिया और खींचकर के उसे मार दिया।

⇒ वहाँ भी भगवान को गुरु पुत्र नही मिले, फिर उस शंख को भगवान ने समुद्र के जल मे धुलकर उसी शंख को बजाते हुये भगवान वहाँ से यमराज की पुरी के लिये चल पड़े, भगवान कहते अब यमपुरी मे जाकर ढूढूगा, आखिर मेरे गुरु पुत्र हैं कहाँ? जब यमपुरी मे भगवान पहुँचे, यमराज के लोक मे शंख बजाते हुए भगवान पहुँचे, भगवान ने जब शंखध्वनि की तो भगवान की शंखध्वनि से यमराज की पुरी मे नर्क की यातनाए भोग रहे, सारे पापी जीव मुक्त हो गये, और भगवान के धाम चले गये, जो तेल के कढ़ाई मे खौल रहे थे, उनको यातनाए दी जा रही थी, भगवान ज्यो ही नर्क मे पहुंचे और शंख बजाया, जितने जीवात्मा पाप भोग रहे थे, सब वही से दिव्य

Date:
Page: 117

रूप धारण कर, कर के भगवत धाम चले गये यमराज ने आकर के भगवान को प्रणाम किया, यमराज ने कहा भगवन आपने बड़ी कृपा की, मेरी पुरी को आपने कृतकृत्य कर दिया, पवित्र कर दिया, भगवान ने कहा मैं अपने गुरु पुत्र को लेने आया हूँ, यमराज ने गुरु पुत्र को भगवान को सौंप दिया।

⇒ भगवान गुरु पुत्र को लेकर के आये और अपने गुरु जी को सौंप दिया, जिस प्रकार से, जिस रूप मे, जितनी अवस्था में गये थे गुरु जी के पुत्र, उतनी ही अवस्था के, उसी रूप मे लाकर के यथावत प्रस्तुत कर दिये, ये भगवान की असम्भव लीला हैं। सम्भव नही हैं, कि कोई ऐसा कर सके। लेकिन भगवान के लिये, सब सम्भव हैं, अघटित घटना पटीयसी भगवान की माया का चमत्कार, गुरुपुत्र को लाकर गुरु जी को सौंप दिया, गुरुमाता और गुरुदेव प्रसन्न हो गये।

⇒ उज्जैन से लौटकर भगवान मथुरा आये, और मथुरा मे रहने लगे, वसुदेव जी, देवकी मैया ठाकुर जी को बहुत प्रेम देती, किन्तु भगवान का मन मथुरा में नही लगता, ठाकुर जी

⇒ को मैया यशोदा, नन्दबाबा, ब्रजगोपियों की बहुत याद आती है।

⇒ माता देवकी सुबह-सुबह ठाकुर जी के लिये रोटी, सब्जी बनाकर के लाती हैं, किन्तु ठाकुर जी उस भोजन को नही पाते हैं, ठाकुर जी को तो मैया यशोदा के हाथ की माखन रोटी

Date:
Page: 118

⇒ याद आ रही हैं, भगवान अपनी मैया यशोदा की याद करके बहुत रोते हैं, माँ पुत्र का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए ? ये श्री कृष्ण भगवान से सीखिए भगवान जन्म देने वाली माता से भी अधिक प्रेम, पालने वाली माता यशोदा से करते हैं।

⇒ आजकल के बच्चे तो एक माँ को भी नही पाल पाते अच्छे से, जब तक माँ जिन्दा रहती तब तक तो बच्चे उनकी कद्र नही करते, और जब वह इस दुनियां को छोड़कर के चली जाती हैं, तो मातृ दिवस पर फोटो अपलोड़ करके माँ के प्रति प्रेम प्रकट करते हैं।

⇒ यदि आप गृहस्थी हैं, तो माता, पिता ही आपके भगवान हैं, इसलिये जब तक वो जीवित हैं, पूर्ण निष्ठा के साथ उनकी सेवा करो।

किसी शायर ने कहा -

① पके फल पेड़ो से रिश्ता तोड़ जाते हैं।

बूढ़े माँ, बाप हो जाये तो बच्चे छोड़ जाते हैं॥

⇒ जिस माँ ने तुम्हे नौ महीने अपने उदर मे रखा उसी को तुम अनाथालय छोड़ आते हो, एक माँ चार बच्चो को पाल लेती, किन्तु उन चार बच्चो से एक माँ पाली नही जाती।

⇒ माँ की दुआ कभी खाली नही जाती,
और इसकी बात तो भगवान से भी टाली नही जाती,
बर्तनों को मांजकर के चार बेटों को पाल लेती हैं एक माँ
और बहु आने के बाद, उन चार बेटों से एक माँ पाली नही जाती

Date:
Page: 119

⇒ जिनके साप उनकी माँ हैं, वह बहुत भाग्यशाली हैं जिनकी माँ अपने बच्चो को छोड़कर इस संसार से चली गयी उनसे पूछो जब माँ छोड़कर चली जाती हैं तो कैसा लगता हैं।

⇒ एक बालक अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था, उसकी माँ बहुत बीमार रहती थी, एक दिन उसकी माँ उसको छोड़कर के चली जाती है। तब वह अपनी माँ की याद करके बहुत रोता हैं, और अपनी माँ की याद मे कुछ पक्तियाँ प्रस्तुत करता हैं

-! शायरी !-

⇒ न जाने कैसे - कैसे ख्वाबों मे खो जाते थे हम
कोई डाँट भी देता था, तो रो जाते थे हम।
आज तो नींद की गोलिया खा कर के भी नींद नही आती
पहले एक माँ की लोरी मे सो जाते थे हम॥

-! गीत !-

हो किस्मत वाले बच्चो तुम, माँ से दूर न हो जाना
गयी छोड़कर जब माँ मुझको, तब मैंने यह पहचाना।
खुद रोती रहती थी वो, मुझको हंसना सिखाया करती थी
कृष्ण कन्हैया लल्ला कहके, गोदी मे सुलाया करती थी।

(1) नटखट था बचपन मे जाने कितनी शरारत करता था,
पापाजी का गुस्सा मेरी माँ को सहना पड़ता था
भोला और नादान बताके, मुझको बचाया करती थी

कृष्ण कन्हैया लल्ला कहके - - ——

Date:
Page: 120

(2) नेहला धुला कर साथ मे मुझको स्कूल लेकर जाती थी
नजर लगे न मेरे लाल को, काला टीका लगाती थी
कुछ बन जाऊं पढ़ लिखकर मैं, सपने सजाया करती थी
कृष्ण कन्हैया लल्ला कहके - - -
जब माँ छोड़कर चली गयी तब-

(3) अब उसकी यादें ही रह गयी,
प्रेम को आज तरसता हूँ
औरों की माँओं मे अपनी
माँ को देखा करता हूँ
कौन सुलाए लोरी गाकर
जैसे वो सुलाया करती थी
कृष्ण कन्हैया लल्ला कहके - - -

⇒ आजकल अधिकांश यह सुनने मे आता हैं बच्चो ने अपने माँता, पिता को घर से बाहर निकाल दिया, अनाथालय छोड़ आये, याद रखना, तुम जैसा अपने माँता, पिता के साथ करोगे वैसा ही तुम्हारे बच्चे तुम्हारे साथ करेगे।

उदाहरण ⇒ एक मैया थी। उनका एक ही बेटा था, मैया अपने बेटे से बहुत प्रेम करती थी। बेटा जब बड़ा हो गया, तो मैया ने सुन्दर लड़की देखकर उसके साथ अपने पुत्र का विबाह कर दिया।

Date:
Page: 121

⇒ कुछ दिनो तक सबकुछ ठीक चलता रहा, जब मैया के घर मे एक वर्ष बाद एक बच्चे का जन्म हुआ तो मैया अपने नाती को देखकर बहुत प्रसन्न हुयी, धीरे-धीरे नाती भी दस वर्ष का हो गया।

⇒ एक दिन मैया की बहु ने अपने पति से कहा, देखो जी, मै तुम्हारी मॉंता जी से बहुत तंग आ चुकी हो, इसलिये आज से इस घर मे या तो मै रहूंगी, या तुम्हारी मॉंता जी।

⇒ उसके पति ने कहा मॉं वृद्ध हैं, ऐसी अवस्था मे उन्हे घर से कैसे निकाल सकते हैं? पत्नी ने कहा मै कौन सा कह रही हूँ घर से निकालने को, मै तो उन्हे अनाथालय भेजने की बात कह रही हूं।

⇒ पति ने कहा लेकिन हम मैया को क्या बताकर के अनाथालय छोड़कर आयेगे?

⇒ पत्नी बोली देखो मॉंता जीकोवैसे भी दिखता नहीहैं इसलिये हम लोग मैया से कहेगे आपको कही घुमाने ले चल रहे हैं, और इसी बहाने अनाथालय छोड़ आयेगे।

⇒ सुबह हुयी, बहु ने कहा मॉंता जी चलो आज आपको कही घुमाने ले चलते हैं, भोली मॉं बहु और बेटे के साथ चल देती हैं। तभी मैया का 10 वर्ष का नाती कहता हैं, दादी-दादी मैं भी चलूंगा

Date:
Page: 122

⇒ आपके साथ, अब मैया, अपने नाती को साथ लेकर बेटा और बहु के साथ चल देती हैं।

⇒ अनाथालय के द्वार पर पहुँचकर बहु कहती हैं लो आ गये जहाँ घूमने आना था। इतने मे वह दस वर्ष का बालक कहता माँ यह तो, तबतक माँ कहती अरे चुप रह, बच्चा शान्त हो जाता हैं।

⇒ बहु अपनी मैया से कहती मैया मुझे कुछ कार्य याद आ गया हैं, इसलिये मैं उसको पूर्ण करने जा रही हूँ, तब तक आप यही बैठना, इतना कहकर के वह अपनी मैया को अनाथालय की सीढ़ियों पर बैठाकर अपने पति और बच्चे को साथ लेकर वहाँ से चली जाती हैं और फिर लौटकर अपनी मैया को वापिस लेने कभी नही आती हैं।

⇒ दस वर्ष का वह छोटा सा बच्चा सबदेख रहा था कि मेरे माँता, पिता ने मेरी दादी के साथ क्या किया। एक दिन जब इस बच्चे के माँ, बाप वृद्ध हो जाते हैं, तो यह भी उन्हें अनाथालय छोड़ आता हैं, तब उन्हे अपनी मैया के साथ किए गए दुर्व्यवहार पर बहुत पछतावा होता हैं।

⇒ इस दृष्टान्त से हमे यह शिक्षा मिलती हैं, कि हम जैसा व्यवहार हमने माँता, पिता के साथ करते हैं वैसा ही व्यवहार हमारे बच्चे हमारे साथ करते है। हमारे माँता, पिता ही हमारे भगवान हैं इसलिये हमे उनकी सेवा पूर्ण निष्ठा के साथ

Date:
Page: 123

⇒ करनी चाहिए, सारे तीर्थ और धाम तुम्हारे माँता, पिता के चरणो मे ही है, इसलिये जबतक माँ, पिता जीवित है, उनकी सेवा करे।

⇒ आज भगवान् अपनी मैया, और ब्रजवासियों की याद करके रुदन कर रहे थे, तभी वहाँ पर उद्धवजी आ जाते हैं।

शुकदेव जी कहते - राजन् परीक्षित !

श्लोक - वृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा।
शिष्यो बृहस्पतेः साक्षादुद्धवो बुद्धिसत्तमः ॥

⇒ उद्धव जी वृष्णिवंशियों मे प्रधान पुरुष थे। और बृहस्पतिजी के शिष्य थे। जब उद्धव जी ने भगवान श्री कृष्ण को रोता हुआ देखा, तब उन्होंने पूछा, मित्र तुम इतने दुःखी क्यों हो ? क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं ?

⇒ तब भगवान् उद्धव जी से कहते हैं -

-: पद :-

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही।
हंससुता की सुन्दर कलरव, अरु तरुवर की छाँही
वे सुरभी वे बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, नाचत दै गलबाहीं
यह मथुरा कंचन की नगरी, मणि-मुक्ता जह माही

Date:
Page: 124

⇒ जबहिं सुरति आवति वा सुख की
जिय उमगात तन नाहीं
ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाही - - -

⇒ ऐसा वर्णन किया भगवान्ने उद्धव जी के सामने कि उद्धव जी आश्चर्यचकित रह गये, कैसा होगा वो ब्रज जिसको गोविन्द इतने भाव के साथ याद करते हैं।

⇒ भगवान् बोले मित्र अब मेरा एक कार्य तुम ही कर सकते हो, तुम जाओ, ब्रजवासियों को ऐसा उपदेश देकर समझाओ कि सब निर्गुण निराकार ब्रह्म मे अपने मन को लगाकर समाहितचित्त हो जाये, क्यों कि वो जब तक मुझे याद करते रहेगें, मेरा मन बार-बार ब्रज की ओर जाता रहेगा, इसलिये तुम उन्हे समझाकर आओ।

⇒ भगवान् कहते उद्धव जब तुम वृन्दावन जाओगें तो तुम्हे वहाँ पर मेरी मैया यशोदा मिलेगी, जब मेरी माँ यशोदा तुमसे मेरा हालचाल पूछे तो तुम मेरी तरफ से उनको यह बोल देना -

:- पद :-

ऊधौ मेरी मैया से कहिओ जाय
तेरो श्याम दुःख पावे।

(1) कोई न खवावें मोहे माखन रोटी
जल अचरान करावे।
माखन मिश्री नाम जाने
कनुआ कहि न बुलावें॥
ऊधौ मेरी मैया से कहियों जाय - - -

Date:
Page: 125

(2) बाबा नन्द अंगुरिया गहि - गहि
पायन चलिबो सिखायो
पकौ जान कन्हैया मेरो
गोद उठावो और हृदय से लगावे ।।
ऊधौ मेरी मैया से - - - - - -

⇒ उद्धव जी मन मे विचार करने लगे, मैं जब अपना वैदुष्य पूर्ण वक्तव्य दूंगा, तो कौन समझेगा वहाँ पर, पर प्रभू की आज्ञा है, तो अवज्ञा करना ठीक नही, तो चले जाते हैं वृन्दावन, अभी समझाकर आ जाते हैं। उद्धव जी जब चले तो भगवान् ने अपना पीताम्बर उढ़ा दिया,

⇒ सूर्यास्त के समय पीताम्बर ओढ़े हुये उद्धव जी का आगमन वृन्दावन मे हुआ, गोधूलि वेला थी, गायों के घर वापिस आने की वजह से इतनी धूल उड़ रही थी कि उद्धव जी का रथ धूल से ढ़क गया किसी को रथ नजर ही नही आया, नन्दद्वार पर रथ स्थापित करके उद्धव जी जैसे ही नन्दभवन के भीतर प्रवेश किए नन्दबाबा की दृष्टि पीले पीताम्बर पर पड़ गयी

⇒ पीला पीताम्बर देखकर नन्दबाबा को भ्रम हो गया, उन्हे लगा मेरा श्यामसुन्दर आ गया -

श्लोक - नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वासुदेवधियार्चयत् ।

⇒ नन्दबाबा दौड़कर उद्धव जी के समीप गये और कृष्ण की भावना से उद्धव जी को गले से लगा लिया। पर उद्धव जी ने जब अपना नाम लेकर प्रणाम किया, तब नन्दबाबा सावधान हुए पर कन्हैया की हर वस्तु प्यारी लगती हैं।

Date:
Page: 126

⇒ नन्दबाबा बोले मेरा कन्हैया नही आया कोई बात नही परन्तु उसका सन्देश लेकर के उसका सखा तो आया, नन्दबाबा ने उद्धव जीसे **कुशल** मंगल पूछा, सारी रात्रि नन्दबाबा उद्धव जी से चर्चा करते रहे।

⇒ कृष्ण कैसा हैं? उसे कभी हमारी याद आती हैं कि नही, भाव विह्वल होकर के नन्दबाबा गदगद कंठ हो जाते हैं। यशोदा मैया की वाणी से तो एक शब्द नही निकलता, कृष्ण नाम मुख से निकलते ही अत्यन्त भाव विह्वल हो जाती हैं, और उन्हे सदा यही स्मरण में रहता है कि कृष्ण अन्तःपुर मे विश्राम कर रहे हैं, अभी माखन खाकर सोये हैं, और उसी भाव में सदा डूबी रहती हैं।

⇒ सारी रात्रि बातो-बातो मे कैसे बीत गयी, पता ही नही चला, उद्धव जी ने बहुत समझाया, इतने मे गोपियों को पता चला कि कोई आया है, तो रथ को घेरकर खड़ी हो गयी, अरे ये रथ तो वही है जिसमे बैठकर हमारे श्यामसुन्दर मथुरा गये थे।

⇒ लगता हैं अक्रूर फिर से आ गया, तबतक उद्धव जी यमुना स्नान करके प्रातःकाल लौट रहे थे, उन पर दृष्टि गयी, गोपियों ने उद्धव जी को चारो तरफ से घेर लिया, अरे ये तो बिल्कुल हमारे प्रियतम जैसा ही है, कौन है यह? जब उद्धव जी ने गोपियों से कहा मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे गोविन्द का सन्देश लेकर आया हूँ, फिर तो गोपियों ने प्रश्नो की झड़ी लगा दी, मेरे लिये गोविन्द ने क्या सन्देश भेजा हैं? मेरे लिये गोविन्द ने क्या कहा?

Date:
Page: 127

→ एक गोपी ने भगवान् कृष्ण के द्वारा भेजा हुआ पत्र पढ़ा-

आओ सखी पाती सुनौ
यह जो लिखी ब्रजराज।
योग करौ भूषण तजौ
लिखत न आई लाज॥

⇒ अन्य गोपियाँ बोली कृष्ण बहुत निर्मोही हैं, इतने दिन बाद हमारी याद की, फिर भी स्वयं न आकर के पत्र भेज दिया।

⇒ तब तक एक सखी बोली इसमे श्री कृष्ण का कोई दोष नही, दोष तो हमारा है।

निर्मोही नन्दलाल हैं
मोही दशरथ लाल।
वे ढूढ़त वन-वन फिरे
इन त्यागी ब्रजबाल॥

⇒ श्री कृष्ण तो निर्मोही हैं, उन्हे किसी से प्रेम नही, यह बात जानते हुये भी हमने उनसे प्रेम किया, देखो आज हमारा दुःख सुनने के लिये वो पास भी नही हैं, कृष्ण आयेंगे यह विचार करके मार्ग निहारते, निहारते आँखे भी थक गयी हैं।

अखियाँ भी झीनी परी
पंथ निहार, निहार
जीवड़िया छाले परे
कृष्ण पुकार, पुकार

Date:
Page: 128

⇒ एक गोपी बोली छोड़ बहिन वो तो कुब्जा के प्रेम मे हमसबको भूल गया होगा।

⇒ एक गोपी बोली, कन्हैया ब्रज को छोड़कर के तो ऐसा भागा हैं, जैसे जंगल मे आग लगने पर सारे जंगली जानवर वन छोड़कर भाग जाते हैं।

⇒ एक गोपी बोली कन्हैया ऐसे भागा हैं जैसे फल हीन वृक्ष से पक्षी सब उड़ जाते हैं।

⇒ एक गोपी बोली जैसे भोजन करके अतिथि चले जाते हैं, एक बोली जैसे दक्षिणा लेकर ब्राह्मण चले जाते हैं, एक बोली जैसे अध्ययन करके विद्यार्थी चले जाते हैं, एक बोली जैसे धनहीन पुरुष को वैश्या छोड़कर चली जाती हैं एक बोली जैसे पुष्प का पराग लेकर भौंरा उड़कर के चला जाता हैं। हजारो उदाहरण दे दिए गोपियों ने।

⇒ इतने मे एक भौंरा उड़ता हुआ आया और किशोरी जी के चरणो मे आकर बैठ गया, उस भ्रमर को देखकर गोपियों ने आपस मे ऐसे बात करना प्रारम्भ कर दिया, मानो, उद्धव के हृदय मे उठने वाले प्रश्नों का उत्तर दे रही हैं।

Date:
Page: 129

⇒ इसी को भागवत मे भ्रमर गीत कहते हैं।
⇒ इस भ्रमर गीत को केवल एक गोपी ने गाया, और यह गोपी कोई और नही स्वयं राधा रानी हैं, राधा रानी ने स्वयं इस भ्रमर गीत को गाया।

श्लोक- मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥

⇒ भ्रमर को देखकर गोपियाँ कहती हैं, काला भौंरा अर्थात् कृष्ण, अरे! भौंरे तू निश्चित ही कृष्ण के द्वारा भेजा गया उनका दूत हैं, यहाँ क्या कर रहा हैं? तेरी मूछों पर जो कुंकम लगा हैं न हमे पता हैं, ये मथुरा की गोपियों के चरणो का कुंकम है। क्यों कि आजकल कृष्ण मथुरा की गोपियों के संग विहार करता होगा, भ्रमर तू जैसा, वैसा ही तेरा मित्र, तू एक पुष्प से रस लेता हैं और, रस लेने के बाद उस पुष्प को छोड़ देता हैं, दूसरे पुष्प के पास चला जाता हैं। ऐसा ही तेरा कन्हैया हैं, कल तक हम सब ब्रजबासियों के पास था, हमें छोड़कर अब मथुरावासियों के पास चला गया। हालचाल तक पूछने नही आता

Date:
Page: 130

⇒ उसके बिना हम कैसे जी रही हैं। और तेरा जो कन्हैया है न, आज का नही पिछले जन्म का भी कपटी हैं। उसके पिछले जन्मो की भी कथा हमको पता हैं, वो कितना बड़ा कपटी हैं।

गोपियां कहती हैं-

श्लोक- मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा
स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।
बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वांक्षवद् य-
स्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः ॥

⇒ गोपियां कहती हैं, तेरा वो कृष्ण इस जन्म मे कपटी बना ऐसा नही, पहले भी कपटी था। कब था?

⇒ गोपियां कहती त्रेता मे जब यह राम बनकर के आया तो छुपकर के बाली को मार दिया, क्या बिगाड़ा था उसने? छुपकर के बाण मार दिया उसको, और तो और विवाह करने के लिए आई थी सूर्पणखा उसके नाक, कान कटवा दिए, स्वयं तो उसके साथ विवाह किया नही, और उसको किसी दूसरे के साथ विवाह करने लायक छोड़ा भी नही, राजा बलि, उसके यहाँ वामन बनकर के पहुँच गया कन्हैया, और वहाँ जाकर राजा बलि से कहता मुझको तो तीन पग भूमि चाहिए, और जैसे ही उसने संकल्प

Date:
Page: 131

⇒ किया तो विराट बन गया, दो पग से तीनो लोक नाप लिये, और कहने लगा तीसरा पग दो नही तो नर्क जाना पड़ेगा, आज का कपटी थोड़ी हैं कन्हैया, ये तो जन्मजन्मान्तर का कपटी हैं।

⇒ ये कितव कहने का सामर्थ्य गोपियों मे भी नही हैं। ये कितव कहने का सामर्थ्य केवल किशोरी जी मे हैं। ये शब्द केवल किशोरी जी कह सकती हैं ठाकुर जी से।

⇒ हमारे ब्रज मे एक पद गाते हैं-

ऊधौ मत अइयो समझाने-2
जाके कांटा लगे वो ही जाने-2

(1) जाय बसे हो दूर बिरज से
भेजत हो संदेशा
हम गोपी नित राह तकत है
सूख गये मोरे नैना
बैरी पीर नहीं पहचाने, 2
जाके कांटा लगे वो ही जाने

(2) छोड़ गए हो नन्द दुलारे
राधा को सांवरिया
श्यामा, श्यामा, रटते, रटते
हो गई मैं बावरिया

Date:
Page: 132

पथराई मैया की अँखियाँ रे -2
जाके कांटा लगे वो ही जाने — —

③ मोर मुकट वैजन्तीमाला
दीजियो उसको जाये
कहियो अंसुवन जल सो यमुना
खारी न हो जाये
कोई भी मत अइयो समझाने -2
जाके कांटा लगे वो ही जाने — — —

⇒ उद्धव जी मौन होकर गोपियों की बात सुन रहे हैं। एक गोपी कहती अरे! कल तो मैं यमुना जल भरने जा रही थी, इतने मे ही श्याम सुन्दर पीछे से आये और कंकड़ फेंककर मारा, मेरी मटकी फूट गयी, सारा जल मेरे ऊपर आ गया, मैं कृष्ण के पीछे - पीछे भागी, तो मुझसे बोले आज तू स्नान करके नही आयी, इसलिये तेरी मटकी फोड़कर तुझे स्नान करा दिया। मैं पीछे - पीछे दौड़ी, जैसे ही कन्हैया के हाथ पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, इतने मे मेरी आँख खुल गयी, मैं तो स्वप्न देख रही थी, सभी गोपियाँ अपने अपने स्वप्न बता रही हैं। तभी एक गोपी बोलती हैं किशोरी जी आपको स्वप्न मे नही आते ठाकुर जी ? किशोरी जी हँसने लगी, किशोरी जी गोपियों से

Date:
Page: 133

⇒ कहती तुम लोग बहुत सौभाग्यशाली हो, कि तुम्हारे स्वप्न मे कृष्ण आता हैं, लेकिन जिस दिन से कन्हैया ब्रज छोड़कर गये न, मेरी नींद भी अपने संग मे ले गये, मुझे नींद ही नही आती, तो स्वप्न कहाँ से आयेगें।

⇒ ये सब चर्चाएं उद्धव जी सुन रहे हैं। सुनते-सुनते छः महीने बीत गए, छः महीने बाद जब उद्धव जी से रहा नही गया, तो भगवान पर क्रोध करने लगे, बोले अभी जाता हूँ, भगवान को पकड़कर के लाता हूँ, यही वृन्दावन में छोड़ूगा उनको लाकर के,

⇒ उद्धव जी आए तो इस भाव से थे कि गोपियों को ज्ञान का पाठ पढ़ाकर समझायेंगे, किन्तु जब उद्धव जी ने गोपियों की दशा देखी, गोपियों के मन मे भगवान कृष्ण के प्रति जो प्रेम हैं, उसको देखा तो उद्धव जी अपना ज्ञान भूल गये और स्वयं प्रेम के रंग मे रंगकर गोपियों की प्रशंसा करने लगे।

⇒ उद्धव जी कहते हैं, न जाने कितने लोग शरीर धारण करके आये और चले गये किन्तु इन गोपियों का मनुष्य शरीर धारण करना श्रेष्ठ (सफल) हैं। बड़े-बड़े मुनियों महापुरुषो, भक्तजनों को भी प्रेम की जिस ऊँची

Date:
Page: 134

⇒ स्थिति की चाह (लालसा) होती है, वह प्रेम की ऊँची स्थिति इन गोपियों को प्राप्त हो गयी, गोपियाँ सर्वात्मा भगवान् श्री कृष्ण के परम प्रेममय दिव्य महाभाव में स्थित हो गयी, गोपियों की दशा देखकर उद्धव जी अपना सारा ज्ञान भूल गये और प्रेम के रंग मे रंग गए।

⇒ उद्धव जी बोले गोपियों जिसे तुम प्रेमी समझ रही हो वो ब्रह्म हैं।

चौ. ① बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना।

कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥

② आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥

⇒ ब्रह्म बिना पैरों के चलता, बिना कानों के सुनता हैं। बिना हाथ के नाना प्रकार के कर्म करता हैं। बिना मुंह के सभी रसो का स्वाद लेता हैं और बिना वाणी के योग्य वक्ता हैं।

⇒ इसलिए गोपियों ये प्रेम छोड़कर ब्रह्म की प्राप्ति के लिए योग करो।

⇒ गोपियाँ उद्धव जी से कहती हैं- आप कह रहे हैं कृष्ण ब्रह्म हैं, बिना हाथ, पैरों के कर्म करता हैं। किन्तु हम गोपियों ने आपके ब्रह्म को गोकुल और वृन्दावन की गलियों मे

Date:
Page: 135

⇒ नाँचते, गाते देखा हैं। थोड़े से छाछ के कारण ठुमका लगाते देखा हैं।

⇒ गोपियों ने उद्धव जी से कहा क्या योग करने से तुम्हारा ब्रह्म दर्शन देगा, उद्धव जी बोले योग करके तो देखो, ध्यान लगाकर के देखो, ब्रह्म के दर्शन अवश्य होगें।

⇒ गोपियों ने योग किया, ध्यान लगाया, किन्तु गोपियों को ब्रह्म के दर्शन नही हुए, गोपियों ने उद्धव जी से कहा तुम्हारा ब्रह्म सूखा हैं। मेरा कृष्ण रस से भरा हैं।

⇒ गोपियाँ कहती हैं-

श्याम तन श्याम मन, श्याम ही हमारो धन
आठों याम ऊधौ हमें श्याम ही सो काम हैं
श्याम हिय श्याम जिय श्याम बिनु नाय पिय
अंधरे की सी लाकरी अधार श्याम नाम हैं
श्याम मति श्यामगति श्याम ही हैं प्राणपति
श्याम सुखदाई सौ भलाई शोभा धाम हैं
ऊधौ तुम भये बौरे, पाती लैकें आये दौरे
योग कहा राखै यहां रोम रोम श्याम हैं।

⇒ गोपियाँ कहती उद्धव तुम कह रहे हो हम अपने मन को ब्रह्म मे लगाये, किन्तु हमारा मन तो हमारे पास मे है, ही नही तो हम अपने मन को ब्रह्म मे कैसे लगाए?

Date:
Page: 136

ऊधौ, मन न भए दस बीस

(1) एक हुतो सो गयौ श्याम संग
को अवराधै ईश ॥

ऊधौ मन न — — — — —

(2) सिथिल भईं सबहीं माधौ बिनु
जथा देह बिनु शीश
स्वासा अटकिरही आसा लागि,
जीवहिं कोटि बरीस ॥

ऊधौ — — — — — —

(3) तुम तौ सखा श्यामसुन्दर के
सकल जोग के ईश।
सूरदास, रसिकन की बतियां
पुरवौ मन जगदीश

ऊधौ मन न भए — — — —

⇒ गोपियों के मुख से इस प्रकार श्रवण करके उद्धव जी प्रसन्न हो गये।

ऊधौ सूधो है गयो
सुन गोपिन के बोल।
ज्ञान बजायो डुगडुगी
प्रेम बजाये ढोल॥

Date:
Page: 137

⇒ गोपियों से चर्चा करते - करते छः महीने बीत गए, छः महीने बाद जब उद्धव जी ठाकुर जी के पास पहुंचे, ठाकुर जी को जाकर के खरी खोटी सुनाने लगे, बोले क्या बिगाड़ा था ब्रजवासियों ने, छोड़कर चले आये हो, यशोदा मैया की हालत देखी, राधारानी की हालत देखी, अरे क्या रखा हैं यहाँ मथुरा मे, क्या रखा हैं पूरे विश्व मे ब्रह्माण्ड मे, वैकुण्ठ मे, आप तो वृन्दावन चले जाओ, उनके प्रेम को देखो, ठाकुर जी उद्धव जी की बाते सुनकर हंसने लगे, ठाकुर जी बोले उद्धव ये तेरी भाषा हैं? तू बोल रहा हैं। बड़ा - बड़ा ज्ञान देकर के गया था, मुझको, प्रेम नाम की कोई वस्तु नही होती हैं, प्रेम किसी पर कोई प्रभाव नही डालता, आप परमात्मा हो, आप कैसे प्रेम मे बंध सकते हो? अब तू खुद बंध गया।

⇒ उद्धव जी चरणों मे गिर गये, मुझे क्षमा कर दो लेकिन अब आप यहाँ मत रुको, आप अभी वृन्दावन चलो, ठाकुर जी बोले उद्धव नेत्र बन्द करो, उद्धव ने नेत्र बन्द किए, ठाकुर जी बोले अब खोलकर देखो, उद्धव जी ने जैसे ही नेत्र खोल कर देखा, तो श्री राधा रानी और समस्त गोपियाँ, ठाकुर जी के संग वही प्रगट हो गई, और प्रगट होकर के उद्धव को दर्शन दे दिए, उद्धव जी महाराज अपना सिर पकड़कर के बैठ गए, बोले मेरे साथ क्या हो रहा हैं, मुझे कुछ समझ मे नही आ रहा हैं, भगवान् बोले देखो ये ब्रजवासी और मेरे से प्रेम करने

Date:
Page: 138

⇒ बाले मुझसे कभी दूर नही रह सकते, जो प्रेम को नही समझते हैं, उनको लगता हैं कि देखो प्रेमी रो रहा है, उसको नही पता जब मेरे प्रेमी के आंख से आँसू निकलता है तो, आँख से आँसू निकलने का मतलब क्या हैं? कि मैंने उसको स्पर्श किया हैं, मै उसके संग ही रहता हूं, उद्धव आगे की लीला मे तुझे मेरे साथ रहना हैं, तू ज्ञानी तो बहुत था, लेकिन प्रेमी नही था, इसलिए मैंने तुझको प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिए वृन्दावन भेजा था, अब तू प्रेमी बनकर के आ गया, अब दोनो आगे की लीला करेगे।

⇒ उद्धव जी ने ठाकुर जी को प्रणाम किया और बोले प्रभु आपके गोपियों के प्रेम को देखकर तो मैं अपना ज्ञान भूल गया, और गोपियों के मुख से आपकी चर्चा सुनते सुनते उस चर्चा मे इतना डूब गया कि सोना भी भूल गया, छ: महीने से तो मैं सोया नही हूं, उद्धव जी कहते गोविन्द से प्रभु आज आपकी वजह से मैं प्रेमी बन गया।

⇒ बन्धुओ प्रेम विशेष हैं, ज्ञानी को परमात्मा मिलेगे कि नही इसमे थोड़ा संशय हो सकता हैं, किन्तु प्रेमी को भगवान मिलेगे कि नही इसमे कोई संशय नही, प्रेमी को भगवान अवश्य मिलते हैं। इसलिए ज्ञानी बने न बने किन्तु कृष्ण

Date:
Page: 139

⇒ प्रेमी अवश्य बने। कृष्ण से प्रेम करना सीखें।

⇒ शुकदेव जी राजन् परीक्षित से कहते हैं, कंस का वध हो जाने पर कंस की दोनो पत्नियाँ आस्ति और प्राप्ति ने जाकर अपने पिता मगध-राज जरासन्ध से शिकायत कर दी।

⇒ जरासन्ध को बहुत दुःख हुआ, कृष्ण ने मेरी बेटियों को विधवा बना दिया, जरासन्ध ने सेना तैयार करके मथुरा पर आक्रमण कर दिया, जरासन्ध की सम्पूर्ण सेना को भगवान कृष्ण ने मार दिया और जरासन्ध को छोड़ दिया।

⇒ सत्रह बार जरासन्ध और भगवान् के मध्य युद्ध हुआ सत्रह बार भगवान् ने जरासन्ध की सेना को मार दिया और जरासन्ध को छोड़ दिया, अन्तिम बार जरासन्ध ने फिर तैयारी की, उसी समय म्लेच्छराज कालयवन ने भी भगवान् से युद्ध करने के लिए मथुरा पर आक्रमण की तैयारी की, नारद जी ने जाकर के कालयवन को भी भड़का दिया, एक दिशा से कालयवन ने तैयारी की, आक्रमण की,

एक तरफ से जरासन्ध, तो भगवान् ने बलराम जी से कहा भैया, दोनों तरफ से शत्रु आ रहे हैं और इस समय नई नीति का उपयोग करना होगा। बलराम जी बोले क्या नई नीति?

⇒ भगवान् ने कहा हम लोग युद्ध छोड़ कर भाग जाए, बलराम जी ने कहा बड़ी बदनामी होगी, दुनियाँ क्या कहेगी? और हम लोग तो भाग जायेंगे किन्तु प्रजा के लोग तो मारे जायेंगे, भगवान् ने कहा इसकी मैं व्यवस्था करता हूं

Date:
Page: 140

⇒ और भगवान ने अपनी योगमाया के द्वारा अपने संकल्प से समुद्र के अन्दर सुन्दर द्वारिकापुरी का निर्माण कर दिया, संकल्प मात्र से रातों-रात समुद्र के अन्दर द्वारिकापुरी प्रगट कर दी।

⇒ १२ योजन लम्बी-चौड़ी द्वारिकापुरी का भगवान ने निर्माण कर दिया,

⇒ भगवान ने समुद्र के अन्दर अपनी नगरी बनाई, द्वारिका (स्वर्णमयी द्वारिका) भगवान ने समुद्र के अन्दर स्वर्णमयी द्वारिका क्यों बनवाई ?

⇒ भगवान ने विचार किया त्रेता मे मेरे शत्रु की नगरी समुद्र के अन्दर थी, और वह स्वर्णमयी थी (लंका), इसबार मेरी नगरी समुद्र के अन्दर हो और वह स्वर्णमयी हो, इसलिए भगवान ने सुन्दर द्वारिकापुरी बसाई, और रातो-रात अपने संकल्प के द्वारा सम्पूर्ण मथुरा की प्रजा को उठाकर के द्वारिका मे पहुंचा दिया।

⇒ सब सोये मथुरा मे, और जगे द्वारिका मे ऐसी लीला भगवान की, प्रजा को द्वारिका मे पहुंचाकर के, छोटी सी सेना लेकर के कृष्ण, बलराम जरासन्ध से युद्ध करने गये, जरासन्ध युद्ध करने आया, जरासन्ध ने भगवान का पीछा किया, भगवान भागे, आगे जाकर के एक पर्वत पर भगवान चढ गए, जरासन्ध ने पर्वत मे आग लगा दी।

Date:
Page: 141

⇒ जरासन्ध ने विचार किया, इसी अग्नि में कृष्ण, बलराम जल गए होंगे, जरासन्ध वहाँ से लौट गया, भगवान वहाँ से बचकर के निकल गए, कालयवन ने भगवान का पीछा किया, भगवान भागते रहे, आगे जाकर के एक गुफा के अन्दर भगवान प्रवेश कर गए, उस गुफा के अन्दर रघुवंश के एक राजा, महाराज मुचुकुन्द शयन कर रहे थे।

⇒ उन्ही के ऊपर जाकर के भगवान ने अपना पीताम्बर डाल दिया, पीछे से कालयवन पहुँचा, कालयवन ने सोचा ये कृष्ण हैं, पीताम्बर खींचा, महाराज मुचुकुन्द की निद्रा भंग हो गई, मुचुकुन्द की द्दृष्टि पड़ते ही कालयवन भस्म हो गया। इसके बाद भगवान श्री कृष्ण गुफा से निकल कर के आये और महाराज मुचुकुन्द को दर्शन दिया, महाराज मुचुकुन्द भगवान का दर्शन करके स्वर्ग लोक चले गए और फिर भगवान वहाँ से सीधे द्वारिकापुरी आ गए, भगवान जब द्वारिकापुरी आ गये, तो आनन्द पूर्वक अपने परिजनों के साथ रहने लगे। अब द्वारिकापुरी में सर्वप्रथम बलराम जी का विवाह होता हैं, क्यों कि बलराम जी बड़े भाई हैं, पहले बड़े भाई का विवाह होगा, तब छोटे भाई का विवाह होगा।

⇒ शुकदेव जी कहते हैं - राजन परीक्षित - आनर्त देश के एक राजा थे, जिनका नाम

Date:
Page: 142

⇒ रैवत था। महाराज रैवत के एक रेवती नाम की कन्या थी। रेवती जी जब विवाह योग्य हो गई तब महाराज रैवत ने अपनी पुत्री के लिए सुयोग्य वर ढूढ़ना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु महाराज रैवत को अपनी पुत्री के लिए कोई योग्य वर नही मिला, तब महाराज रैवत परेशान होकर के ब्रह्मा जी के पास गए।

⇒ राजा रैवत ने ब्रह्मा जी से कहा- मेरी बेटी के लिए योग्य वर बताओ, तब ब्रह्मा जी ने कहा, आप अपनी पुत्री का विवाह वसुदेव जी के बड़े पुत्र बलराम जी के साथ कर दीजिए। तब रैवत राजा आए और अपनी बेटी का विवाह बलराम जी के साथ कराया।

⇒ रेवती मैया का जन्म सतयुग मे हुआ था। और बलराम जी का जन्म द्वापर मे सतयुग के लोगो की लम्बाई 50 फिट होती थी और द्वापर के लोगों की लम्बाई $12\frac{1}{2}$ फिट होती थी।

युग	लम्बाई
सतयुग	50 फिट
त्रेता	25 फिट
द्वापर	$12\frac{1}{2}$ फिट
कलयुग	$6\frac{1}{2}$ फिट

⇒ अब रेवती मैया तो 50 फिट की, और बलराम जी $12\frac{1}{2}$ फिट के, बलराम जी कभी-कभी घूमने जाते हैं, अलग ही रथ चलता है, पत्नी का, इतनी लम्बी जो हैं। बलराम जी उनके सामने छोटे से लगते, एक दिन बलराम जी बगीचे

Date:
Page: 143

⇒ मे जाकर खाने के लिए आम तोड़ रहे थे। बड़ा ऊँचा पेड़ था, तोड़ नही पा रहे थे, इतने मे ही रेवती मैया आई और आम के पेड़ को पकड़कर के हिला दिया, तो सारे फल टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

⇒ अब सबके सामने रेवती मैया ने फल तोड़कर के बलराम जी को दिए, बलराम जी को तो बड़ा अपमान लगा, बलराम जी ने अपना हल और मूसल उठाया, और अपनी पत्नी को छोटा कर दिया, यह सुनने मे तो विनोद की बात लगती है, किन्तु वृन्दावन के रसिक ऐसा बताते हैं।

⇒ विवाह के बाद मे दाऊ दादा का नाम हो गया, रेवती रमण, बोलो रेवती रमण भगवान की जय।

⇒ बलराम जी का तो विवाह सम्पन्न हो गया, अब छोटे भाई के विवाह की बारी है। इसलिए अब भगवान श्री कृष्ण के विवाह की तैयारी हो रही है।

⇒ विदर्भ देश के राजा, महाराज भीष्मक उनकी बेटी रुक्मिणी, ये भगवान को चाहती थी। देवर्षि नारद के द्वारा भगवान कृष्ण के विषय मे सुनकर, कृष्ण के प्रति रुक्मिणी जी का प्रेम हो गया। रुक्मिणी जी चाहती हैं, मेरा विवाह भगवान श्री कृष्ण के साथ हो, इनके पिता भी चाहते हैं, माँ भी चाहती हैं, परिवार के सभी लोग चाहते थे। कि रुक्मिणी का

Date:
Page: 144

⇒ विवाह कृष्ण के साथ हो, ये कृष्ण के योग्य हैं। रुक्मिणी जी कृष्ण के योग्य क्यों हैं? ये रुक्मिणी जी कौन हैं?

⇒ रुक्मिणी जी साक्षात् महालक्ष्मी हैं, त्रेता मे यही सीता हैं, और द्वापर मे यही रुक्मिणी हैं। भगवान नारायण जब राम के रुप मे प्रगट होते हैं, तो लक्ष्मी सीता के रुप मे आती हैं, और भगवान नारायण जब कृष्ण के रुप मे प्रगट होते हैं तो लक्ष्मी रुक्मिणी के रुप मे आती हैं। यह तो भगवान की सनातनप्रिया हैं। इसलिए रुक्मिणी जी तो भगवान को ही चाहेगी, ये तो उनका स्वाभाविक स्वरुप हैं।

⇒ लेकिन लीला मे रुक्मिणी का जो भाई था, रुक्मी वह शिशुपाल का मित्र था, अपने मित्रो के कहने पर भगवान कृष्ण से द्वेष करने लगा था, भगवान कृष्ण से विरोध करने वाले राजाओ की एक अलग पार्टी थी। उसमे दुर्योधन, जरासन्ध, पौण्ड्रक काशीराज, शिशुपाल, इन सब की एक गोल थी पूरी दुनियां मे, और जहाँ-जहाँ ये थे, सब एक दूसरे के पाप कर्मों मे सहयोग करने वाले, एक दूसरे के सहयोगी, और सब कृष्ण के विरोधी थे।

⇒ सबने मिलकर के रुक्मी को सिखाया, तुम अपनी बहिन का विवाह कृष्ण से करोगे, वो कृष्ण जिसने अपने मामा को मार डाला, जिसके बाप का ठिकाना नही, आज तक पता नही चला, उसका असली पिता कौन है। बहुत सारी बाते कह-कह करके

Date:
कृष्ण के प्रति Page: 145

⇒ विरोधियों ने रुक्मी के हृदय मे विक्षेप पैदा कर दिया, रुक्मी ने कहा मेरी बहिन का विवाह कृष्ण से कदापि नही होगा। रुक्मी ने अपने माता, पिता, बहिन के इच्छा के विरुद्ध जाकर अपनी बहिन रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ तय कर दिया। और शिशुपाल से कहा तुम बरात सजाकर के आओ मैं अपनी बहिन का विवाह तुम्हारे साथ करुगा। शिशुपाल बरात सजाकर के चल पड़ा,

⇒ इधर जब रुक्मिणी जी को पता लगा कि मेरा भाई रुक्मी मेरा विवाह शिशुपाल के साथ कर देगा, तब रुक्मिणी जी ने एक पत्र लिखा, और पत्र लिखकर के एक ब्राह्मण को दिया, और कहा ये पत्र लेजाकर के द्वारकाधीश को देदो।

-: भजन :-

पंक्षी ले जा रे सन्देश
मेरे श्याम पिया के देश
चिट्ठी मे सब कुछ लिख डाला
रहा ना कुछ भी शेष
पंक्षी ले जा रे - - - - - -

(1) बिखर गये माला के मोती
चली गयी आँखो की ज्योति
आंसू बीत गये आंखो के
रहे न काले केश
पंक्षी ले जा रे - - - - - -

(2) सूख गया सुन्दर तन मेरा
दिल का दर्द सहा वह तेरा
पल-पल तेरी याद सतायें
कर जा रे उपदेश

Date:
Page: 146

पंछी ले जा रे - - - -

③ रो-रो कर लिखती मै अर्जी
प्रीत निभा जा ओ बेदर्दी
मधुर प्रेम की चूनर ओढ़ी
धरा जोगिया भेष
पंछी ले जा रे - - - -

⇒ रुक्मिणी जी का पत्र लेकर के ब्राह्मण देवता आए, और आकर के वह पत्र भगवान को दिया, रुक्मिणी जी ने उस पत्र मे लिखा था -

श्लोक- श्रुत्वा गुणान् भुवनसुन्दर शृण्वतां ते
निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम् ।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थलाभं
त्वय्यच्युताविशति चित्तमपत्रपं मे ॥

⇒ हे गोविन्द आपके सुन्दर गुणो को सुनकर के मैने आपको अपना प्रियतम मान लिया है, आप आओ और मुझे लेकर के चलो, और ये विवाह हमारा आपका राक्षस विधि से होगा, रुक्मिणी जी ने पत्र मे लिखा था,

श्लोक- मां राक्षसेन विधिनोद्वह वीर्यशुल्काम् ।
⇒ राक्षस विधि से आप मेरा पाणिग्रहण करे, मेरा हरण कर ले, और क्षत्रियों का यह धर्म है, राजाओ का धर्म है, यदि कन्या चाहती है कि

Date:
Page: 147

⇒ मेरा विवाह अमुख राजा से हो, और उसके माता, पिता भी चाहते हैं, परिवार के अन्य -जन कोई विरोध कर रहे हैं, ऐसी स्थिति मे राजा को चाहिए कि वो राजा आकर के कन्या का हरण कर ले, और हरण करके अपने घर ले जाये, और वहाँ लेजाकर के वह विधिपूर्वक विवाह सम्पन्न करे। इस विधि का नाम राक्षसविधि हैं।

⇒ रुक्मिणी जी ने पत्र मे लिख दिया कि विवाह के पहले कन्या नगर से बाहर देवी मन्दिर मे पूजा करने जाती हैं, मैं भी पूजा करने जाऊंगी, वही से आप हमारा हरण कर लेना तो महल मे आने की जरुरत नही पड़ेगी।

⇒ भगवान् ने ब्राह्मण देवता से कहा, ये पत्र पढ़कर के सुनाओ, ब्राह्मण देवता ने कहा ये आपका व्यक्तिगत पत्र हैं, मैं कैसे पढू? भगवान् ने कहा नही आप ही पढ़कर के सुनाओ, आज के जैसा तो पत्र था नही कि स्नानघर मे जाकर के पढ़ना पड़े, क्यो कि उसमे कोई गन्दी बात तो लिखी नही थी, विशुद्ध प्रेम का पत्र था।

⇒ प्रेम पत्र तो रुक्मिणी ने भी लिखा था लेकिन उस प्रेम कीभीइतनी उत्कृष्ट मर्यादा थी कि कोई भी उसको पढ़ सकता था। इसलिए भगवान् ने ब्राह्मण देवता से कहा आप पढ़कर के सुनाओ।

Date:
Page: 148

⇒ ब्राह्मण देवता ने भगवान को पत्र पढ़कर के सुनाया, पत्र मे जो लिखा था, उसे सुनकर के तुरन्त भगवान ने रथ तैयार किया और किसी को नही बताया द्वारका मे, न एक सियाही लिया, न सैनिक लिया, ब्राह्मण देवता को साथ लेकर भगवान रथ लेकर के चल पड़े।

⇒ ठाकुर जी तो रथ लेकर के विदर्भ के लिए निकल गये, सुबह जब हुई, तो बलराम जी को पता चला कृष्ण कही गये हैं, तो बलराम जी विचार करने लगे कभी कृष्ण अकेले नही जाते आज अकेले चले गये, बात क्या हैं?

⇒ बलराम जी भी तो शेषावतार हैं, आँख बन्द की और उन्होने ध्यान लगाया, सबकुछ जान गये, अच्छा ये कन्हैया विवाह करने गया हैं, इसलिए ही किसी को नही बताया है। लेकिन वहां तो लड़ाई हो सकती हैं, वहां सारे विरोधी एकत्रित हुए हैं, कुछ भी हो सकता हैं, इसलिए मुझे भी चलना चाहिए।

⇒ बलराम जी ने तुरन्त अपनी चतुरंगिणी सेना को तैयार किया और विदर्भ के लिए प्रस्थान किया, कृष्ण के पहुंचने के पहले ही बलराम जी ने अपनी योगविद्या के द्वारा सम्पूर्ण सेना को कुण्डिनपुर की सीमा पर पहुंचा दिया। इतने मे भगवान श्रीकृष्ण भी वहां पहुंच गए, बलराम

Date:
Page: 149

⇒ जी ने कृष्ण से कहा तुम चिन्तामत करो मैं यहाँ सब संभाल लूगा, तुम जाओ। भगवान रुक्मिणी जी को लेने चल पड़े, भगवान ने सोचा यदि मैं रुक्मिणी को चोर के समान लेकर के जाऊंगा, तो दुनियां क्या कहेगी?

⇒ चोर के समान नही सीना तानकर के ले चलना हैं।

⇒ इधर रुक्मिणी जी देवी पूजन के लिए मन्दिर गई और माता गौरी का पूजन किया। और स्तुति की।

चौ० जय जय गिरिबरराज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी॥

जय गजबदन षड़ानन माता।
जगत जननि दामिनि दुति गाता॥

⇒ स्तुति सुनकर के माता गौरी प्रसन्न हो गई और आशीर्वाद दिया।

छंद- मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु
सहज सुंदर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु
सनेहु जानत रावरो॥

⇒ रुक्मिणी जी मन्दिर से पूजा करके जब बाहर निकली, तो रुक्मिणी जी के नेत्र कृष्ण को ढूंढ रहे थे, तब तक भगवान का रथ आकर के रुक्मिणी जी के रथ के पास आकर के

Date:
Page: 150

⇒ खड़ा हो गया। रुक्मिणी ने देखा कृष्ण आये हैं, तब तक भगवान ने हांथ बढ़ाया और रुक्मिणी जी का हांथ पकड़ा और रथ मे बैठाया हो गया पाणिग्रहण, बोलो श्री रुक्मिणी कृष्ण भगवान की जय।

⇒ रुक्मिणी के पाणि को अर्थात हांथ को भगवान ने ग्रहण कर लिया, यही तो पाणिग्रहण हैं। भगवान रुक्मिणी जी को रथ मे बैठाकर के चल पड़े, सभी सिपाही, सैनिक खड़े-खड़े तमाशा देख रहे थे, किसी की हिम्मत नही हुई जो भगवान को रोक सके, भगवान चोरी करके रुक्मिणी जी को नही लाये, सभी के सामने लाये, सब देख रहे हैं।

⇒ एक, दो राष्ट्र की सेना नही, कई राष्ट्र की सेनाएं लगाई गई थी रुक्मिणी जी की सुरक्षा के लिए, दुर्योधन की पूरी सेना, शिशुपाल की पूरी सेना, रुक्मी की पूरी सेना, जरासन्ध की पूरी सेना, इतनी बड़ी-बड़ी सेनाएं केवल इसलिए लगाई गई थी कि कही से कृष्ण, रुक्मिणी का हरण न कर ले, लेकिन इसके बाद भी भगवान रुक्मिणी को लेकर के चले गये,

⇒ जब सैनिकों को पता चलता हैं कि कृष्ण, रुक्मिणी का हरण कर ले गये तो सैनिक मार काट करने के लिए दौड़ते हैं, तब तक बलराम जी सबकी सेवा के लिए पहले से ही आ गए थे, बलराम जी ने अपना हल, मूसल उठाया और सबकी कपाल क्रिया प्रारम्भ कर दी,

Date:
Page: 151

⇒ हल से फंसा-फंसाकर के सैकड़ो सैनिकों को खींचकर के मूसल से मारने लगे, सबकी कपाल क्रिया करने लगे, अब तो महाराज हजारो सैनिकों को मृत्यु के घाट उतार दिया बलराम जी ने, सारी सेना पराजित हो गई, जितने थे सब भाग गए। इतने मे रुक्मिणी जी का भाई रुक्मी पीछे के रास्ते से आया भगवान को रोकने के लिए, रुक्मी को भगवान ने खूब मारा, उसकी दाढ़ी, मूछ सब तलवार से छील दी भगवान ने, गला काटने जा रहे थे।

⇒ तभी रुक्मिणी जी ने चरण पकड़ लिया, और कहा छोड़ दो प्रभु इसे, यह मेरा भाई है, भगवान ने कहा ठीक हैं आप कहती हो तो मैं इसे छोड़ देता हूँ। बाद मे बलराम जी ने भी कृष्ण को मना किया, देखो कृष्ण यह सब गड़बड़ बात हैं, कुछ भी हो, अब ये तो रिश्तेदार हो गया न, साले जी हो गए तुम्हारे, अब रिश्तेदार के साथ रिश्तेदारी तो निभानी चाहिए।

⇒ बलराम जी के कहने पर भगवान ने रुक्मी को छोड़ दिया। इधर शिशुपाल को पता चला कृष्ण मेरी होने वाली पत्नी का हरण करके ले गया तो वह जोर-जोर से रोने लगा, उसको उसके मित्र समझाने आये, दुर्योधन, जरासन्ध इत्यादि। जरासन्ध ने कहा अरे यार क्यों

Date:
Page: 152

⇒ रोते हो शान्त हो जाओ, शिशुपाल बोला देख रहे हो मेरी पत्नी को कृष्ण उठा ले गया, जरासन्ध ने कहा अरे कहा तुम्हारी पत्नी अभी विवाह तो हुआ नही था। विवाह से पहले तो कन्या होती हैं, किसी के साथ उसका विवाह हो सकता हैं। शिशुपाल कहता नही-नही, मैं तो हार गया, लुट गया, मुझे उस कृष्ण ने पराजित कर दिया, जरासन्ध ने कहा मुझे देखो, सत्रह बार हराया मुझे उस कृष्ण ने, फिर भी मैं जिन्दा हूं तुमको तो एक ही बार हराया,

⇒ जरासन्ध की बाते शिशुपाल को समझ नही आई, वह तो जोर-जोर से रोने लगा, ये सब लीला भगवान ने क्यों की? देखो कर्मों की गति बड़ी विलक्षण हैं, भगवान् ने कहा, त्रेता युग मे तुमने हमको रुलाया था। त्रेता युग मे शिशुपाल ही रावण था। रावण ने सीता जी का हरण किया तो राम जी को रोना पड़ा, भगवान् राम ने कहा, उस बार मेरी पत्नी का हरण तुमने किया था तो मुझे रोना पड़ा था। और इसबार अवतार मे तुम्हारी होने वाली पत्नी का हरण मैं करुगा और तुम रोओगे, तब हिसाब बराबर होगा।

⇒ रावण ही तो शिशुपाल हैं।

चौ० द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ।
जय अरु बिजय जान सब कोऊ॥

Date:
Page: 153

⇒ विप्र श्राप ते दूनउ भाई।
तामस असुर देह तिन्ह पाई।।

⇒ मुकुत न भए हते भगवाना।
तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना।।

⇒ तीन जन्म तक राक्षस होने का शाप जय, विजय को सनकादिक ने दिया था। पहले जन्म मे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु, दूसरे जन्म मे रावण और कुम्भकर्ण, तीसरे जन्म मे शिशुपाल और दंतवक्र, तो शिशुपाल है? त्रेता का रावण है, और त्रेता की सीता कौन हैं? रुक्मिणी और त्रेता के राम कौन हैं? कृष्ण, सब वही है,

भगवान् ने कहा उस बार हम रोये थे, अब तुम रोओ, शिशुपाल खूब रोया, भगवान् रुक्मिणी को लेकर द्वारका चले आये।

⇒ रुक्मिणी को लेकर भगवान् जब द्वारका मे आये तो –

श्लोक – द्वारकायामभूद् राजन् महामोदः पुरौकसाम्।
रुक्मिण्या रमयोपेतं दृष्ट्वा कृष्णं श्रियः पतिम्।

⇒ श्रीपति भगवान् को रुक्मिणी के सहित देखकर द्वारकावासी परम् आनन्दित हो गए, फिर तो द्वारका मे शहनाइयाँ बजने लगी, पूरी द्वारकापुरी को दुल्हन के समान सजाया गया, सुन्दर विवाह के मण्डप का निर्माण हुआ, और सखियों ने रुक्मिणी जी को सुन्दर दुल्हन वेश

Date:
Page: 154

मे सजाया, उनके हाँथो मे मेहंदी लगाई, श्रृंगार किया, और इधर सखाओं ने भगवान् श्री कृष्ण को दूल्हा वेश मे सजाया, और फिर बाजे गाजे के साथ भगवान् श्री कृष्ण की बरात निकली और द्वारका की गलियों मे, भगवान् घोड़े पर बैठकर दूल्हा बनकर के निकले, द्वारका के लोग भगवान् की इस झांकी को देखकर के आनन्दित हो रहे हैं, फिर तो भगवान् का बड़े धूमधाम से रुक्मिणीजी के साथ विवाह सम्पन्न होता हैं।

:: भजन ::

मुरली वाले की आई हैं बरात कि दूल्हा बने गिरधारी
दूल्हा बने गिरधारी, दूल्हा बने गिरधारी -2
मुरली वाले की आई - - - -

(1) श्याम के सर पर सज गया सेहरा -2
और मगन है दोनो भ्रात
दूल्हा बने गिरधारी - - - - - -

(2) घोड़े पर चढ़के आए गिरधारी -2
हो रही जय - जयकार - 2
दूल्हा बने गिरधारी - - - -

:: भजन ::

आज दूल्हा बने हैं नंदलाल, की जोड़ी का जवाब नही -2
की जोड़ी का जवाब नही, की जोड़ी का जवाब नही -2
आज दूल्हा बने - - - - -

Date:
Page: 155

(1) रुक्मिणी मेरी गोरी-गोरी-2
और श्याम वर्ण नन्दलाल -2
जोड़ी का जवाब नही
आज दूल्हा बने - - - -

(2) रुक्मिणी के सिर स्वर्ण मुकुट हैं-2
मोर पंख नन्दलाल -2
जोड़ी का जवाब नही
आज दूल्हा बने - - - -

(3) रुक्मिणी ओढ़े लाल चुनरिया,
और काली कमरिया नन्दलाल
जोड़ी का जवाब नही-2
आज दूल्हा बने नन्दलाल - - - -